

श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला न० २६

श्री चारित्र पद्यावलि

कर्त्ता—

मुनिराज श्री दर्शनविजयजी महाराज
वगैरह (त्रिपुटी)

द्विती १	{	पौर निर्माण म० २४६५	{	मूल्य
१००० प्रति		प्रिक्कम म० १२६६		०-२-०

प्रकाशक—

१—श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला,
वीरमगाम (गुजरात)

२—पं० बालाभाई वीरचंद देशाई,
G/O पटेलनो-साढ़, माललपुरा
एलीस ब्रीज, मु० अहमदाबाद ।

मुद्रक—

पं० भूपसिंह शर्मा,
सरस्वती प्रेस, बैलनगंज, आगरा ।

श्री अनुक्रमिका मन्दिर जयपुर

न०	नाम पद्य	पृष्ठ
१	आदिनाथ	१

१ अयोध्या, २ हस्तिनापुर ४ शत्रुजय ११
कोठ १२ मेवाणा १३ आवू १४ भादक १६ नाग-
पुर १२६ भावनगर ।

१७-समप्रनाथ से नमिनाथ	२६
-----------------------	----

१७ अजमेर, १८ बसवल १९ दिल्ली
सर्धना २० भदोली २१ चन्द्रावती, २४ मालवा
२५ काकदी २६ नागपुर २७ सिंहपुरी २८ विपापुरी
२९ कपिली ३० अजमेर ३१ रत्नपुरी ३२ कलकत्ता
३३ हस्तिनापुर ३४ अजमेर ३५ भोपुरी ।

३६	वेमनाथ	६४
----	--------	----

३६ शोरीपुर । ४१ गिरनार ।

४६	पार्श्वनाथ	७८
----	------------	----

४६ शालेश्वर, ४७ वैरागल, ४८ अहमदाबाद
४९ अजमेर, ५० मथुरा, ५१ आगरा ५५ काशी

५६ शिखरजी ६१ पटणा ६२ विहार, ६३ अन्त-
रीक्षजी, ६४ भांदक ।

६५ महावीर ११२

६७ क्षत्रिय कुण्ड, ६६ ऋजुवालुका, ७०
गुणयाजी ७१ पावापुरी, ७४ राजगृही, ७७ कल-
कत्ता ८७ बामनवाड़ा, ८८ कुल्पाकजी, १०१ अहम-
दाबाद, १०३ पानसर । १०८ थोय ।

१०६ भजन संग्रह १७८

१०६ चौबीशी, ११० प्रतिमा, १११ गणधर,
११३ कुण्डलपुर, ११५ गौतमाष्टक, ११७ कदंबगिरि

११८ सिद्ध, पांचपद, नवपद १६८

१२२ आरती, मंगल, मणि भद्रजी २०३

१२६ आदिनाथ (भावनगर) २०७

१२७ पार्श्वनाथ २०८

१२७ पालनपुर १२८ पाटण १२६ चारूप
१३० सेरिसा, १३१ अहमदाबाद ।

१३३ पद (स्वाध्याय) २१६

१४८	भंडा (वर घोडा) भजन	२३६
१५८	प्रार्थना, देवगुरु जयन्ती	२५२
१७१	गहंली (कल्पसूत्र)	२७३
२१८	गुरु स्तुति वृत्त संग्रह	३४५

☀ रागों का समय ☀

सुबह ४ बजे से ६ बजे तक

प्रभात, बीमास, ललित, भैरव, वेलावल,
आशावरि तोड़ी वगैरह ।

६ बजे से ३ बजे तक

सारंग, गौड़ सारंग, गौड़ मल्हार, गौड़ वगैरह ।

३ बजे से ७ बजे तक

मल्हार, मुल्तानि, पिलु, भिमपिलास, धनाश्री
पूर्वी, पूरिया, श्री राग, गौड़ी वगैरह ।

सुबह ४ बजे से रात के १२ बजे तक

कल्याण, द्रुपद, हमीर, विहाग, भूपाल,
केदारो, देश, कामोद, दरबारी कनड़ो, वाघेसरी,
सींहानो कनड़ो, गजल, तिलंग, मालकोश, जय
जयवन्ती, काफी शंकरा, वढंस, बरवा, परज,
सोहिणी, कालिगड़ो, वसंत, हिडोल, खमाच
जिभोटी, गारा, माजी, पहाड़ी, आशा, माढ़, मांड
आशामांड, छांया खमाच, सिध, सिध-कोफी वृन्द
वगैरह ।

❀ प्रस्तावना ❀

आत्म कल्याण के साधनों में संगीत-भजनो का भी अनोखा स्थान है। इस बात को मद्दे नज़र रख कर इस पत्रावली का निर्माण और प्रकाशन हुआ है।

मुनि दर्शनविजयजी आदि त्रिपुटी ने भारत वर्ष के सत्र तीर्थों में निहार करके भिन्न २ राग रागिनी में इतिहास तीर्थ महात्म्य दर्शन पूजन फल इत्यादि विषयों से भरपूर भजन पद झडा-भजन जयन्ती गहुली वगैरह पद्य बनाये हैं। जिनमें से कुछ सग्रह चारित्र मजरी और चारित्र स्तवनावली में प्रकाशित हो चुका था, उसके रतम हो जाने पर यह नडा हुआ दूसरा संस्करण सर्गात प्रेमीओं को सादर किया जाता है।

इस कार्य म श्रीमती सेठानीजी भगवतीदेवीजी ने आर्थिक सदयोग से हमें उत्साहित किया है इस लिये हम उनके आभारी हैं।

आगरा निवासी
श्रीमान् सेठ अचलसिंहजी जैन
की धर्मपत्नी

अ० सौ० श्रीमती भगवतीदेवी

की तरफ से

चतुर्दशी के उद्यापन निमित्त

भेंट

रागद्वेषमपह्नाय, सर्वजोषद्विर्तपिणे ।

विष्णोन्दारकराराय, नमः कमलसुरये ॥

श्री

चारित्र पद्यावलि

१ श्री आदिनाथ स्तवन (अयोध्या शहर)

(गग—अब तो जिनजी का ले लो शाय)

श्री विनितापुरी तीरथ जुहार ॥ देर ॥

अष्टम अजितजी श्रीयभिनंदा,

सुमति अनन जिन पावो श्रीरार ॥ श्री० ॥१॥

देव सिमान से च्यौन को पाकर,

चारों गति का कौना महार ॥ श्री० ॥२॥

(२)

जन्म धराया पांचों जिणंद ने,
यहां सभी ने छोड़ा संसार ॥ श्री० ॥३॥
चार प्रभुने केवल पाकर,
समोसरन में गाये मलहार ॥ श्री० ॥४॥
पुरिमताल में ज्ञान ऋषभ को,
कोडा कोडि सुर साथ विहार ॥ श्री० ॥५॥
पुरी अयोध्या पांचों प्रभु के,
उन्नीस पुण्य कल्याण विचार ॥ श्री० ॥६॥
भव्य भुवन में श्री जिन प्रतिमा,
समोसरन और चरणें उदार ॥ श्री० ॥७॥
तीर्थ दर्शन दर्शन पावे,
शिर नमावत वार हजार ॥ श्री० ॥८॥

२ श्री आदिनाथ स्तवन (हस्तिनापुर)

(राग—श्याम कल्याण)

पारणु' कीजे स्वामी, ऋषभ जिनंदा ॥ टेरे ॥

विनितापुरी में चार हजार से,

महान्त पाच धरदा ॥ पा० ॥१॥

पूरव संचित कर्म उदय से,

बडा अन्तराय लहंदा ॥ पा० ॥२॥

आहार पानी शुद्ध न पाये,

कठिन तपस्या करदा ॥ पा० ॥३॥

चार सौ दिन के वार्षिक तप से,

तोडा त्रिघन का फदा ॥ पा० ॥४॥

हस्तिनापुर' में नाथ पधारे,

देखे उन्हें नृप नंदा ॥ पा० ॥५॥

श्रेयांस वालक जाति स्मरण से,
 घर में बुलावे मुनिंदा ॥ पा० ॥६॥
 ईश्वर के रस से प्रभु पड़िलाभे,
 नृप सुत भाव अमंदा ॥ पा० ॥७॥
 धन्य श्रेयांसो, धन्य इक्षुरस,
 पाया सुपात्र जिनंदा ॥ पा० ॥८॥
 वार्षिक तप का पारणा कीना,
 सुर पंच दिव्य करंदा ॥ पा० ॥९॥
 दान तीरथ यूँ गजपुर ठानुं,
 यहां जिन चरण धरन्दा ॥ पा० ॥१०॥
 दूँढत दूँढत तीरथ पाया,
 चरण का शरण लहंदा ॥ पा० ॥११॥
 संवत निधि गज नंदा चंदा,
 पारणा दिन गुण वृन्दा ॥ पा० ॥१२॥

(५)

तीरथ पाया दर्शन गाया,

जयजय श्री जिनचन्दा ॥ पा० ॥ १३ ॥

३ श्रीआदिनाथ आग्वातीज स्त० (६०)

(गग—जाओ जाओ ओ मेरे माधु रहो गुरु के संग)

आमो आवो आदीश्वर दादा, ग्रहो ड्छु रस दान । ऐरा

नामिनटन विनिता भटन,

अपम देव गुणगान ।

चार हजार मनुष्यों साथे,

योगी रूपा प्रधान ॥ आमो० ॥ १॥

लोको आपे रूपा घोडा,

मीना विधिना अजाण ।

म्वोकारे नहीं तेने प्रभुजी,

चार ज्ञान थी जाण ॥ आमो० ॥ २॥

साथना सधला छुटा थइ नै,
 वसीया वन बेरान ।
 हस्तिनापुर नाथ पधार्या,
 फरता वरस प्रमाण ॥ आवो० ॥३॥
 श्रेयांसे समजी पोकारी,
 बोलाव्या भगवान ।
 विनति करी के दादा दासनुं,
 स्त्रीकारो आदान ॥ आवो० ॥४॥
 श्री श्रेयांसे एम भावता,
 इजु रसे बहुमान ।
 पारणु वार्षिक तपनुं करावी,
 साध्युं निज कल्याण ॥ आवो० ॥५॥
 धन्य दिवस धन्य भाग्य हमारा,
 शासन ना सुल्तान ।

अम अँगणिए आज पधार्या,
 शा शा करूँ सन्मान ॥ आवो० ॥६॥
 अक्षयत्रीज ने उत्तम दिवसे,
 पहेलुं ए मुनि दान ।
 वार्षिक तप ए जगमा मोडुं,
 जेम ग्रहगण मा भाण ॥ आवो० ॥७॥
 सरे भगल मा पहेलुं मगल,
 तप धारी भगवान ।
 चारित्र दर्शन गुणना सागर,
 करो जगत कल्याण ॥ आवो० ॥८॥

८ श्री सिद्धगिरि वदन स्तवन

(राग - कल्याण-अष्टिमा का डका आत्म में) -

श्री सिद्धगिरि को वदन हो,
 अर्चन पूजन गुणरजन हो ॥ स्तेर ॥

श्री नेमनाथ त्रिन सभी जिनवर
 पुंढरिक प्रमुख मुनि गणधर ।
 आये इस पर नृप नन्दन हो ॥ अर्चन० ॥१॥
 क्रोड़ों की संख्या में मुनिवर,
 वसे शिव भुवन में यहां आकर ।
 बने सिद्ध बुद्ध निरंजन हो ॥ अर्चन० ॥२॥
 सिद्धगिरि के ध्याता पापी भी
 आतम कल्याण को पाते हैं ।
 बने कुक्कुट भी नृप चंदन हो ॥ अर्चन० ॥३॥
 इस गिरि की तारीफ आगम में
 गणधर भी साफ बताते हैं ।
 जो भारत भूमि के मंडन हो ॥ अर्चन० ॥४॥
 आलम सारे में इस गिरि से
 नहिं तीरथ शानि रखते हैं ।

बड़े पुण्य मे गिरि के फर्सन हो ॥ अर्चन० ॥५॥

हम ध्यान में आदि जिनेश्वर हो

चारित्र्य व दर्शन के पर हो ।

मानव जीवन हम धन धन हो ॥ अर्चन० ॥६॥

५ श्री आदि जिन स्तवन

(कच्चा घों छाया में गाँछों का तेरा चारना)

कदमों की छाया में, ग्रभु के पर पूजना ॥ टेरे ॥

आदि जिनेश्वर आदि नरेश्वर ।

महदंवी मात के लाल,

नाभि के नट पूजना ॥ कदमों० ॥१॥

पूरे निचाणु, आप पधारें ।

कीना समोसरण दे,

तीर्थ भूमि पूजना ॥ कदमों० ॥२॥

मिट्टाचल पर, उमी भूमि में ।

(१०)

खिनीं के दरखत की,
छाया में प्रभु पूजना ॥ कदमों० ॥३॥
उसी छाया में, चक्री भरत ने ।
प्रभुजी के चरणां रे,
बैठाये सुबह पूजना ॥ कदमों० ॥४॥
मोर व सांप भी, वैर विसर गये ।
अकल महिमा रे,
भक्ति से पैर पूजना ॥ कदमों० ॥५॥
आधि उपाधि, व्याधि को टारे ।
शीतल छाया रे,
सिद्धाचल गिरि पूजना ॥ कदमों० ॥६॥
गिरिवर फरसन, चारित्र दरशन ।
जन्म सफल भयोरे,
आदीश्वर प्रभु पूजना ॥ कदमों० ॥७॥

६ श्री आदिनाथ स्तवन

(राग—मेरे माँला बुला ले मर्गने मुझे)

आदिनाथ शत्रु जे, बुला ले मुझे ॥ टेर ॥

आप आये थे गिरिपर ।

पूर्व निजाणु प्रमो !

और भी जिनवर पधारे ।

निमल गिरि पुनित हो ॥

ऐसी भूमि का फरम करा दे मुझे ॥ आदि० ॥१॥

इस गिरि पर ध्यान धर के ।

जाप निजपद का किया !

कर्म शत्रु को हटा कर ।

वो ही शिव स्वामी हुआ ॥

उमी ध्यान का पाठ मिखादे मुझे ॥ आदि० ॥२॥

(१२)

चंद्र शेखर मुक्ति गामी ।

हुआ कर्म हटाय के !

हुआ कुक्कुट चंद राजा ।

सिद्ध गिरि पर आय के ॥

इसी तौर का ज्ञान दिलादे मुझे ॥ आदि० ॥३॥

श्री सीमंधर स्वामी ने यूँ ।

कहा इंद्र के सामने !

तीर्थ शत्रुंजय के सानी ।

और नहीं इस काल में ॥

तीर्थ भक्ति का प्याला पिलादे मुझे ॥ आ० ॥४॥

अन्यमति संसर्ग से मैं ।

द्वेष जिनमत का किया ।

(१३)

कुमति की कुमगति मे ।

द्वेष मूर्ति का किया ॥

अन चरणों का डाम बनाले मुझे ॥ आदि० ॥५॥

बालकी अरदास अमृत-

पान भक्ति लीजिये !

सिद्ध गिरि बुलाय के ।

निज आत्म दर्शन दीजिये ॥

शिखनारी की शेर बतादे मुझे ॥ आदि० ॥६॥

७ श्री आदिनाथ स्तवन

(राग—काली कमली धाल, तुम स काखों ग्रणाम)

श्री आदीश्वर जाना तुम से लोखों ग्रणाम ॥ टेरे ॥

आपने युगला धर्म निवारा ।

नीति रीति का किया प्रचारा ॥

दीना वार्षिक दान ॥ तुम से० ॥१॥
पांच महाव्रत धर्म स्वीकारा ।
साथ में निकले चार हजार ॥
वार्षिक तप अभिराम ॥ तुम से० ॥२॥
केवल पाकर धर्म बताया ।
सत्य शांति का नाद सुनाया ॥
भक्तिक जीव विश्राम ॥ तुम से० ॥३॥
नसीब से जिन दर्शन पाया ।
रत्न चिंतामणि हाथ में आया ॥
औरों से क्या काम ॥ तुम से० ॥४॥
मुक्ति कमल में वास तुमारा ।
चारित्र दर्शन जय जयकारा ॥
सिद्धाचल शुभ धाम ॥ तुम से० ॥५॥

८ आदिनाथ का स्तवन

(राग — कानुडा नारी कामणकुरनारी)

श्री सिद्धगिरि पर ध्याननी ।

कुञ्जोमा प्रभुजी शाति आलापे ।

देवो सुर पूरे वेंणुं वामलीए;

कै सवि जगमा शाति व्यापे ॥ टेरे ॥

काल अनादि भमतो चेतन,

रजल्यो भव भवर्मा ।

शाति न पाय्यो पण निर्भागी,

कर्म विडचनमा ।

ए कर्मो ए कर्मो,

ए कर्म शत्रुने दूर करवा काजे ॥ प्रभुजी० ॥१॥

त्रण भुवन मा मिद्ध गिरि मम

अन्य नथी तारु ।

(१६)

भावे भेटो ए तीरथ ने,

भवजल थी तारु ॥

सुरंगे सुरंगे.

सुरंगे चारित्र दर्शन गुण राजे ॥ प्रभुजी० ॥२॥

६ आदिनाथ महिमा

(राग माल कोश)

भेटो विमल गीरींद; भविकजन भेटो० ॥टेरा॥

आदिनाथ प्रभु पूर्वनवाणुं,

आव्या सिद्धि गिरींद ।

कांकरे कांकरे सिद्ध अनन्ता,

प्रणमों भाव अमन्द ॥ भ० ॥१॥

भव जल तरवा तारु तीरथ,

आत्म गुण मकरन्द ।

शिव वधु परवा मंडप ए गिरी,
कापे कलिमल कंद ॥ भ० ॥२॥

शत्रुंजय सिद्धाचल शिवगिरि,
मुक्ति निलय गुण कन्त ।

नाम प्रमाणे गुण ने धारे,
सेवे सुर नर इन्द ॥ भ० ॥३॥

मालकोश मां प्रभुजी आलापे,
तीरथ महिमा सम्वन्ध ।

देवो वाँसली ये सुर पूरे,
निसुखे धोता वृन्द ॥ भ० ॥४॥

पूत्र पुण्य थी सिद्ध गिरीनी,
फरमना जीव लहन्द ।

हृदय कमल रची चाग्नि दर्शन
पूजो आदि जिनन्द ॥ भ० ॥५॥

१० आदिनाथ स्तवन (शत्रुंजय)

(राग—रामकली)

दादाजी कृपा करी मने तारो;

आशरो एक तमारो ॥ टेर ॥

काल अनादि साथे रमिया;

प्रीत पुराणी संभारो ।

आज तमे पाम्या ठकुराई,

आव्यो हवे मुज वारो ॥ दा० ॥ १ ॥

केवल पामी माने विसारी,

तो शे मने न विसारो ।

अंते मात ने शिव सुख आप्युं;

तो केम हूँ छुं अकारो । दा० ॥ २ ॥

नर भव उत्तम कुल ने पाम्यो,

तोय न आव्यो आरो ।

तेहज कामने सिद्धज करवा,
 पालव पकड़्यो तमारो ॥ दा० ॥३॥
 छेह न देशो दीन वालक छुं,
 जेरो तेरो पण तारो ।
 पतीत उद्धारण वीरुद तमारू,
 ससार पार उतारो ॥ दा० ॥४॥
 गत्रुजय मडन महाराजा,
 एह अरज अग्रधारो ।
 चारित्र दर्शन नेह नजर थी,
 जन्म मरण दुख वारो ॥ दा ॥५॥

११ आदिनाथ स्तवन (मु० कोठ)

(राग-मनटु किमि ही न बाने हो कु थुजिन०)
 मूरत मोहन गारी, हो आदिजिन ॥ मूरत० ॥ १ ॥

(२०)

नाभि राजा ना नंद नगीना,

मारु देवी ना जाया ।

इच्छाकु वंश सागर चंदा,

देव दानव नमे पाया ॥ हो० ॥१॥

परमात्म पुरुषोत्तम प्यारा,

परमेश्वर जयकारा ।

युगला धर्म निवारक दादा,

न्याय नीति ना आधार ॥ हो० ॥२॥

आदि नरेश्वर आदि तीर्थकर,

मोह चमू हणनारा ।

जगजीवन जगनाथ जिनेश्वर,

आदि धर्म दातारा ॥ हो० ॥३॥

हाथ भालीने केई ने तार्या,

तारक वीरुद संभालो ।

जेवो तेवो पण बालक तमारो,
 नेह नजर थी निहालो ॥ हो० ॥४॥
 कोंठ जिनालय त्रिव मनोहर,
 ऋषभ जिनेश्वर भेट्या ।
 चारित्र दर्शन वदन करता,
 कठिन कर्म दल भेट्या ॥ हो० ॥५॥

१० श्री आदिनाथ स्तवन (मु० मेन्नागा तीर्थ)
 (राग-पद्म प्रभु प्राण मे प्यारा, कन्वाली)
 ऋषभ जिनराज ? जयकारा,
 पूर्य पुण्ये मल्या प्यारा ।
 अमारी आंगवना तारा,
 चमस्ता दिव्य सीतारा ॥ अ० ॥१॥
 धर्म के कर्म ना लागे,

हनुं सजान ने रागे ।

कर्था नैतिक सुभाष,

सुगलिया धर्म निवाण ॥अ०॥१॥

प्रथम राजा प्रथम योगी,

प्रथम तीर्थेश पद भोगी ।

प्रथम दानों ना देनारा,

प्रथम धर्मों ना कहेनारा ॥अ०॥३॥

पुराणुं धाम मैत्राणा,

अखंड आणा जगन् राणा ।

नागर गच्छ ने विजय कारा,

विराजे ईश भयहारा ॥अ०॥४॥

प्रभु ! मुक्ति कमल वाला,

विनय-चारित्र रटियाला ।

विजय दर्शन ना आधार,

बहावो प्रेमनी वारा ॥३०॥१॥

१३ आदिनाथ स्तवन (सु० आबू तीर्थ)

(राग—वालम नुमारी विनयलेता ।

गान मूरत तारी जोता, शिर मुके लखी लखी)

आदि नरपति आदि जिन पति,

सामरे छे पले पले ।

सर्व जीव नो हित कर्ता,

सामरे मने पले पले ॥ टेर ॥

जे समय भा आ जगतमा, धर्म कर्म को ना मले ।

नीति मारगने चलाव्यो ॥ सामरे छे० ॥१॥

पुगलपुगमा भाई मगिनी, दपती रूपे मले ।

अदर्या रीति दटावी ॥ सामरे छे० ॥२॥

छने धान्य मरल माये, सर्व भुग्या दलबले ।

विद्याओ तेने बंतावी ॥ सांभरे छे० ॥३॥
 छुटे हाथे दान दर्इने, साधु थई ने निकले ।
 ध्यान तपने केलवे एम ॥ सांभरे छे० ॥४॥
 पामी केवल ज्ञान लक्ष्मी, आपणां शक्ति-बले ।
 संघ स्थाप्यो धर्म रोप्यो ॥ सांभरे ॥५॥
 मात पुत्रो पुत्री पोते, मुक्ति सुखमां जइ भले ।
 एम प्रभुना गुण अनंता ॥ सांभरे छे० ॥६॥
 आवू पर ए ऋषभ प्रभुना, चरण मां आवी ठले ।
 भाव थी चारित्र-दर्शन ॥ सांभरे छे० ॥७॥

१४ श्री आदिनाथ स्तवन

(मु० भांदक तीर्थ C. P.)

(राग—बलिहारी ३ जगनाथ हो जाउं तोरी०)

सुखकारी (३) जग जीव को सुखकारी,

आदि जिनका का पूजन कीजियेजी ॥८॥

पानी चन्दन फूलमाला,

धूप दीपक की माला ।

चावल निवेद फल धारी, जग० ॥९॥

गुग्गुली कपड़े और चरण,

आंगी श्रीचक्र आभरण ।

पुष्पारोहण जयकारी, जग० ॥१०॥

पुष्प मण्डप फूल शृष्टि,

आटा मंगल गीत सृष्टि ।

बाग नाटक नय नारी, जग० ॥११॥

आटा या सदा मान,

पूजा के भेद प्रमाण ।

आगम आशा की दित्तार्थी, जग० ॥१२॥

यस आतु यह संधे में

मस्तक कपाल गले में ।

ऊर ऊदर टीकी धारी, जग० ॥५॥

स्तोत्रों चैत्यो का वंदन,

भजनों जय स्तुति निरंजन ।

भाव पूजन शिवकारी, जग० ॥६॥

सूर्याभ पूजा ठाठ,

रायपसेणी में पाठ ।

ज्ञाताका पाठ स्वीकारी जग० ॥७॥

भद्रावती में दिलहर,

जौहरी का जिन मन्दिर ।

देव विमान अवतारी, जग० ॥८॥

आदि जिनवर बिराजे,

चारित्र भाव में राजे ।

दर्शन पूजत भय टारी । जग० ॥९॥

१५ आदिनाथ स्तवने (सु० भादक तीर्थ)

(राग—सुसगी, ३ प्रभु मिल गये०)

जिनदा (३) जयकारा, आदि जिनन्द महाराया,
हो प्यारा, जिनन्दा जय कारा ॥ टेरे ॥

कर्मों के (३) जंग में ही,
केसरि सा जय पाया ॥ हो० ॥१॥

भव्यो को (३) उपदेश से,
अमृत पान पिलाया ॥ हो० ॥२॥

पूजा से (३) पाप टारे,
इष्ट पूजित जिन राया ॥ हो० ॥३॥

दर्शन से (३) ज्ञान देकर,
न्याय मारग उलमाया ॥ हो० ॥४॥

भादक में (३) आदिनाथ का,
सब ने मंगल गाया ॥ हो० ॥५॥

१६ केशरीया आदिनाथ स्तवन (नागपुर)

राग—श्रीराग

जय केशरिया आदि जिणंद, जय ।।टेरा।।
 मरुदेवी का बाल सुहंकर,
 इच्चाकु कुल जलधिचन्द ॥ ज० ॥१॥
 नाभिराय कुलकर कुल दीपक,
 हुआ राज शासक अरविंद ॥ ज० ॥२॥
 आपका जन्मोत्सव करते हैं,
 दिक् कुमरी अमरी सुर वृंद ॥ ज० ॥३॥
 युगला धर्म निवारण करके,
 बोया धर्म कल्पतरु कन्द ॥ ज० ॥४॥
 आदिम नृप आदिम तीर्थकर,
 तीर्थ प्रवर्तन हार जिनन्द ॥ ज० ॥५॥
 पहिला योगी अमर फल भोगी,

मुक्तिकमल लीला मकरद ॥ ज० ॥ ६ ॥
 तुममम देव न ओग खलक में,
 ज्यु' तारा में शारद चन्द ॥ ज० ॥ ७ ॥
 पच कल्याणक चारित्र लीनो,
 दर्शन शिखर पद माधक इद ॥ ज० ॥ ८ ॥

१७ श्री संभवनाथ स्तवन (सु० अजमेर)

(राग—मैरे मौला बुलाले मर्दाने मुक्के)

हमें संभवनाथ सनाथ करो,
 प्रभो ! अर्ज हमारी ढिल में धरो ॥ टेरे ॥
 सेना मात के लाल जी, जितारि नृप नदना ।
 अर्ज है यह दाम की, कीजिए हम पर दया ॥
 प्रभो ! सुनी पुकार, सहाय करो ॥ हमें० ॥ १ ॥
 चाँगशी लख योनि में, अनते चक्र फिरे ।

जन्म मृत्यु रोग से, बाल बाल दुःखी हुए ॥
अब उन्हीं भवों से, उद्धार करो ॥ हमें० ॥२॥
अग्नि जल भू वायु में, हरि में विकलेन्द्रि में ।
पशु पक्षि मनुष्य में, नारकी में देव में ॥
पाये दुःख बड़े, अब कर्म हरो ॥ हमें० ॥३॥
विना नाथ अनाथ जीव, सांढ़ से फिरते फिरे ।
मस्ति में मिथ्यात्व की, कष्ट-गड्डे में गिरे ॥
अब विरति औषध से, दुःख हरो ॥ हमें० ॥४॥
अजय मेरु शहर में, संघ के जिन-धाम में ।
विनति की आप से, ज्ञान न्याय आराम में ॥
प्रभो ! चारित्र दर्शन दान करो ॥ हमें० ॥५॥

१८ श्री सुमतिनाथ स्तवन (सु घेरावल वर)

(राग अली आते शी धीमारी)

दादा सुमति जिनंठ जय कारी,

करे मेघ सुर नर नारी ॥ टेक ॥

गर्भ मा आरी, करी जग चावी, (२)

औत्पातिकी बुद्धि आपी,

मात मगला राणी । दा० १

मेघराज जाया, सुर हुलराया, (२)

ताते पुत्रनुं नामज राखुं,

“सुमति” मंगल कारी । दा० २

पिता परणामे, प्रभु राज्य पात्रे; (२)

त्रणसो धनुषनी देहडी छाजे,

स्वर्ण कातिना धारी । दा० ३

राज नगीना, शमरस भीना, (२)

(३२)

दीक्षा लेवाने संचरिया,

भोग कर्म ने वारी । दा० ४

दीक्षा ने पामी, वनी सर्वज्ञानी (२)

थई तीर्थकर विश्व जयंकर,

विचरे जिन जयकारी । दा० ५

रागने रोषा; काम ने क्रोधा; (२)

मद माया भय लोभ ए दोषा,

नाठा दूर अढ़ारी । दा० ६

ध्यान ने धारी, कर्म विदारी; (२)

शिव सुंदरी मंदिर पधारी,

मुक्ति पुरी शणगारी । दा० ७

वेरावल मंडन, भव भय भंजन (२)

दीपे दुख दलनार निरंजन,

दर्शन आनन्द कारी । दा० ८

१६ 'श्री सुमतिनाथ स्तवन (मु० दिल्ली)

(राज—कदमों की छाया में)

सुमति प्रभु को वंदना, प्रत्यक्ष भय भजना ॥ टेर ॥

कोशल राया मेघस्थ जाया,

मगल सती नंदना ॥ प्रत्यक्ष ० ॥ १ ॥

आयु चालीस लाख पूरव की,

क्रौंच लट्ठन रंजना ॥ प्रत्यक्ष ० ॥ २ ॥

चार कल्याणक पुरी अयोध्या,

देह धराया कंचना ॥ प्रत्यक्ष ० ॥ ३ ॥

सम्पेत गिरि में सिद्धि सहेल में,

काटे करम स्पंदना ॥ प्रत्यक्ष ० ॥ ४ ॥

श्रावण द्वितीया वैशाख अष्टमी,

आठम मधु चंदना ॥ प्रत्यक्ष ० ॥ ५ ॥

चैतर ग्यारस नौम कल्याणक,

पांचों प्रपंच गंजना ॥प्रत्यक्ष०॥६॥
 देहलीपुर में बाजार धूर में,
 नौधरा मुख मंडना ॥प्रत्यक्ष०॥७॥
 देवसूरि ने कीनी प्रतिष्ठा,
 मूर्ति बनी है चंगना ॥प्रत्यक्ष०॥८॥
 वीर संवत में निधि इषु जिन में,
 च्यौन कल्याण शंसना ॥प्रत्यक्ष०॥९॥
 चारित्र तान में दर्शन गान में,
 कीनी कर्मों की अंछना ॥प्र०॥१०॥

२० श्री सुमतिनाथ स्तवन (सु. सर्वनायू. पी.)
 श्री श्री सुमति जिनंद, जय हो ॥ दैर ॥
 मेघराज के लाल नगीने,
 मंगला मात के तंद, जय हो ।

तीनसौ धनुष का देह तुम्हारा,
 इच्छाकु कुल चद, जय हो ॥ श्री० ॥ १ ॥
 साफ इन्साफ किया जननी ने,
 इसी से सुमति कहंद, जय हो ।
 चार कल्याणक पुरी अयोध्या,
 काटे कर्म के फद, जय हो ॥ श्री० ॥ २ ॥
 सम्मेतगिरि में मोक्ष पधारे,
 पाया आनन्द कन्द, जय हो ।
 सेन छरि ने कीनी प्रतिष्ठा,
 प्रभु आये आनंद, जय हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 सबत् उन्नीम सौ नव्वे में,
 श्री सधना पावन्द, जय हो ।
 पार्व प्रभु के दीक्षा के दिन,
 दर्शन मजन करद, जय हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥

२१ श्री सुमतिनाथ स्तवन (मु० सधर्ना)

नंसीवा वर हम हैं, आज आनन्द बढैया,
श्री सुमति प्रभु का, पूजन भजन करैया ॥ टेरे ॥

सावन सुदी में दूज तिथि को

च्यौन कल्याण कहैया ।

पुरी अयोध्या गर्भ में आये,

मंगला मात कहैया ॥ न० ॥ १॥

वैशाख सुदी में अष्टमी के दिन,

जन्म कल्याण मनैया ।

सभी दिक्कुमरी सुरपति मिलकर,

ओच्छव भक्ति भरैया ॥ न० ॥ २॥

आठम को वैशाख सुदी में,

दीक्षा धर्म बनैया ।

चार महाव्रत धारे ग्रन्थ ने,

तप जप योग धरैया ॥ न० ॥३॥

चैत शुद्धी में ग्यास्म के दिन,

केवल ज्ञान धरैया ।

चारों संघ की कीनी प्रतिष्ठा,

बने भव तारण नैया ॥ न० ॥४॥

चैत सुद्धी में नोम दिन को,

सिद्ध बने मुख शैया ।

गुरु देश में सरधना में,

सुमति प्रवेश करैया ॥ न० ॥५॥

उन्नीस मौ नव्वे सज विक्रम,

दर्शन भक्ति भरैया ।

पागनाथ चारित्र में हमने,

पाया सफेद रूपया ॥ न० ॥६॥

(३८)

उन्नीस सौ तेराणवे सन में,
फाल्गुन कृष्ण लहैया ।
एकादशी को प्रभु विराजे,
चारित्र दर्शन नैया ॥ न० ॥७॥

२२ श्री सुपार्श्वनाथ स्तवन (मु० भद्वैनी)

(राग—आशा गोड़ी—वा पदवी कव फाकं)

श्री सुपास विराजे, तीरथपति ॥ टेर ॥
मूरत मनहर अमृत, भीती,
नैनां में ही सुराजे ॥ तीरथ. ॥१॥
जिन गुण पान से प्यास न छिपे,
हर्षित भया दिन आजे ॥ तीरथ. ॥२॥
थै थै आनन्द नाचत घर में,
ध्यान वाजितर बाजे ॥ तीरथ. ॥३॥

पुर भदैंनी चार कल्याणक,
गंगा तीर प द्याजे ॥ तीरथ ॥४॥
श्री गुरु चारित्र पाठ कहते हैं,
दर्शन एक अवाजे ॥ तीरथ ॥५॥

२३ श्री चंद्रप्रभु स्तवन (सु० चन्द्रावती)
(राग—जिननी ने भजले मेरा दिल राजी)

चन्दा प्रभु, भजले मेरा दिल राजी ॥ टेर ॥
काल अनता प्रिया गुमाया,
हार गया सब राजी ॥ चंदा० ॥१॥
मिला बीतराग जगत में दुर्लभ,
करले विषय में इतराजी ॥ चंदा० ॥२॥
सच्चे दिल मे करले कर्मार्द,
भर ले जो हो अपना जी ॥ चंदा० ॥३॥

(४०)

सच्चे स्वरूप में आप ही होते.

मिटे माया भ्रमनाजी ॥ चंदा० ॥४॥

जन्म के पीछे मरण लगा है,

सुधर सुधर अब पाजी ॥ चंदा० ॥५॥

चंद्रावर्ती में चार कल्याणक

शांति करण प्रतिमार्जी ॥ चंदा० ॥६॥

चारित्र दर्शन यात्रा करने से,

हुई सफल सब वाजी ॥ चंदा० ॥७॥

२४ श्री चंद्रप्रभु स्तवन (माला)

(राग—आदिनाथ शत्रुंजे बुलाले सुमे)

प्यारा चंद्र प्रभुजी सहाय करो ।

मारा भवो भवना सावि पाप हरो ॥ टेका ॥

चन्द्र प्रभु ज्ञानी नरेश्वर,

महासेन ना नदना ।
 लक्ष्मणा रानी ना जाया,
 चंद्रपुरीना मंडना ॥

बन्या न्यायनीतिनो भव्य भरो ॥ प्यारा ॥१॥

चंद्र लछन मोह गजन,
 आयु दश लख पूरनुं ।
 स्फटिक सप्त स्रस्त सलूणी,
 दोढसौ धनुनुं तनुं ॥

दयानाथ दया भरो दृष्टि करो ॥ प्यारा ॥२॥

चंद्रपुरी मा चव्या जन्म्या,
 चारवत पण आदर्या ।
 ग्रण मामे नाग वृद्धे,
 केवली-वनी निचर्या ॥

मारा जीवन्मा मुख शाति भरो ॥ प्यारा ॥३॥

आठमा जिन शिखरजी मां,
आठ कर्मो ने हरी ।
आठमी गतिमां पधार्या,
मुक्ति पटराणी वरी ॥

मने आशरो एक तुमारो खरो ॥ प्यारा. ॥४॥

गाम मालण धर्म पालन,
संध भावित आतमा ।
मंदिरे प्रभुजी जुहार्या,
चंद्र प्रभु परमातमा ॥

स्वामी चारित्रदर्शन भक्ति वरो ॥ प्यारा. ॥५॥

२५ श्री सुविधिनाथ स्तवन (मु० काकंदी)

(राग-श्री राग-मंगल पूजा सुरतरु कद)

जय जगनायक ? सुविधि जिनंद ! जय. ॥ टेर ॥

इन्चाकु सुग्रीव नृप के नन्दन,

गुणधर रामा राणी नद ॥ जय ॥१॥

श्वेत अनुपम काति के धारक

दीपत हैं ज्यु शारद चन्द्र ॥ जय ॥२॥

मोह राज्य में काति के नारक

गर कानून के काटे फट ॥ जय ॥३॥

कर्म सैन्य को चूर चुराकर,

धर्म रूप प्रकटाया बड ॥ जय ॥४॥

आत्म राज्य की मूडी उड़ाई,

पाया अपना पद महानन्द ॥ जय ॥५॥

चार कन्याणक पुत्र साकरी,

तीरथ पाया समवितकट ॥ जय ॥६॥

चारित्रवाद में आत्म दर्शन,

मत्र म्वगल का यही पमद ॥ जय ॥७॥

२६ श्री श्रेयांसनाथ स्तवन

(मु० नागपुर C. P.)

(राग—खमाच)

श्री जिन पूजन आनन्द कारी, श्री जिन॥टेर॥

इत्त वाकु कुल चंद,

सिंह . पुरी सुख कन्द ।

विष्णु वर्धन के सुनन्द,

विष्णु जननी आनन्द ॥

हुआ श्री श्रेयांस नाथ, जग जयकारी, श्री ॥१॥

कनक सी दीपे तन,

मोहे सुर सुरी मन ।

आनन्द के केलिवन,

सेवे जिन्हें गुणि जन ॥

चउ राशि लाख वर्ष, आयु के धारी, श्री ॥२॥

मालन 'माडव' पुरी,
 आये लोग भूरि भूरि ।
 तप जप ध्यान धुरी,
 सुमति साधु जी सरि ॥

अजन शला का कीध, मगल करी, श्री ॥३॥
 नागपुर में - चिराजे,
 सघ का मदिर छाजे ।
 जिनजी श्रेयास राजे,
 सुरीला सीतार बाजे ॥

इंद्रयान एकतान, दर्शन की भारी, श्री ॥४॥

२७ श्री श्रेयांसनाथ स्तवन (मु० सिंहपुरी)

(राग—बलिहारी बलिहारी बज्रिहारी जगनाथ०)

बलिहारी बलि० बलि० श्रेयामजी जिननदा,

दरशन दे कर रहे भवि को तारियेंजी ॥ टेरा ॥
 इच्छाकु कुल के राजन, विष्णु वर्धन कुल मंडन,
 विष्णु राणी के श्रेष्ठ नंदा ॥ श्रे. ॥ १॥
 कनक समान काय, लाख चौरासी आय ।
 वर्ष लक्षण है अमंदा ॥ श्रे. ॥ २॥
 च्यवन जन्म व दीक्षा, केवल तत्व समीक्षा ।
 चारों कल्याण सुखकंदा ॥ श्रे. ॥ ३॥
 सिंहपुरी श्रेयांस, पूरत है दास की आश ।
 चूरे जो राग द्वेष द्वंदा ॥ श्रे. ॥ ४॥
 विदिशा में दो तले मंदिर, समोसरन वीच में सुंदर ।
 फरके श्रेयांसनाथ भंडा ॥ श्रे. ॥ ५॥
 चारित्र सेवक दर्शन, ज्ञान न्याय शुभ फरसन ।
 यात्रा से कटे भव फंदा ॥ श्रे. ॥ ६॥

२८ वासुपूज्य स्वामी स्तवन (मु० चपापुरी)

(राग—माहँ, ताल—गदरा)

वामुपूज्यजी स्वामी, शिवपुर गामी,
तारन वाले देव ।

पुरी चंपा के स्वामी, अतरयामी,
तारन वाले देव ॥ वामु । टिंरा ।

मिंदूर पणों देह धराई,
वसुराजा के नंद ।

कर्म को काट के कंवल पाया,
इन्ध्याऊ कूलचंद रे ।

हुए जगत में नामी, जीव विश्रामी,
दुख हरनारा देव रे ॥ वामु ॥१॥

गमोमररा में आप बिराने,
कोइं मुगे के माय ।

उपदेश से प्रतिबोध को करके,
हुए जगत के नाथ रे ।

बाणी योजन गामो, मंगल कामो,
पाय विडारन देव रे ॥ वासु. ॥२॥

अठारह दोष रहित कहाये,
तीर्थकर श्रीकार ।

चिद्घन ज्योति से ज्योति मिलाई,
सिद्ध बनें सुखकार रे ।

हुए आप अनामी, मुक्ति के स्वामी,
अविनाशी अज देव रे ॥ वासु. ॥ ॥३॥

चंपापुरी में पांच कल्याणक,
वासु पूज्य जिणंद ।

शांति विधायक, मोहक मूरत,
काटत है भव फंद रे ।

दोय मदिरनामी, ज्यु' सुर धामी,
 तीरथ नायक देव रे ॥ वायु ॥४॥
 उनीम मौ सत्याशी पूष मे,
 शुक्र आठम 'का चट ।
 यात्रा मफल दुई माय मे दर्शन,
 चारित्र मफल आनद ।
 नहीं मोह हरामी, रिज्ज को वामी,
 जय जय श्री जिनदेव रे ॥ वायु ॥५॥

२६ श्री विमलनाथ स्तवन (जु= कपिलपुर)
 विमल विमल महागज, अष्टांग अचघाग्ना । ऐश ।
 जिननी, हो जामन नदना,
 कृत्तव्या तुल पात्र ॥ अर० ॥१॥
 जिननी, हो घुमर नदना,

तीन भुवन शिरताज ॥ अर० ॥२॥

जिनजी, हो कंपिलपुर में,

चार कल्याणक साज ॥ अर० ॥३॥

जिनजी, हो मूरत पादुका,

टारे करम की खाज ॥ अर० ॥४॥

जिनजी, हो अब मुक्त दीजिये,

धर्म की दैवी अवाज ॥ अर० ॥५॥

जिनजी, हो तीरथ पाया,

सफल भई वड़ी आज ॥ अर० ॥६॥

जिनजी, हो चारित्र शिष्य की,

अब सब दर्शन लाज ॥ अर० ॥७॥

३० श्री विमलनाथ स्तवन (मु० अजमेर)
(राग—अहिमा का टका आत्म में)

श्री विमल जिनेश्वर जयकारा,

प्रभु जगत्रय पावन सुखकारा ॥ टेरे ॥

दूत वर्मा नरपति के नदन,

न्यामा गुत नृप मूर लछन ।

सुख छोड़के मागुपना धारा ॥ प्रभु० ॥१॥

अतगाय पंच को दूर किया,

मिथ्यान्य यंत्र को गाढ़ दिया ।

अपिगति अज्ञान से फटकारा ॥ प्रभु० ॥२॥

द्वैष हान्यादि को फटयाया,

निद्रा और राम को मिटवाया ।

और राग द्वेष मल को मारा ॥ प्रभु० ॥३॥

गय गयो जो कश्मिन्नपुर में

(५२)

बनैं तीर्थकर ज्ञानी उर में ।

करे तीन भुवन में उपकारा ॥ प्रभु० ॥४॥

चोइस सौ वासठ संवत् में,

शशि पूनम श्रवण में सावण में ।

बैठाये प्रभु गुण उपचारा ॥ प्रभु० ॥५॥

अजमेर के बीच केसरगंज में,

श्री पल्लीवाल सित मन्दिर में ।

पूजा भक्ति करे संव सारा ॥ प्रभु० ॥६॥

श्री मुक्ति कमल को स्वीकारा,

श्री ज्ञान न्याय को दिलधारा ।

जय चारित्र दर्शन आधारा ॥ प्रभु० ॥७॥

३१ श्री धर्मनाथ स्तवन (सस्कृत)

(गण—मैत्री)

चन्दघ्न चन्दघ्न श्रीमद्,

दिव्यराक्षसपति धर्मेन्द्रं ॥ बलन ॥

विश्वशूलौघ्य ममृद्धि सुगेहं,

घ्नन् घ्नन्तं मद्घ्नानं ।

घान्य घानि महा कर्म प्रपद्य,

नाशयितार मद् भक्तं ॥ वं० ॥१॥

शङ्खभिर्भन्य रीतिं भगद्वि,

भन्य प्रशोष दिनेन क्षमं ।

मन् प्रेष्ट मन्मायु श्रेष्ठ,

मीमांसयेन्मयं पण्यं ॥ वं० ॥२॥

यन्मायाय इति मिमेप्सा,

यानि च भव वातारं ।

वर्जित सर्व विकार मुनीन्द्रं,

प्राप्त परात्म पदं तारं ॥ वं० ॥३॥

सद्विलसन् गुण व्यूह गरिष्ठं,

दोषोन्मुक्तं चिद्रूपं ।

विश्वक् विश्व प्रकाश करं शं,

सद्भव्योभ्यो दातारं ॥ वं ॥४॥

अव्याबाधं मोक्षगतं तं,

नान्त स्थितिं वरकान्ति भरं ।

चारित्रानुग दर्शन सेवित;

पत्कमलं जन सौख्य करं ॥ वं० ॥५॥

३२ धर्मनाथ स्वामी स्त. (मु० रत्नपुरी नौराई)

(राग—पनिहारी)

जय जय धर्म जिनंदजी, भूहारा बाल्हाजी ।

जय जगत हितकार, बान्हाजी ॥ जय० ॥१॥
 भानु नृप कुल दिन कर, म्हारा बान्हाजी ।
 सुप्रता मात मल्हार, बान्हाजी ॥ जय० ॥२॥
 आत्म धर्म के दान से, म्हारा बान्हाजी ।
 बने मय्य आधार, बान्हाजी ॥ जय० ॥३॥
 दार्ढ्य अक्षर में भय्य मो म्हारा बान्हाजी॥
 तूं गिरपद दानार बान्हाजी ॥ जय० ॥४॥
 धरम गदत भव में फिरे म्हाग बान्हाजी ।
 तुम पद धर्म रा मार बान्हाजी ॥ जय० ॥५॥
 रत्नपुर्गी नौगर्ह में म्हाग बान्हाजी ।
 बत्ती फल्यामूर चार बान्हाजी ॥ जय० ॥६॥
 प्रतिमा हैं धी चरन हैं म्हाग बान्हाजी ।
 म्हाग ह दो आगार बान्हाजी ॥ जय० ॥७॥
 दर्शन धर्म के धर्म में म्हाग बान्हाजी ।

पावे भव का पार बाल्हाजी ॥ जय० ॥८॥

३३ श्री शांतिनाथ स्तवन (मु० कलकत्ता)

(राग—यमन बल्यारण, कालिंगडा की राह)

गावोजी गावो शांति जिनन्दा ॥ टेरे ॥

जगपति अश्वसेन कुल चन्द,

चक्रवर्ति पंचम गुण वृन्द ।

तीर्थ विनायक अचिरानन्द,

ज्ञानविभाकर आनन्द कन्द ॥ गावोजी० ॥१॥

शांत दांत योगि गम्भीर,

भवजल तारण मोहन वीर ।

भव्य उद्धारक जिनपति धीर,

जो सेवक की टारे पीर ॥ गावोजी० ॥२॥

महावीर जिन मंडल आय,

दिल में भक्ति रस प्रकटाय ।

मभी मिलकर प्रभु के गुण गाय,
दर्शन मगल सुगी मनाय ॥ गायो जी० ॥ ३॥

३४ श्री शान्ति जिन स्तवन (चंगाला)

(गग — आ गग)

आमि जिनगत्र के कोरि नोमो ग्यार,
शानि जिनद के कोरि नोमो ग्यार ॥ १॥

रिग्योमेन छिने गुना नागोर,
भोरोन रिग्ये शक्ति शक्तार ॥ आमि० ॥ २॥

दूख मगटं आति दूखो आ छे,
प्रानुने आमि होखे भोरों पार ॥ आमि० ॥ ३॥

कोजिगनेरी नोनेर ओपुस,
पोखेरीर दानेन उगार ॥ आमि० ॥ ४॥

कृपा दृष्टि कोरि आमा के देखून,
 शिवोपोद देन् प्रभु कोरून् उद्धार ॥आमि०॥४॥
 सोफोल जोन्म होइलो आमादेर्,
 दोशोन् कोरि पोडि चोरोन् तुमार ॥आमि०॥५॥

३५ श्री शांतिनाथ स्तवन (मु० हस्तिनापुर)

(राग मेरे मीला बुला ले मदीने मुक्के)

अब शांति जिनेश्वर शांति करो ॥टेर ॥

चौराशी लख योनि फिरते,

आयो तुम शरणे प्रभु !

नागपुर नरेश स्वामी,

‘छोड़’ ना अब है विभु !!

मेरे शिर पर अपना हाथ धरो ॥ अब० ॥१॥

पांचवां चक्री नरेश्वर,

सोलसा जिन चद्रमा ।

ज्यू कनूतर को बचाया,
बही फिर कीजे चमा ॥

शुभ नष्टिमे मेरु क राज सरो ॥ अ० ॥ २॥

च्यौन जन्म विराग दीवा,
ज्ञान ये जगहिन करा ।

दम्तिनापूर में हुए है,
चार कन्यागुरु वरा ॥

राग है गजपुत्र में शालि धरो ॥ अ० ॥ ३॥

नार्थ धाम में दिव्य गुरु,
मृगति मनदागिरी ।

जातिगः नृपि प्रतिष्ठित,
मात्र गेन विहारिणी ॥

मनी नीर के मय भग्ना भगे ॥ अ० ॥ ४॥

दोनों तर्फ में कुंथु अर के,
चैत्य घर हैं दीपते ।

बार कल्याणिक हुए यूं,
भव्य कर्म को भीपते ॥

प्रभु दर्शन दर्शन पाप हरो ॥ अब० ॥५॥

३६ श्री शांतिनाथ स्तवन (मु० हस्तिनापुर)

तीरथ मिला अब तारन् तरन् ॥ टेरे ॥
हस्तिनापुर में तीनों प्रभु के,

बारह कल्याणिक पाप हरन् ॥ तीरथ० ॥१॥

वाचक शांति चंद्र प्रतिष्ठित,
शांति मूरत है शांति सदन ॥ तीरथ० ॥२॥

मूरत कुंथु अर प्रभु की,
करें जगतका आरत शमन ॥ तीरथ० ॥३॥

निसिंहि का पहिली दूसरी में,
 तीनों प्रभुके स्मारक स्मरण ॥ तीर्थ० ॥४॥
 टूंक अक्षय में आदि के चरणा,
 चक्री जिनंद के तीन चरण ॥ तीर्थ० ॥५॥
 दर्शन पाया पाप कटाया,
 तीर्थ का क्या करु रगुन ॥ तीर्थ० ॥६॥

३७ श्री कुंथुनाय नमः (गु० उमा)

(राग—वराह वनम रवे बरालु वनम)

बहाना लागे मने नृ भू जिनन्द,
 प्याग लागे मने नृ भू जिनन्द ॥ टिंगा ॥
 गुगु नदा, उपगुम बंदा,
 लहराई भया भाग्य रद ॥ पदा० ॥१॥
 गङ्गानाथ बाग कल्याणक

मुक्ति वर्या सम्मेत गिरिंद ॥वहा० ॥२॥

भूख्युं वालक, जेम माता ने,

देखीने पामे परम आनन्द ॥वहा० ॥३॥

ओगणोश से, नेबुं चौमासे,

वांघा उंभा मां भाव अमंद ॥वहा० ॥४॥

चारत्र पालन, दर्शन साधन,

खरे खरा छे कुंथु जिनंद ॥वहां० ॥५॥

३८ श्री मल्लिनाथ भ्वासी स्तवन

(मु० भोयणी)

(राग—काली कमली वाले तुम से लाखों प्रणाम)

भोयणी तीर्थनावासी प्रभुने क्रीड़ों प्रणाम ॥टेरा॥

गरवी गुजराती भूमि मां,

धर्मधारा चुंवाल भूमि मां ।

मुन्दर भोयणी गाम ॥ प्रभु ने० ॥१॥

पटेल केवलना खेतर मा,

त्रण हाथ कुनो गालंता ।

प्रकट्या ज्योति धाम ॥ प्रभुने० ॥२॥

सवत् श्रोगणीस से त्रीस वर्षे,

वैशाखी पूनम दिन हर्षे ।

दीठा मल्लि श्याम ॥ प्रभु ने० ॥३॥

वलद मिना ने गाडे बेठा,

उटडो भोयणी सामे लेता ।

आच्या अहिं अभिराम ॥ प्रभु ने० ॥४॥

आपे ढेडने दर्शन दीघा,

ठाकरडाना श्रीफल लीघा ।

सार्या सहना काम ॥ प्रभु ने० ॥५॥

नरोत्तम म्हैता नो भय टाळ्यो,

काऊसगगी नो पलटो पाव्यो ।

दुखी जीव विश्राम ॥ प्रभु ने० ॥ ६ ॥

ओगणिश से तेतालिस टाणे,

महा शुदी दशमी ने बहाणें ।

तरुत्तनशीन् थया श्याम ॥ प्रभु ने० ॥ ७ ॥

संवत् वाणुमां जिन भेट्या,

‘मृगशरसुदि एकम’ दुःख भेट्या,

बुध ज्येष्ठा आराम ॥ प्रभु ने० ॥ ८ ॥

मुक्ति कमलमां वास तमारा,

चारित्र दर्शन गुण आधारा ।

प्रणामे लोक तमाम प्रभु ने० ॥ ९ ॥

३६ श्री नेमनाथ स्तवन (मु० शौरीपुर)

(राग—बोल बोल अन्दीश्वर बाबा काँई थारी मरजीरे)

बोल बोल नेमनाथजी, क्यों ? मौन धराया रे,

मोहन कामणगारा रे ॥ टेरे ॥

अमरी भमरी कर हुलराया,

जन्मोत्सव उलसाया रे ।

चौसठ सुरपति ने मेरु पर,

स्नान कराया रे ॥ मोहन० ॥१॥

यादव कुल में नाथ नरोत्तम,

सती शिवा का जाया रे ।

भूप समुद्र का लालजी जो,

रयाम सुहाया रे ॥ मोहन० ॥२॥

आयुधशाल में आय प्रभु ने,

अपना जोर बताया रे ।

शख धराया लखन में और,

शंख बजाया रे ॥ मोहन० ॥३॥

व्याह करण को नेम नगीना,

राजुल तोरण आया रे ।

पशुअन की पुकार से रथ,
मोड़ फिराया रे ॥ मोहन० ॥४॥

गढ़ गिरनार में दीक्षा लीनी,
तप जप योग बढ़ाया रे ।

कर्म काट के बने प्रभु जी,
श्री जिनराया रे ॥ मोहन० ॥५॥

विलफ्ती राजुल करे विनती,
क्यूँ मुज मन लुभाया रे ।

मोह लगाकर आज नाथजी,
नेम रिसाया रे ॥ मोहन० ॥६॥

शिव सुन्दरी से नेह लगाकर,
मुज से कर न मिलाया रे ।

शोच के राजुल ने भी नेम से,

(६७)

संयम पाया रे ॥ मोहन० ॥ ७ ॥

धन्य गुराल यह जग उपकारी,

ज्योत से ज्योत मिलाया रे ।

राजुल नेम रमे शिखपुर में,

रग सजाया रे ॥ मोहन० ॥ ८ ॥

शौरीपुर में नेम । सदन में,

कल्याणक युग गाया रे ।

कृष्ण त्रिं को निरखत दर्शन,

शिर नमाया रे ॥ मोहन० ॥ ९ ॥

१० श्री नेम धुन स्तवन

(राग—गजल)

मुझे है काम नेमजी से, जगत रुठे तो रुठन दे । ऐश ।

यदुबुल के तिलक प्यारा,

शिवासुत नेम जिन चंदा ।

बड़े ब्रह्मचारी गुण वृन्दा,

उसे जी भरके देखन दे ॥ मुझे० ॥१॥

कई तो लोभ में लटके,

कई कई इश्क में भटके ।

महा भोगों के सुखों को,

जगत् लूटे तो लूटन दे ॥ मुझे० ॥२॥

कपट मद दुःख इतराजी,

जगत है मोह की बाजी ।

इसी से नाथ के दम में,

जीवन छूटे तो छूटन दे ॥ मुझे० ॥३॥

भरा बदवो बपु नाशी,

प्रभू है सत् अविनाशी ।

प्रभु के नाम को जपने,

शरीर लूठे तो लूठन दे ॥ मुझे ॥४॥
 प्रभु के रूप में हसती,
 विषय त्रिकार को कमती ।
 प्रभु का मुख ना देखा,
 नैना फूटे तो फूटन दे ॥ मुझे ॥५॥
 अचल चारित्र से हरदम,
 मुखी दर्शन गया विभ्रम ।
 पुराणी कर्म की मटकी,
 कभी फूटे तो फूटन दे ॥ मुझे ॥६॥

४१ श्री नैमनाथ स्तवन (गीरनाराजी तीर्थ)
 (राग—हुंवर कर्नया बामरिया बड़ा मूढ़ आये)
 नैम ? मेरी नैया, मरुधार ।
 क्यों यों शीघ्र आये ॥ टेर ॥

(७०)

मनशा थी कि नेम लावेगा ।

गोरी राजुल लाडी ॥

यह मनशा भी पुरी न कीनी ।

कहे शिवादे मैया ॥ मभ० ॥१॥

दुलहा बनकर आप पधारे ।

मुझे पगली बनाई ॥

राजूल रोती करे विनति ।

रथ को क्यों मोड़ैया ॥ मभ० ॥२॥

अपना यादव कुल है नामी ।

भागे कोई न भाई ॥

तुं दुल्हण को भी छुड़ आया ।

कहे कहान कनैया ॥ मभ० ॥३॥

सैन्य बचाया, पशु बचाये ।

आप बड़े उपकारी ॥

ढारिका की प्रजा पुकारे ।

गढ़ गिरनार चढ़ैया ॥ मभ० ॥ ४॥

नेमजी राजूल की जोगी तो ।

मुक्ति महल में मिलैया ॥

आपके चारित्र दर्शन ज्ञान हैं ।

इनके आप खनैया ॥ मभ० ॥ ५॥

४२ नेमनाथ

(राग—हुंवर रुनैया, धामरियों कहा भूल आये)

जाओ मखि जाओ ।

प्रभु नेम को बुलाओ ॥ टेर ॥

यादव चंदा शिमा नन्दा ।

उन्हीं को मनाओ ॥

पिरह ज्वाला जलती माला ।

प्रेम की प्याली पिलाओ ॥ कैसे भी वचाओ ॥ जा. १॥

पशुअन के तो प्राण वचाओ ।

मनुष्य को रीवाओ ॥

मनुष्य के लिये लापरवा ।

कैसी दया जताओ ॥ इंसाफ कराओ ॥ जा० ॥ २॥

आप जगत के नाथ बने पर ।

राजूल को ही सताओ ॥

व्याह को आप पधारे नहीं तो ।

दीक्षा पाठ पढ़ाओ ॥ अब शिष्या बनाओ जा. ॥ ३॥

नेमजी प्यारे दीक्षा देकर ।

राजूल राग हटायो ॥

नेम राजूल की जोरी बनते ।

आनंद हर्ष मनाओ ॥ बाजें भी वजाओ ॥ जा. ॥ ४॥

चारित्र दर्शन ज्ञान विमान से ।

(७३)

मुक्ति शहर ले जाओ ॥
मादि अनंत आनंद में लीना ।
जीवन भेद हटाओ ॥ जीवन से मिलाओ जा ॥५॥

४३ श्री नेमिनाथ स्तवन (गिरनार)
(राग—गजल—कम्पावी)

सखि जन्दी बतादे ने ।
वसे छे क्या श्री गिरनारी ॥ देख ॥
जोई में द्वारिका पुरी ।
बनी पागल भभी नगरी ॥
जीवन देख्या नहीं क्या पण ।
सताओ ना सखी मारो ॥ स० ॥१॥
हृदय मा नेमने घरती ।
घणै छाग के

स्मरण कल्लोल जल भरती ।

छवी ए नेमनी प्यारी ॥ स. ॥२॥

अरे मारा सवि पायो ।

समय एक साथमां उठ्या ॥

दिनो आडा थई वेठा ।

करे नेमे ग्रही नांही ॥ स. ॥३॥

अहा शुद्ध प्रेम मूर्तिनी ।

चरणं रज नित्य हुं चाहुं ॥

भले योगी न कहेवाऊं ।

पण न टेको तजुं मारी ॥ स. ॥४॥

करोड़ों देवमां वेठा ।

जीवोभां प्रेम रेडे छे ॥

सखि ! चारित्र गुण योगे ।

सफल दर्शद चमनकारी ॥ स. ॥५॥

४४ श्री नेमनाथ स्तवन

(राग—कानुदो नजाणे मारी प्रीत)

नेमजी न जाणे मारी प्रीत ।

शी कहुं दिलनी वातोरे नेम ॥ टेर ॥

आठे भगोनी अचिचल प्रीति ।

छेदी फरेले चित्त, छोडे सघलो नातारे ॥ ने ॥ १ ॥

राजूलनारी, करी दुःखियारी ।

शी आ जाढव रीत नीतिनै घेछे लातोरे ॥ ने ॥ २ ॥

जननी जनक थी चाले उलटो ।

तेनी शी परतीत, करे छे लोको वातोरे ॥ ने ॥ ३ ॥

रागिणीनी सामुं न जुओ ।

जिगमण थी प्रीत, भण्याछे एकड घातोरे ॥ ने ॥ ४ ॥

नेमिजी विण आ जीवन कपरु ।

पीडे मोढ म्वचित्त दिलटु करे कन्पातोरे ने ॥ ५ ॥

व्रत कंकरा थी, आज मनावी ।
 हैये राखी प्रीत, हरख न दिलमां मातोरे ॥ ने. ६॥
 मुक्ति भुवननां कमल गंधनी ।
 ललचावी मम चित्त, करे छे नवली वातोरे ने. ॥७॥
 चारित्र दर्शन रंग रंगिला ।
 नेमनी जोड़ी सुस्थित, विलसता दिनने रातोरे ने. ८॥

४५ श्री नेमनाथ स्तवन (मु० गिरनार)

देखे नेमि जिणंद नैनां सफल भई ॥ टेरे ॥

व्याह करण को नेम पधारे,

संकेत करके गये गिरनारे ।

जाकर वसे एकन्त ॥ नैनां० ॥ १ ॥

तीन लोक का राज जमाया,

विश्व शांति कानून फरमाया ।

सेयक हैं सुर डट ॥ नैना० ॥२॥

समोसरन में नेम नगीने,
बैठे हैं सुख चैन में लीने ।

रवत गिरि कानन ॥ नैना ॥३॥

भेद को पाकर नेम के लारे,
राजुल जाय मिली गिरनारे ।

नैना से नैना मिलन ॥ नैना० ॥४॥

उपशम प्रेम में देह निसारा,
दुविधा नासी भया उजियारा ।

डारा जादु मुनिद ॥ नैना ॥५॥

नेम अनुपम राजुल गौरी,
ऐसी बनी एक मेरु की जोरी ।

मिली भया आनन्द ॥ नैना ॥६॥

शिव मंदिर में दोनों पधारै,

(७८)

चारित्र दर्शन प्रेमी प्यारे ।

पाया परम आनन्द ॥ नैनां. ॥ ७ ॥

४६ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० शंखेश्वर)

(राग—मालकोष, ताल—त्रिताल)

शंखेश नाथ ! मुक्त पकड़ हाथ ॥ टेर ॥

देव नगीना अमीरस भीना,

नजर करो वनुं आज सनाथ ॥ शंखेश० ॥१॥

रमकडुं समकित संयम सुखड़ी,

सामे बतावी शुं खेंचो नाथ ! ॥ शंखेश० ॥२॥

सैन्य जरा निवारी ए रीत,

वारो जन्म मरण संग्गाथ ॥ शंखेश० ॥३॥

जेवो तेवो पण मानो पोतानो,

कर्म जंग मां आपो साथ ॥ शंखेश० ॥४॥

चारित्र दर्शन शस्त्र वगाड़ी,
विजय अमारो आज नाथ ॥ शंखेश० ॥५॥

४७ श्रीपार्श्वनाथ स्तवन (मु० बेरावल बदर)
(राग—घई प्रेमवरा पातलिया)

प्रभु पार्श्वजीनन्द जयकारी,
चिन्तामणि चिन्ता विदारी रे ॥ टेक ॥
चेतन रमण्यो काल अनादि,
पुण्य दशा हवे जागी ।

जिनराज मल्या सोभागी,
प्रभु तुज आणा दिलधारी रे ॥ प्र १ ॥

कल्पतरु फाल्यो घरमाहीं,
आरुनी प्रीति छाड़ी ।
चिन्तामणि रत्न ने पाभी,

छोड़ी मैं काचनी यारी रे ॥ प्र. २ ॥

बेसी क्षीर समुद्र ने कांटे,
खणायें कूप शुं काजे ।

दिलमां श्री जिनजी विराजे,
शुं करशे देव हजारी रे ॥ प्र. ३ ॥

अवर देवनी आश ने छंडी,
मोह ममत्व ने खंडी ।

पापुं समकित जिन बंदी,
ए आश हृदय मां धारी रे ॥ प्र. ४ ॥

पारस चिन्तामणी शिवगामी,
जगत जीव विशरामी ।

वैरावल मंडन स्वामी,
मूर्ति दर्शन शिवकारी रे ॥ प्र. ५ ॥

(८१)

४८ श्री पार्श्वनाथ स्तवन

(मु० नगर शैठ का बड़ा, अहमदाबाद)

(राग—गार्धी का आज हिंद में अहसान हो गया)

श्रीपार्श्व प्यारे विश्व में,

मशहूर हो- गये ।

विजेता मोह मल्ल के,

बहादुर हो गये ॥ टेरे ॥

शचीश सूर्य चदा,

प्रभु के विख्यात बदा ।

दिनों के नाथ लोग में,

मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व ॥१॥

असुर नरेश देवा,

करें आपकी ही सेवा ।

भक्तों के पाप टार के,

(८२)

मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व. ॥२॥

सर्वज्ञ सर्वदृष्टा,
जिनेन्द्र धर्म सृष्टा ।

आलम में तत्व आपके,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व. ॥३॥

श्री राजनग्र स्वामी,
देखे जिनेन्द्र नामी ।

शेठों के धर्म बाग में,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व. ॥४॥

तुम्हीं प्रभु हमारा,
चारित्र के आधार ।

दर्शन त्रिपुटी योग में,
मशहूर हो गये ॥ श्री पार्श्व० ॥५॥

४६ श्री गोड़ी पार्श्वनाथ स्तवन

(मु० अजमेर)

(राग-होरी-धीर प्रभु मन भायो, जी मेरे भव दुख दारो)

पर्व को ध्यान लगायो जी,

पायो नाथ सुदर्शन, पार्श्व. ॥८॥

अश्वसेन राजा कुल तिलक,

वामा देवी को जायो ।

तीनों भुवन में प्रगट प्रतापी,

पुरुपादानी कहायो जी ॥ पायो. ॥९॥

च्यवन जन्म दीक्षा और केवल,

शहर बनारस ठायो ।

समोमरन् देवो ने कीना,

पुण्य निपाक मनायो जी ॥ पा ॥१०॥

प्रभु ने कन्याण पथ बतायो,

(८४)

आतम धर्म सुनायो ।

समेत शिखर गिरि पर से प्रभुजी,

शिव भुवन में सिधायो जी ॥ पा. ॥३॥

अजयमेरु में तपगच्छ मन्दिर,

गौड़ी पार्श्व सुहायो ।

पारस-विमल-चौमुख वीर जी,

सुव्रत-पारस भायो जी ॥ पा. ॥४॥

संवत् चोबीस सौ वासठ में,

चारित्र दर्शन आयो ।

ज्ञान न्याय सह भजन भक्ति में,

ध्यान तरंग बढ़ायो जी ॥ पा. ॥५॥

५० श्री पार्वनाथ स्तवन (मु० मथुरा)

(गान—श्याम कल्याण)

आज है चर्चाई मथुरा, पार्व भुवन में ॥८॥

मंदिर सुन्दर वहां बनवाया,

शासन स्रि वचन में ॥ आ ॥१॥

पार्व जिनेश्वर यहां पधारे,

समवसरे थे कानन में ॥ आ ॥२॥

और बनाया पार्व का तीरथ,

कल्पद्रुम ध्यानन में ॥ आ ॥३॥

आगरा संध ने यहा पर कीना,

जीर्णोद्धार सदन में - ॥ आ ॥४॥

, कीनी प्रतिष्ठा पार्व प्रभु की,

हर्षित होकर मन में ॥ आ ॥५॥

वीर के मन में मढ इषु जिन में,

मधु शुदि सातम दिन में ॥ आ. ॥६॥
 पूजन आरति अंगिया से सेवे,
 ताज श्री देव देवन में ॥ आ. ॥७॥
 शांति महोत्सव आनन्द मंगल,
 धन्य वो दिन जीवन में ॥ आ. ॥८॥
 चारित्र दर्शन जिन गुण गावे,
 शिर भुकावे चरनन में,

५१ श्री सुपाश्वर्नाथ (वगैरः) (मु० मथुरा)

(राग—अव तो जिन वाणी सुनाई जायगी)
 मथुरापुरी में जिन तीर्थ नमो ॥ टेरे ॥
 सुपास का स्तूप, मेरु स्वरूप, कुवेरा देवी माना ।
 जिनेश्वर पास, पधारे खास, यहाँ सुरनाथ ठाना ॥
 कल्पद्रुम नाम, प्रभुका धाम, तीर्थ था यूँ पुराना ।

भुनिगण माथ, पडे छरि राज, विचरते थे श्रमाना ॥

ऐसी पुनीत भूमि में राग धमो ॥ मथुरा० ॥१॥

जम्बू गण्डे प्रभसादि दृढ, विचरते पुर आयें ।

दीना उपदेश बनाया गणेश, जम्बूने मोक्ष पाये ॥

पाच शत धार मत्ताईश लार, यहा स्तूप ये बनाये ।

जगद्गुरु धीर छरीधर हीर, उन्हाके दर्श आयें ॥

भय नारण स्थान में मोह दमो ॥ मथुरा० ॥२॥

आगम के पाठ, लिखाये अथाह,

स्कंदिल मुनिपति ने ।

धीयामटी नाग, फगापुत पास,

विगजे हैं नगीने ॥

प्रतिष्ठा नग, यदा दिल रंग, प्रमुके स्वर्ग नीने ।

प्रभु दर्शन हरे भर्मा दृढ, छिन्क में पाप छीने ॥

यहा दर्शन निज गुण भार नमो ॥ मथुरा० ॥३॥

५२ चिंतामणि पार्श्वनाथ स्त. (मु. आगरा)

(राग—छोटी छोटी बुनिया रे)

देव चिंतामणि पास, स्वीकारो मेरी वंदना ॥ टेर ॥

पूरब देश में आगरा शहर में,

रोशन मोहल्ला उजास ॥ स्वी. ॥१॥

पार्श्व प्रभु का धाम सलूना,

मानुं शांति निवास ॥ स्वी. ॥२॥

शीतल गोड़िचा शांति चउमुख,

अन्दुणी वेदिका जास ॥ स्वी. ॥३॥

यशब् की मूरत मोहनी सूरत,

सात फणों के प्रकाश ॥ स्वी. ॥४॥

जगद् गुरु ने तीरथ ठाना,

बैठाये गुण राश ॥ स्वी. ॥५॥

चिंतित पूरे चिंता चूरे;

सफल करे, मन आश, ॥ स्त्री ॥६॥
 पारम शानी ओर न नामी,
 दाम, करे अरदास ॥ स्त्री, ॥७॥
 वीर के सन में मद त्रत जिन में,
 कीना दर्शन चउमास ॥ स्त्री ॥८॥
 चारित्र महल में भक्ति की स्तेल में,
 दर्शन ज्ञान विलास ॥ स्त्री ॥९॥

५३ चितामणि पार्श्वनाथ स्त. (मु आगरा)

(राग—विक्रमत मुख्य म जो कि मर जायगे
 दो छमर नाम दुनिया मे कर जायगे)

मेरा पार्श्व प्रभु ! मेरा पार्श्व प्रभु !
 सलुना श्री चितामणि पार्श्व प्रभु ॥ टेरे ॥
 तुमने राग द्वेष को दूर किया,

क्रोध लोभ माया मद मोड़े प्रभु ! मे. ॥१॥
अश्वसेन का नंदन काशीपति,
रानी वामादेवी का दुल्हारा प्रभु ! मे. ॥२॥
तुंही है जगत् में एक नाथ बड़ा,
इसी से तेरे चर्ण में आया प्रभु ! मे. ॥३॥
तुंही जीवन में तेरा लव तन में,
यही है मन में तुंही मेरा प्रभु ! मे. ॥४॥
आग्रा शहर के प्राचीन मंदिर में,
विराजो सभी संघ के दिल में प्रभु ! मे. ॥५॥
तुंही मुक्ति पुरी का सीतारा विभु,
श्री चारित्र दर्शन का आधार प्रभु ! मे. ॥६॥

५४ भजन (मु० आगरा)

(विष्णुमते मुल्क में जो कि मर जायंगे)

मेरे प्यारे ओ दोस्तो ! मंदिर जायगे,
जायंगे जायंगे जायंगे जायगे ॥ ६० ॥

यहा नाथ मिराजे सर्वज्ञ प्रभु,
उन्का हरदम मिलू कर गुण गावगे ॥ ६१ ॥

तीनों लोगो के हैं रखवाले प्रभु,
उन्की पूजा मनाकर खुशी पावगे ॥ ६२ ॥

मत झूठ बोलो मत गुस्सा करो,
ऐसी पाक नाते गिखकर ले आयंगे ॥ ६३ ॥

तुम्ही जाय न माला कभी प्रेम की,
इन्ही भावों को दिल में जमा आयंगे ॥ ६४ ॥

आप मानो न मानो गुण आपकी,
दोस्तानी मे गुण करू तुम्हो ले जायगे ॥ ६५ ॥

सबको बाल हित कारिणी सभा कहे,
 उनके दर्शन से पावन होकर आयंगे ॥६॥

५५ श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० भेलुपुर)

(आश -- मैं कीनो नहीं तो त्रिन०, ताल-त्रिताल)

मेरो प्रभु पारसनाथ आधार ॥ टेर ॥

तुम सम देव आलम में न देखा,

आत्म शांति सुखकार ॥ मेरो० ॥१॥

श्री चरन में मुझ मन लीनो,

ज्यूं कोयल सहकार ॥ मेरो० ॥२॥

पापी को अपना पद दीजे,

पारस लोह विचार ॥ मेरो० ॥३॥

नव मंदिर भूषित काशी में,

भेलुपुर शिणगार ॥ मेरो० ॥४॥

सबत् छयाशी फाग की पाचम,

शुक्र कल्याणक चार ॥ मेरो० ॥५॥

दर्शन ज्ञान व न्याय को उत्तम,

चारित्र फल दातार ॥ मेरो० ॥६॥

५६ श्री पार्वनाथ स्तवन (मु० मधुवन)

(राग—हिंडोल, स्याम भूले हिंडोला कानन में)

भूले ध्यान हिंडोला मधुवन में,

पारसनाथ सावरिया मधुवन में ॥ टेर ॥

अश्वसेन वंश चंद, बामा राणी कुचि नद ।

मरगत काति है तन में ॥ भूले० ॥ १ ॥

पार्व साई तीर्थनाथ, साधु तीस तीन साथ ।

शुक्र बढाया कानन में ॥ भूले० ॥ २ ॥

सम्मेत शिखर गिरिंद, गये दूर कर्म घुन्द ।

ज्योति चमक है नैनन में ॥ भूले० ॥ ३ ॥
 मेघडंवरी अनूप, उच्च गिरि एक टूंक ।
 योग रुकाया निज मन में ॥ भूले० ॥ ४ ॥
 भये संग में ही सिद्ध, मोक्ष गामी शुद्ध बुद्ध ।
 शैलेरी के साधन में ॥ भूले० ॥ ५ ॥
 श्री चारित्र तीर्थ धूर, बड़े ज्ञान-न्याय पूर ।
 दर्शन अपने भूवन में ॥ भूले ॥ ६ ॥

५७ श्री पार्ष्वनाथ स्तवन (सु० मधुवन)

(राग--हिंडोल--एक ताल से तीनों पद)

धरो ध्यान को सजनां ! मधुवन में,
 पारसनाथ सांवरिया का मन में ॥ टेर ॥
 श्याम गई भई भौर, पर्म हर्ष ठौर ठौर ।
 बड़े ध्यान की भूकोर, मधुवन में ॥ धरो० ॥ १॥

अंगूर अशोक आम, आंवला अनार जाम ।
 नासपति पुष्प धाम, मधुवन में ॥ धरो० ॥२॥
 निंब हरडे तमाल, कोला चाय पान ताल ।
 औषधि हरि कमाल, मधुवन में ॥ धरो० ॥३॥
 पत्र पुष्प ठाठ ठाठ, पानी भरे कुड घाट ।
 ठेर ठेर शाति पाठ, मधुवन में ॥ धरो० ॥४॥
 कोकिला कुहूँ शोर, उडते फिरे चक्रोर ।
 नाचते रंगीले मोर, मधुवन में ॥ धरो० ॥५॥
 चले समीर मद मद, खिला है शिशिर चद ।
 नहीं दूद शोक धद, मधुवन में ॥ धरो० ॥६॥
 भुवन उत्तम वार, गणधर जिन धार ।
 भोमियाजी लारलार, मधुवन में ॥ धरो० ॥७॥
 चारित्र प्रियेक सार, तीर्थे आप ही श्रीकार ।
 दर्शन विशुद्धि धार, मधुवन में ॥ धरो० ॥८॥

५० श्री पार्श्वनाथ स्तवन (सम्मेतशिखरजी)

(राग - टोपी वालानां टोली उत्तर्या)

सम्मेत शिखर पार्श्व प्रभुजी बैठा ध्यानमां ।

अति ऊंची मनोहर भेखड़ो,

ऊंचा गगन समां शिखरमां जाय रे ॥सं. ॥१॥

उठी घेरी ईशानमां वादली,

ली लां, तरुवर मां पलटा पूराय रे ॥स. ॥२॥

चमकारे जबुके विजली,

नरी, वरफ सभी सफेदी सजाय रे ॥स. ॥३॥

मंद मंद पवननी लहेरमां,

रूड़ा, मयूर तणां टहूका सूणाय रे ॥स. ॥४॥

प्रभु चढ्या शैलशी श्रेणिये,

दिशा, सुगन्ध धरी अति मलकायरे ॥स. ॥५॥

शुदि श्रावण मासनी अण्ठमी,

सोहे, घणलशशी विशाखा नी मांय रे ॥ स ॥६॥
 चिद्रूप थया प्रभु पासजी,
 बीजा, त्रय्य श्रीश मुनिवर शिव जायरे ॥ स ॥७॥
 प्रभु पार्षन्तु मन्दिर त्या बन्युं,
 सोहे, सम्मेत शिखर मोटो गिरि रायरे ॥ स ॥८॥
 शुभ चारित्र दर्शन साधवा,
 प्रेमे नमन करुं जिनवरना पाय रे ॥ स ॥९॥

५६ सम्मेत शिखरगिरि चेत्य परिपाटी

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्री परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म-
 जरा मृत्यु निवारणाय भीमत जिनन्द्राय जलादिक यमा
 महे स्वाहा

(पूजा करने वाले, प्रथमक, द्वक, त्रै, सामान्य
 तरह तीर्थं करो का बोझ कह कर इस मन्त्र पाठ को बोल कर
 पूजा करें) ।

॥ दोहे ॥

गौतम गणधर गुणनिला, अमृत लब्धि प्रधान ।

गिरिवैभारे शिव वर्या, करो जगत कल्याण ॥१॥

कुंथुनाथ कुगति हरे, स्थापक शिव पद स्थान ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२॥

ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्धमान भगवान् ।

चारे शाश्वत जिनवरा, करो० ॥३॥४॥

नमिनाथ नीति वदे, दुःख दारिद्र्य कृपाण ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥५॥

अरति हरता अर प्रभु, अक्षत धाम प्रमाण ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥६॥

कर्म अरिदल भेटता, मल्लि मल्ल प्रधान ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥७॥

श्री श्रेयांस जिनेश्वरा, श्रेय करे जगभाण ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥८॥

सुविधि नाथ सुविधि कहें, शिव साधन विधि ज्ञान।-

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥९॥ -

पद्म प्रभु निर्लेप छे, लोकमा पद्म समान ।

सम्मेत शिखरे शिव - वर्या, करो० ॥१०॥

मुनि सुप्रत व्रत सारथी, करता मोक्ष-प्रयाण।-

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥११॥ -

चन्द्र प्रभु शशि लंछना, चन्द्र काति समान ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१२॥

आदि राज आदि प्रभु, ऋषभ देव भगवान ।-

अष्टापद गिरि शिव वर्या, करो ॥१३॥ -

चार अनन्ते संवर्या, देव अनन्त महान ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१४॥ -

शीतल प्रभु शीतल गुणा, आपे अमृत पान ।

सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१५॥
 सम्भव शमरस सागरा, नायक समता खाण ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१६॥
 वासव पूजित वासुपूज्य, धारक केवल ज्ञान ।
 चंपा नगरे शिव वर्या, करो० ॥१७॥
 अभिनन्दन आनन्द रूप, सप्त भंग नय वाण ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१८॥
 पार्श्वनाथ पारस समा, सर्व ख्यात गुणवान् !
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥१९॥
 शुभ गण धर प्रभु पार्श्वना, शुभदेशक शुभ तान ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२०॥
 धर्म प्ररूपे धर्म ने, भाव शील तप दान ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२१॥
 ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान भगवान् ।

चारे शाश्वत जिनवरा, करो० ॥२२-२३॥
 पाचमा जिन सुमति प्रभु, सुमति दायक जाण ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२४॥
 शातिनाथ शाति करे, सुख सौभाग्य सुकान ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२५॥
 वर्धमान महावीर जी, शासन ना सुलतान ।
 पायापुरीमां शिव वर्या, करो० ॥२६॥
 देव सुपार्श्व सुपार्श्व छे, सेवे देव सुजाण ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२७॥
 निमल विमलता शी कह, मोक्ष मार्ग सधान ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२८॥
 अजितनाथ जग मा अजित, केवल ज्ञान कमान ।
 सम्मेत शिखरे शिव वर्या, करो० ॥२९॥
 नेमि चक्र सम नेमजी, मोडे मोहनु मान ।

गंदं गिरनारे शिव वर्या, करो० ॥३०॥
पार्श्वनाथ पारस समा, तीर्थ पति गुणवान ।
संमते शिखरे शिव वर्या ॥ करो० ॥३१॥

३-४-२२-२३ का संस्कृत पाठ

वंदे शाश्वत मृषभं, चंद्रानन जिनेश्वरं ।

वारिषेणं वर्धमानं, इति शश्वत् चतुष्टयं ॥

और और तीर्थकर के लिये सकलार्हत् के
संस्कृत श्लोक कहना चाहिये ।

नोटः—हमने विक्रम सम्वत् १९८६ चैत्र
सुदी १३ शुक्रवार के दिन शिखरजी तीर्थ की
पहिली यात्रा की । वारस की शाम को गंधर्व
नाला (भार्ता-तलाटी) की धर्मशाला में जाकर
रात रहे और प्रातःकाल ऊपर जाकर चैत्य

(१०३)

जुहारे । उसमें नीचे लिगे अनुसार समय लगा ।
स्थान, दूक पहुचने का समय, विशेष

[घ० मि०]

गंधर्वनाला धर्म० (५-३५) प्रातः काल विहार किया

सीतानाला ६-०

गौतम स्वामी ६-४० चेत्य १५ मिनिट

मुनि सुप्रत० ७-५

अनतनाथ ७-१२

चद्र प्रभु ७-३५ चेत्य (पीछे लौटे)

जल मठिर ८-३० चेत्य ४० मिनिट

धर्मनाथ ९-३२

महावीर स्वामी ९-४० चेत्य ५ मिनिट

पार्ष्णनाथ १०-१५

गंधर्वनाला धर्म ११-३०

६० श्री पार्श्वनाथ स्तवन (मु० सम्मेत शिखर)

(राग—धन्य भाग्य अमारे आंगणे आव्या)

धन्य भाग्य गिरिवर,

सम्मेत शिखर की यात्रा कीनी सार।

मिला है आज पुण्य से,

मनुष्य जीवन का सार ॥ टेर ॥

जबूँ द्वीप में भारतवर्ष में,

आर्य क्षेत्र शुभकार ।

दुःषम, काल में सम्मेत शिखर सम,

ओर न तीरथ धार ॥ मिला० ॥१॥

वीश जिनेश्वर ने इस गिरि पर,

पाया पद श्रीकार ।

इसी से, शिखरजी तीन भुवन में,

सर्व तीरथ सिरदार ॥ मिला० ॥२॥

आत्म कल्याण के स्थान शिखर,
सेवत हैं नर नार ।

भूमि, परम है शांति दायक,
जिन मंदिर मनहार ॥ मिला० ॥३॥

गौतम गुरुजी कुंडु चंद्रानन,
अपमानन नमि धार ।

अर मल्लि, श्री श्रेयाम सुनिधि,
पद्म प्रभु शिखर ॥ मिला० ॥४॥

मूनि सुव्रतली चंडा प्रभुजी,
अपम अनंत उदार ।

शीतल, ममव वामुपूज्यजी,
अमिनदन दिलहार ॥ मिला० ॥५॥

जल मंदिर में परम प्रतिमा,
गौतम शुभ गणधार ।

(१०६)

श्रीधर्म, शाश्वता वर्धमानजी,
वारिषेण जय कार ॥ मिला० ॥६॥

सुमति शांति महावीरजी,
सुपार्श्व विमल सार ।

अजित, नेम श्री पार्श्वनाथ हैं,
सम्मेत शिखर शिंगार ॥ मिला० ॥७॥

पारस गिरि में पार्श्वनाथजी,
वंचित फल दातार ।

तृप्ति, न होती है दर्शन की,
आनंद हर्ष अपार ॥ मिला० ॥८॥

धन्य दिवस है आज हमारा,
धन्य घड़ी धन्य वार ।

श्री पार्श्वनाथ का ध्यान लगाया,
साधक पद आधार ॥ मिला० ॥९॥

(१०७)

वीर सिद्धि मे दिम्कुमरी जिन,
चेत्री पूनम रवि वार ।
चारित्र, दर्शन ज्ञान न्याय का,
हुआ सफल अवतार ॥मिला०॥१०॥

६१ श्री पार्वनाथ स्तवन (मु० पटना)
(राग—अमाच)

श्री जिन गुरु के दर्शन करना,
पाप का होत विखरना ॥ टेर ॥
श्रेणिक का पोता जात, उदायी चपा का नाथ,
बसावे गंगा के पाम, पाटलीपुर चिरयात ।
हेम छरियर का चरना ॥ श्री० ॥१॥
बहा दीपत है उदार, पार्वजी सफेद सार,
और कृष्ण पान्ध धार, पुराणे प्रभु श्रीकार ।

नमन से करम को हरना ॥ श्री० ॥२॥
नेनां इषु दोष विक्रम, पूष शुक्ल भृगु पांचम,
उद्धारक है ज्ञानचंद. वर तपगच्छ संघ ।

और चंदा जिन को समरना ॥ श्री० ॥३॥
कोशा वेश्या बोधकारी, स्थूलिभद्र ब्रह्मचारी,
पांच महाव्रत धारी गुरु पादुका श्रीकारी ।

अमृत धरम सूरि शरना ॥ श्री० ॥४॥
शूलि का हुआ सिंहासन, श्रेष्ठिपति श्री सुदर्शन,
तपा श्रावक गुलाबचंदन, ठवे चरणां सुसज्जन ।

दरशन हुए ऐसा मरना ॥ श्री० ॥५॥

६२ श्री पार्श्वनाथ महावीर स्तवन

(मु० बिहार शरीफ)

(राग—बिना प्रभु पास के दर्शन, कव्वाली)

करे वीतराग के दर्शन,

वही वीतराग होता है ॥ टेरे ॥

जहा आदर्श है अनुपम,

जहा स्रस्त मन मोहन ।

जहां शांति बसे भारी,

यही प्रभु धाम है उत्तम ॥ करे ॥१॥

करे पारस मणि का संग,

घरे लोहा कनक का रंग ।

वही जिनराज होता है,

करे जिनराज का जो मंग ॥ करे ॥२॥

शहर निहार के निच में,

जिनालय युग्म दिलहर है ।

पारम जिन के महावीर के,

अति आनंद के घर हैं ॥ करे ॥३॥

उन्नीश शन और छयासी में,

वदि फाल्गुण दशम फरसन ।
कीनी मुनि ज्ञान-न्याय के सह,
प्रभु यात्रा सफल दर्शन ॥ करे ॥४॥

६३ श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन

(राग—माल कोष, ताल—त्रिताल)

पास जिणंद से प्यार, मैं कीनो अब ० ॥टेरा॥

कोयल टहुकत है मद भर से,

ज्युं देखत सहकार ॥ मैं ० ॥ १ ॥

मानस सर में मोति चुगत है,

हंसा प्रेम अपार ॥ मैं ० ॥ २ ॥

मेघ घटा से थन थन नाचे,

मयुर करे भंकार ॥ मैं ० ॥ ३ ॥

वर्षा काल में प्रेमी पपैया,

पिउ पिउ करत पुकार ॥ मैं० ॥४॥
 सुरपति नरपति जिन गुण गाँ,
 मालन कोश उदार ॥ मैं० ॥५॥
 दर्शन आतम हरख भयो री,
 श्री अतरिछ श्रीकार ॥ मैं० ॥६॥

६४ श्री पार्श्वनाथ स्त० (मु० भादक तीर्थ)

(राग—भीराग, मंगल पूजा शिव तरु कन्द)

जय जय भादक पार्श्व जिनद ॥ टेर॥
 दक्षिण देश की पुनित भूमि,
 मद्राप्ती नगरी सुख कन्द ॥ ज ॥१॥
 दीपत है श्री पार्श्वनाथ का,
 मन्दिर बहा जननयना नन्द ॥ ज ॥२॥
 पार्श्वनाथ की प्रतिमा सुन्दर,

विराजे ज्युं नभ में चन्द ॥ ज. ॥३॥
 शाम सप्त फण धर प्रभु मूरत,
 अर्ध पद्म आसन गुण वृन्द ॥ ज. ॥४॥
 चिंता चूरे चिंतित पूरे,
 और मिटावे भव का फन्द ॥ ज. ॥५॥
 चारित्र दर्शन अमृत पिलावे,
 इन्द्र पूज्य जय वामा नन्द ॥ ज. ॥६॥

६५ श्री महावीर (चरित्र सूचि)

(शार्दूल विक्रीडितम्)

प्राणान्ता च्छयवनं सुरेन्द्र नमनं गर्भाप हारो जनिः ।
 देवाद्रौ स्नयनं च नाम करणं क्रीडा च शालोत्सवः ॥
 उद्वाहो गृहिता सुदेव विनयो, दानं च दीक्षोत्सवः ।
 दुःखं केवल-तीर्थकर्म च शिवं, श्री वीर संकीर्तनम् ॥

६६ श्री महावीर स्तवन (संस्कृत)

(राग—मिन्मोटी)

हे तीर्थ कृत् श्री भगवन् सततं नमाम्यहं त्वां “वलन”
सिद्धार्थ वश व्योम्नि, दिप्यत्मरीचि धामन्,

श्री त्रैलोक्य स्वामिन् ? सतत —१

कंदर्प कुंभि नाशे, महाकेशरिन् श्री वीर ?
सद् भारती भगवन् ?

सतत —२

पापेस्तु जानुदध्न भग्न च त भूजग ।
स्तब्ध प्रबोध कर्तृन् ?

सतत —३

दूर्मोह भृत्तमोघे स्मिन् विश्व विश्व मन्ये ।
विलसन् प्रकाश ज्योतिः ।

सतत —४

पश्याम्यह दशा त्वा, पूज्य ? स्मराम्यहं त्वा;
श्री वीर ? वीर ? सम्यक् ।

सतत —५

कलधौत कांति स्वामिन्? विनयावनम्र भृत्यः।
चारित्र दर्शनोहं। सततं.—६

६७ श्री महावीर स्वा० स्त० (मु० क्षत्रियकुण्ड)

(राग—सोरठ, ताल—त्रिताल)

वीर ! मेरी नैया को दे दो सहारा,
नहीं है कोई आधार ॥ टेर ॥

कर्म कीचड़ है गहरा भारी,
भोग पानी हय खारा ।

राग द्वेष नदी आश्रय नाली,
संसार जलधि अपारा ॥ वी० ॥१॥

दर्शन मस्तूल टूट गया है,
चारित्र पाल उडारा ।

अविरति भाव का पवन चलत है,

रात्रि प्रमाद अधारा ॥ वी० ॥२॥
ज्ञान के डाढ़े टेढ़े बने हैं,

गुरु मल्लाह - न धारा ।

गुरु आदेश लगर नहीं पाया,

जहाज पुराण असारा ॥ वी० ॥३॥

है चट्टान नोकपाय बीच में,

चार कपाय घड़िआला ।

आगम दिशा यत्र गुमाया, -

जिन आणा पटिआरा ॥ वी० ॥४॥

भय अत्रत सत्रा बध (२४५७) चलते,

सातम पूष अधारा ।

बीर निर्माण से बीरजी पाया, -

छत्रियकुंड मितारा ॥ वी० ॥५॥

संसार दरिया में है नैया,

(११६)

तूही तूही आधारा ।
चारित्र दर्शन गुण ही प्यारा,
कमल विनय जयकारा ॥ वी० ॥६॥

६८ महावीर स्वामी (क्षत्रियकुंड तीर्थ)
(राग—सोरंठी देशी, मारी नाड तुम्हारे हाथे)
मारुं नाव चड्युं तोफाने,
वीर संभारजो रे, मारुं. ॥८॥
कर्म कीचड़ भोग पानी खारां,
राग द्वेष नदी आश्रव नालां ।
भर्यो संसार समुद्र आ,
वीरता आपजो रे ॥ मारुं. ॥१॥
खोयुं आगम दिशायंत्र,
जिन आणा सुकान न तंत्र ।

नधी सुकानी तु गुरुजी,
 नाथ उगारजो रे ॥ मारुं ॥१॥
 कषाय भुन्ड ने करत भारी,
 नव नोरुषाय खडक नी धारी ।
 नावना चुरा थारो,
 नाथ वचावजो रे ॥ मारु ॥३॥
 तीव्र प्रमादनी आधी चढ़ी छे,
 हवा पण अविरतिनी उघड़ी छे ।
 भान भुल्यो भगवान,
 पंथ देखाडजो रे ॥ मारु ॥४॥
 तूयो छे वृष मय्यक् दर्शन,
 तूया ज्ञान हलेमाना टंड ।
 चारित्र मद् उडे छे,
 न्हारे आयजो रे ॥ मारु ॥५॥

उगणीश से सत्यासी वर्षे,
पोष वदिमां सातम दिवसे ।
क्षत्रियकुण्ड पति विनति आ,
अवधारजो रे ॥ मारुं ॥६॥
मुक्ति कमल विनय दिल धारी,
चारित्र पद सेवा स्वीकारी ।
ज्ञान न्याय सह दर्शन,
पार उतारजो रे ॥ मारुं ॥७॥

६६ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(मु० ब्राकर, ऋजुबालुका नदी तीर्थ)

(राग—आवी मूरति मोहनगारी, चिदानंद महावीर नारी)

मूरत हरदम दिल हरती है,
चिदानन्द वीर जिनन्द की ॥ टेर ॥

राग नहीं है, द्वेष नहीं है ।

अज्ञान काम मिथ्यात्व नहीं है,

केवल दर्शन नीकी ॥ म ॥ १ ॥

गई अनिरति, नहीं नींद रति ।

नहीं है शोक दुःख अरति,

जल हल ज्ञान की टीकी ॥ म् ॥ २ ॥

हास्य हटाया, भय भी कटाया ।

पाचो मिथ्य को दूर हटाया,

सुरत वीर्य स्वरूप की ॥ मू ॥ ३ ॥

कर्म काटकर, भये तीर्थकर ।

दोय अठार विनाशी जिनवर,

छायिक भाव दिनन्द की ॥ म् ॥ ४ ॥

अजुगलुसा, वीर पादुका ।

चार धनी समोसरन् भूमिका,

(१२०)

केवल कल्याणक की ॥ मू. ॥ ५ ॥
जिन पद लीनी, यात्रा कीनी ।
चारित्र दर्शन स्तवना कीनी,
प्रभु के चरण कमल की ॥ मू. ॥ ६ ॥

७० श्रीमहावीर स्वामी स्त० (मु० गुणायाजी)

(राग—खमाच, ताल—पंजाबी ठेका)

महावीर प्रभु मुख से यूँ फरमावे ॥ टेर ॥

गुणशील बन में वीर पधारे,
साधु समूह सोहावे ।

समवसरन में बारह परषदा,

वीर व्याख्यान सुणावे ॥ म. ॥ १ ॥

जीव अनादि कर्म संगत से,

चारों गति दुख पावे ।

चिद्ब्रह्म जीव को निज गुण प्राप्ति,
शाश्वत स्थान पहुँचाने ॥ म ॥२॥
निज गुण पाने को श्री प्रीति,
कर्म ग्रन्थी को जलावे ।
छोड़ दे माया ममता प्राणी !
ज्यू नीतराग कहाने ॥ म ॥३॥
वीर वचन को सुनके केई,
चारित्र, समकित पाये ।
इस उपदेश मे पुनीत भूमि,
जल मन्दिर निरचावे ॥ म ॥४॥
मूर्त मनहर वीर जिनद की,
भावे जन के मन भाये ।
चारित्र मेक दर्जन यात्रा,
मोह की लड़ को फटावे ॥ म ॥५॥

७१ श्रीमहावीर स्वामी स्त० (मु० पावापुरी)

(राग—आदिनाथ शत्रुंजय बुलाले मुंके)

प्रभु ! मुक्तिपुरी में बुलालो मुंके ॥ टेर ॥

तीर्थपति चौबीसवां श्री—

वर्धमान जिनंद जी ।

आपकी वर्दाश्त कीनी,

प्रेम से भय भंजनी ।

अब तो जिन ! अपना बनालो मुंके ॥ प्रभु. ॥१॥

भूमि तल में आप थे सुर,

कोड़ा कोड़ी साथ थे ।

मुख्य गणधर पाट मुक्त को,

किया सुपुर्द आप ने ।

इसी रीतिसे अब भी दिलादो मुंके ॥ प्रभु. ॥२॥

साथ ही सब लोह के प्रभु,

बगी चारों मोड़ में ।

भूमि छोड़ी है गदा बना ?

बोझ मंग रंग है ।

कहा बगल से भी मुनारी नरे ॥ प्रभु ॥ १॥

साथ ही सब लोह के प्रभु,

बगी चारों मोड़ में ।

भूमि छोड़ी है गदा बना ?

बोझ मंग रंग है ।

कहा बगल से भी मुनारी नरे ॥ प्रभु ॥ १॥

साथ ही सब लोह के प्रभु,

बगी चारों मोड़ में ।

भूमि छोड़ी है गदा बना ?

बोझ मंग रंग है ।

केवल ज्ञान स्वरूप मिलादो मुझे ॥ प्रभु. ॥५॥

इस रीति की भावना से,

केवली गौतम हुए ।

वीर भक्ति पाठ पढ़ते,

और शिव स्वामी हुए ।

इसी तौर का भाव दिलादो मुझे ॥ प्रभु. ॥६॥

बाल की अरदास सुनके,

कृपा दृष्टी कीजिये ।

ज्योति रूप जगाय के निज,

आत्म दर्शन दीजिये ।

स्वामी ! सिद्ध स्वरूपमें मिलालो मुझे ॥ प्र. ॥७॥

७२ महावीर (पावापुरी)

(राग—कधाली, मेरे मौला बुलाखे मदीने सुभे)

भेट्या पावापुरी, मनमोहनजी ? ॥ टेर ॥

दूर देशे, अमर कीर्ति,
जेहनी प्रसरी घणी ।तेह पुरीमा आगता तो,
भाग्यनी सीमा बनी, उमीओ मधुरी ॥मन ॥१॥विमल जलमा धरल मन्दिर,
सुधा काति दीपतु ।देवता महागिरनु त्या,
दिलडु' रहे चोट तु, वसि रे अधूरी, ॥मन ॥२॥भरिक भाउरु भावना थी,
गाय नीर गुण मजरी ।

आत्मनु' कन्याण साधे,

(१२६)

भाव बैरी संहरी, आठे कर्म चूरी, ॥मन॥ ३ ॥

धन्य दिन पल धन्य जीवन,

धन्य शांसि वासना ।

वीरनी ए वीर भूमि,

भेटतां वधता गया, मन आश पूरी ॥मन॥४॥

ओगणीशे छयासी, फागण

कृष्ण तेरस श्री करी ।

ज्ञान-न्याय उमेद साथे,

करी यात्रा अघहरी, दर्शन पाठ धुरी ॥मन॥५॥

७३ श्री महावीर स्वामी (मु० पावापुरी)

(राग—जिनराज नाम तेरा०)

महावीर को हो वंदन,

तन से, वचन से, मन से ॥ टेर ॥

(१२७)

चौरीसया जिनेश्वर, परमेष्टि नाथ ईश्वर ।
सिद्धार्थ के हो नदन, तन से० । महा० ॥१॥
पावापुरी के स्वामी, जिहा पाच धाम नामी ।
आनद केलि नदन, तन से० । महा० ॥२॥
स्तूप में, समोमरन में, महावीर के चरन हैं ।
निर्वाण धाम मडन, तन से० । महा० ॥३॥
महतान् कुमारी मन्दिर, जल बीच धाम सु दर ।
शाति करे ज्यू चदन, तन से० । महा० ॥४॥
जय हो अलख निरजन, दर्शन विशुद्ध अजन ।
श्री पावापुरी मडन, तन से० । महा० ॥५॥

७४ श्री तीर्थ भूमि (मु० वैभारगिरि, राजगृही)

(राग—हुमरी)

वैभागगिरि पर जानाजी,

(१२८)

मिथ्यात्व मोह हटाना जी ॥ ढ़ेर ॥

राजगृही की पांच पहाड़ी,

श्री वैभार बखानाजी ।

वीर जिनंदजी यहां समवसरे,

पांच हैं टूंक सोहानाजी ॥ १ ॥

पहेली टूंक में जिन पाटुका,

पांच तिसरी में मानाजी ।

धन्ना शालिभद्र की मूरति,

दुसरी में दिल ठानाजी ॥ २ ॥

चौथी टूंक में मुनिसुव्रत हैं,

और विभु वर्धमानाजी ।

पांचवी टूंक में गौतम मन्दिर,

गणधरों का निर्वानाजी ॥ ३ ॥

बीच में पुनीत भूमि में भी,

(१२६)

गणधर के निर्वानाजी ।
और अनेक मुनीश्वर के हैं,
शिवपुर प्राप्ति ठिकानाजी ॥ ४ ॥
संगत् उन्नीस मौ छयासी में,
चैत्री एकम का गानाजी ।
चारित्र सेरक दर्शन से है,
तीरथ शिव परवानाजी ॥ ५ ॥

७५ श्री तीर्थ भूमि (सु० राजगृही)

(राग—सारंग अथवा काफी)

बंदना, पंदना, बदना ।

जिनगज को सदा मेरी बंदना ॥ देर ॥

मुनिमुत्र के चार कल्याणक,

राजगृही गुण रजना ।

राजगृही में दो जिन मंदिर,
काटे मोह विटंबना ॥ जिन० ॥ १ ॥
विपुलाचल सिद्धा अइमंता,
श्री देवी का नंदना ।
उत्तर मुखी मुनि सुव्रत का,
मन्दिर है दुःख खंडना ॥ जिन० ॥ २ ॥
रतनाचल में उत्तर मुखी,
चउ जिन चर्ण में वंदना ।
शांति, पार्श्व, वसु, नेमि करत हैं,
पूजक कर्म निकंदना ॥ जिन० ॥ ३ ॥
उदय गिरि में पश्चिम मुखी,
पांच शिखरी अभिनंदना ।
श्यामल मूरत पादुका छै,
हरें मृत्यु की आक्रंदना ॥ जिन० ॥ ४ ॥

स्वर्ण गिरि में पूर्वाभिमुख,

अपम मूर्त को बदना ।

वैभार गिरि में पाच टुकें हैं,

बहुत भुवन गिरि भडना ॥ जिन० ॥ ५ ॥

तोड दी घना शालिभद्र ने,

भोग करम को फंदना ।

वीर के गणधर बने इस गिरि में,

शिखपुरी के मडना ॥ जिन० ॥ ६ ॥

मुनिसुत्रत गीर साधु हस्त है,

माया तृष्णा की स्पदना ।

चारित्र पद दर्शन यात्रा से,

गाम्त्रत शांति आवडना ॥ जिन० ॥ ७ ॥

७६ श्री महावीर स्तवन (पाचापुरी)

(राग—आगया है कर्म युग कुछ कर्म करना सीखजो)

मैं भया निर्भय जगत में,

वीर का शरणा लिया ॥ टेरे ॥

था अनादि काल से मैं, कर्म से बंधा हुआ ।

कर्म जाल को तोड़ने को, वीर का० ॥१॥

राग द्वेष औ क्रोध माया, लोभ ने पकड़ा मुझे ।

फंद में से छूटने को, वीर का० ॥२॥

भटकता अंजान मुसाफर, डाकूओं से फसा हुआ ।

शरण चाहे शूरका ज्यूं, वीर का० ॥३॥

राग द्वेष से पूर्ण देवको, मूढ़ होकर सेविया ।

कार्य सिद्धि ना हुई अब, वीर का० ॥४॥

वीतराग अलग निरंजन, कर्म गंजन ईश्वरा ।

श्री महावीर मिल गये हैं, वीर का० ॥५॥

(१३३)

पातापुरी ईश जिनवर, इन्द्र पूजित श्रीधरा ।
सत्य दरशन भाव फरसन, वीर का० ॥६॥

७७ महावीर (सु० कलकत्ता)

(राग—विमलाचल वासी मारा ब्रह्माला)

महावीर जिनेश्वर राजे, अनुपम दिवस गणो ।
सहु दिलड़ां आनदमा नाचे,

संधमा हरख घणो ॥ टेक ॥

शात कुलनो जल हल सूरज, सिद्धारथ नृप नन्द ।
त्रिशलाजी नो नानडियो प्रभु,

जन मन नयनानन्द । अ० ॥१॥

मूर्ति मनहर दीपे उज्ज्वल, शोभा नो नहीं पार ।
शातरसेथी पूरी निशदिन,

शिर मगल कर नार अ० ॥२॥

(१३४)

चौवीसमां तीर्थकर सोहे, धारक केवल ज्ञान ।
दर्शन दई भविजीवने तारे,

शासन ना सुल्तान । अ० ॥३॥

जेठ शुदि पांचम चोवीशसे, सत्तावन सन् वीर ।
ऋषभ शांति सह देव विसजे,

कलकत्ता महावीर । अ० ॥४॥

सकल संघ जिनना गुण गावे, दिल धरी ऐकतान ।
धीर वीर उपकारी जिशांदशुं

मागे अक्षय दान । अ० ॥५॥

वीरता आवो वीर विभुजी, चारित्र भाव सुहाय ।
अम हृदये वसो निशदिन जिन गुण,

दर्शन ज्ञान ने न्योय । अ० ॥६॥

७८ महावीर स्वामी स्तवन (कलकत्ता)

(राग— अहिंसा का ढका आलम में)

जय जय जगतास्क देव विभु,
महावीर प्रभु महावीर प्रभु ॥ टेरे ॥
जय तीर्थपति कल्याण करा,
सत् केवल ज्ञान विज्ञान धरा,
जग हित करा, दुःख निम्न हरा ॥ महा० ॥१॥
जय अचल अकल शिखरदल विमला,
जय अजर अमर अरूपी अमला ।
जय अगम निगम नय योग कला ॥ महा० ॥२॥
श्री वीरजी का दर्शन पाया,
महावीर मंडल ने गुण गाया ।
जय प्रशालानन्दन जिनराया ॥ महा० ॥३॥

७६ श्री महावीर स्तवन (मु० कलकत्ता)

(राग—ताल—त्रिताल)

सेवक होकर आया मैं, कुछ लेकर जाऊंगा ॥टेरा॥
त्रिशला मात दुलारे, जिसकी सेवा सुर धारे ।
पूर्व पुण्यसे मालिक पाया, प्रेम जमाऊंगा ॥से॥१॥
आणा शिर चढ़ाऊं, उपदेश जीवन में लाऊं ।
नाम रटूँ मैं हरदम दिलमें, जिनगुण गाऊंगा से. २
भवो भव आपकी सेवा. मांगूँ देवाधि देवा ।
आप चरण में अक्षय धन को, पाकर जाऊंगा ॥से॥३॥
श्री महावीर जिन मंडल, करे वंदन पूजन गायन ।
दर्शन पाया चारित्र ध्याया, खुशी मनाऊंगा ॥से॥४॥

८० श्रीमहावीरस्वामी स्त० (मु० कलकत्ता)

(राग—श्याम कल्याण)

खुशी मनाई प्रभु का दर्शन पाया ॥ टेरे ॥

चरम जिनंदा, सिद्धार्थ नंदा,

त्रिशला रानी का जाया ॥ खु० ॥१॥

ज्ञात सुधाकर, उल रस सागर,

वीर जिनेश्वर राया ॥ खु० ॥२॥

शशि सम काति, शमरस शाति,

देखत दिल उलमाया ॥ खु० ॥ ३ ॥

अष्टम जिनदा, शाति मुर्नदा,

मीन में ताज सजाया ॥ खु० ॥ ४ ॥

सप्रति काल की, मूरति नीकी,

वीर भक्ति मन भाया ॥ खु० ॥ ५ ॥

सब ने मिल कर, कीनी प्रतिष्ठा,

(१३८)

कलकत्ता वीर ध्याया ॥ खु० ॥ ६ ॥
वीर के सन में, ऋषि व्रत जिन में,
पांचम ज्येष्ठ बैठाया ॥ खु० ॥ ७ ॥
शांति उत्सव में, चारित्र दर्शन,
जय जय नाद बजाया ॥ खु० ॥ ८ ॥

८१ श्री महावीर स्वामी (कलकत्ता)

(राग—अमे जइने के शुं कान तारी माने)
अमे जइने के शुं वीर, तारी माने ॥ टेरे ॥
मुठी मारीने नीचो नमाव्यो,
ते दी हतो कोई भीनेवाने ॥ अमे० ॥ १॥
पंज्याने पाटले बैठो चड़ी ने,
एवो उछाछलो सौको माने ॥ अमे० ॥ २॥
वावो वनी ने फर्या करे छे,

(१३६)

॥ ॥ कै कै सभारे एकी ताने ॥ अमे० ॥३॥
चन्दन वाला करे बहु चाला,
॥ ॥ तने शोधे छे गामे शाने ॥ अमे० ॥४॥
आखुं जगत चकडोले चट्यु छे,
॥ ॥ मीठा वीणा शा तारा गाने ॥ अमे० ॥५॥
जिनभूवन मा प्रेमे पेर्यो,
॥ ॥ अलगो अमोयी रहे शाने ॥ अमे० ॥६॥
चारित्र दर्शन प्रीति पुराणी,
तुं तो हने सभारे शाने ॥ अमे० ॥७॥

८२ महावीर स्वामी

(राग—सुमरी)

प्रभु आप पधारो मुझ मदिराए ॥ टेर ॥
निनेक दीपक जग भग ज्योती,

(१४०)

ध्यान शशी पूरण कलीऐ ॥१॥

तप जप चौक पुराऊं शेरी,

सुमन भावना पाथरीऐ ॥२॥

शुद्धशील शणगार सजावी,

समकितनुं तिलक करिये ॥३॥

निगोद पियर वसमुं मान्युं,

विषम वाटने परिहरी ऐ ॥४॥

सासरुं संजमपुरमां शास्वत,

उज्वल धाममां संचरिये ॥५॥

धर्मराजनी महेर थइ छे,

वरखत वितावो शुं ? जरिए ॥६॥

ताला वेली लागी तुम्हारी,

कषाय चोकी विखरिये ॥७॥

जगत भगतनुं वैर अनादि,

(१४१)

लोक लाज थी ना डरिये ॥८॥

आत्मा भोक्ता निज गुण भोगी,

रग राग दो घड़ी करिये ॥९॥

हू विनाशी तुं अविनाशी,

दुनिधा टाली दिल ठरिये ॥१०॥

सत्ता गुण मिलानी सोह,

एक मेक थइ विचरिये ॥११॥

आत्मानो अक्षय रस प्रगटे,

शिर भुवननी सेजडिये ॥१२॥

चारित्र राज गुरु शामन माहीं,

दर्शन सुख निज मन्दिराए ॥१३॥

८३ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(राग—मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे)

मुझे वीर दरस की प्यास लगी ॥ टेरे ॥
देह में मिथ्यात्व धूप की, उष्णता व्यापी रही ।
और चार कषाय सिगड़ी, लपट भी आती रही ॥
अब शांति करन की चाह लगी ॥ मुझे० ॥१॥
राग द्वेष से युक्त जग में, देव देवी अनेक हैं ।
वीतराग बिना अवर को, ना भजुं यह टेक है ॥
वीतराग दशा की सुवास लगी ॥ मुझे० ॥२॥
जाप आपका दर्द काटे, अन्य को क्यों ध्याइये ।
आपके दर्शन फरस से, आत्म तृप्ती पाइये ॥
ज्ञान अमृतपान की आस लगी ॥ मुझे० ॥३॥
वीर दर्श को प्राप्त करके, भविक कर्मों को दहे ।
चंड कौशिक स्वर्ग पावे, चोर आत्म दशा लहे ॥

चन्दनमाला की भाव जलाल भगी ॥ मुझे० ॥४॥
 शात मुड़ा ध्यान गभीर, महावीर जिनद को ।
 इन्द्र चन्द्र प्रणाम करके, काटे भव मय फन्द को ॥
 स्वानुभव दर्शन की चिराग जगी ॥ मुझे० ॥५॥

८४ श्री जिनवर के चरणों में स्तवन

(राग—गांधी तो आज हिंद के, अहसान हो गये)

प्रभो ! चरन में आ खड़ा, तेरा भित्तारी हूँ । टेर
 चौराशी लाख गहंरा, भरा पड़ा अन्धरा ।
 उसी में मैं घुरा फिरा, उड़ा दुग्वारी हूँ ॥ प्र० ॥१॥
 अब आपको ही देखा, चिराग सा अनोखा ।
 जिनेंद्र के ही ध्यान में, मैं कर्मचारी हूँ ॥ प्र० ॥२॥
 तुमारे हैं अनते, आत्म के गुरा भते !
 अब मैं प्रभु के गुरा का, नया भित्तारी हूँ ॥ प्र० ॥३॥

(१४४)

अपार तेरी शक्ति, मेरी है अल्प भक्ति ।
तो भी मैं तेरे गान का, छोटा सितारी हूं ॥ प्र० ॥ ४ ॥
मुक्ति कमल की लहजत, चारित्र की मोहवत ।
दर्शनको दर्श दीजिये, आज्ञा विहारी हूं ॥ प्र० ॥ ५ ॥

८५ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(राग—निरखत वीर जिनंद, अंखियां सफल भई)

देखे वीर जिनन्द, अंखियां सफल भई ॥ टेर ॥

समो सरन में जिनजी राजे,

बारह पर्षदा मांहि विराजे ।

त्रिशलाजी के नंद ॥ अं० ॥ १ ॥

चौतीश अतिशय केवल नाणी,

जिनकी पैतीश गुणयुत बाणी ।

सुने सुर नर इंद्र ॥ अं० ॥ २ ॥

(१४५)

इंद्रभूति गौतम गणधारी,
पूछे चरणों में शिरधारी ।

टारे शका मुर्नाद ॥ अ० ॥ ३ ॥

रत्न चिंतामणि हाथ में आया,
मोहनी मूर्त से ललचाया ।

दिल में है आनन्द ॥ अ० ॥ ४ ॥

चारित्र दर्शन गुण का खजाना,
धीर का सत्रा रूप पहिचाना ।

उपशम रस का मन्द ॥ अ० ॥ ५ ॥

८६ श्री महावीर स्वामी स्तवन

(राग—विभास ताळ—प्रभात)

जिनंदा ! तोरे नैनों में क्या है तमाया ॥ देर ॥

राग नहीं है रग नहीं है,

(१४६)

तो भी लगा मम स्वासा ॥ जिनंदा० ॥१॥
काम विकार कटाक्ष से न्यारा,
करत है शांति प्रकाशा ॥ जिनंदा० ॥२॥
नैनां प्याली अमृत पीना,
तो भी रहा मैं प्यासा ॥ जिनंदा० ॥३॥
नैनां नैनां से मैत्री जमाकर,
पूरे भविक मन आशा ॥ जिनंदा० ॥४॥
चारित्र दर्शन ध्यान में लीना,
करत श्री चरनों में वासा ॥ जिनंदा० ॥५॥

८७ श्री महावीर स्तवन (सु० बामन बाड़ा)
(राग—राधे कृष्ण बोल मुख से, तेरा क्या लगेगा मोल)
'महावीर' बोल मुख से, तेरा दिव्य चक्षु खोल ॥ टेर ॥
बहुत पुण्य उपाया,

तब दुर्लभ नर भव पाया ।

मानु 'मुक्ति' का ही कोल ॥ तेरा० ॥ १ ॥

हैं शिव अमली चासा,

फर उद्यम जग तक आसा ।

आतम 'कमल' में अडोल ॥ तेरा० ॥ २ ॥

वीर जिनेश्वर पाया,

त्रिसला रानी का जाया ।

हरदम 'निय' भक्ति गोल ॥ तेरा० ॥ ३ ॥

यह काया है निनाशी,

आत्मा चिदुघन अविनाशी ।

धरले 'चारित्र' अमोल ॥ तेरा० ॥ ४ ॥

वाक्पटु बाढ़ के स्वामी,

भनले वीर जग में नामी ।

दर्शन का ही धात्रे दोल ॥ तेरा० ॥ ५ ॥

८८ महावीर स्वामी (कुल्पाक तीर्थ)

(राग—मथुरामां खेल खेली आव्या)

आवो आवो शिरताज ? अबोला शाने लहोछो ॥ ढेर
संसार त्यागी, बन्या बैरागी, पहेलां साध्युं निज काज
लीधी प्रतिज्ञा, कोई जाणे ना,

आंगणीऐ आव्या छो आज ॥ अ० १ ।

हूं दुःखियारी बाला तुम्हारी, वाकुला ल्योने महाराज
आंसुड़ा आव्यां हा वीर नाव्या,

ऐवो सुणी ने अवाज ॥ अ० २ ।

वीरे पधारी भीक्षा स्वीकारी, राखी वसुमती लाज ।
साध्वी पदमां आप्युं पलकमां,

चंदन बाला ने स्वराज ॥ अ० ३ ।

ऐवीज रीते, एवीज प्रीते, अमने बोलावोने राज ।

आपनी सामे निलखताने,

जाने करोछो नाराज ॥ अ० ४
 श्रीकुलपाकमा, माणेरु पाममा,
 हसती सूरत दीठी आज
 चारित्र दर्शन, ज्ञान न्यायामन,
 पाणी पहेला बाघी पाज ॥ अ० ५

८६ चदनवालानी वीर विनति

(राग—शामलियात्री करजो मारी महापरे)

श्री जिनरजो ? करजो मारी महापरे,
 तमे करुणा बगिने जेला आयजो रे ।
 नाथ नवीग मुदर्शना ना वीर रे,
 आ दीन दु खीनी दाद दयालु धारजो रे ।
 पधारो आप बहाला, पछी पाछा शुं ? चान्या ।
 रोये आ दीन बाला, रने बहू कालायाला ।

(१५०)

चंदनवाला नी अरदास,
विनति मानजो रे ॥ तमे० ॥ १ ॥
दधिवाहननी बेटड़ी, करमे अहीं आवी चड़ी ।
मूला ये कर्घो उत्पात, शिर बोड़ी बेडी जड़ी ।
फरी आवोने । महेर वसावो ने ॥
प्रभुछुं अनाथ नारी, तारा गुणमां रमनारी ।
श्राविका आ तमारी, प्रभु देजो ना विसारी ।
चारित्र दर्शननी सुणी अवाज,
आवो उगारजो रे ॥ तमे० ॥ २ ॥

६० महावीर को दिल की गुजारिश
(राग—शहीदो के खुंका असर देख लेना)

अब मुझे अपना बनाना पड़ेगा,
जैसे तैसे भी निभाना पड़ेगा ॥ टेर ॥

- तेरे शरण में आय खड़ा है,
 चणों का मेवक बनाना पड़ेगा ॥ अ० १
- राग द्वेष की बेड़ी पड़ी है,
 इनके बधन से छुड़ाना पड़ेगा ॥ अ० २
- चारो रूपाय की चूगी लगी है,
 उनको यहाँ से हटाना पड़ेगा ॥ अ० ३
- पाचो इन्द्रिय दुरमन खुफिया,
 इन में इन्तिफा लिखाना पड़ेगा ॥ अ० ४
- मन उचन ने कीनी उगात ।
 उनके भी जोम को तुड़ाना पड़ेगा ॥ अ० ५
- मोड़ बढ़ा दुश्मन सामूने खड़ा है,
 उसमें मेवक को बचाना पड़ेगा ॥ अ० ६
- नगरी चारित्र दर्शन देखत,
 मिदों का मागरिन् बनाना पड़ेगा ॥ अ० ७

६१ भाव धन्वतरीने विनति

(राग—कवाली, आगया है कर्मयुग कुङ्कुम)

हे प्रभो ! निर्भय हवे जो, नाड़ छे तुम हाथमां,
 तार जो हे बापजी आ, बाजी छे तुम हाथमां ॥ हे० १
 मोह मदिरा छाक चसकी, हा गुमावी चेतना,
 रोग रोमे रोम व्याप्यो, ते तपासो नाड़मां ॥ हे० २
 मान मुग्धर शिर फुट्युं, क्रोध फणीधर डंखता,
 चौंटी माया दूष्ट डाकण, सहु मल्युं छे साथमां ॥ हे०
 ताप मिथ्या दृष्टि चढ़तो, धम धमे छे जीव आ,
 तापगतिने शांत करवा, नाथ चांपो बाथमां ॥ हे० ४
 क्रूरतानी उलटी थी कम कमाटी छुटतां,
 नाथ दुःखमां तरफडुं छुं, छे मुं भाणो आत्मा ॥ हे०
 थाय छे शुं ? थाय छे शुं ! ते कय्युं कहेवाय ना,
 छे न शांति ज्यां वसुं त्यां, भूलता भव पाथमां ॥ हे०

दिन दुःखियाने उगारो, मूल कापो रोगना,
 भागद धन्यंतरीछो, हाथ पकडो हाथ मा ॥ हे० ७
 रोगहर चारित्र चिद्वन, ज्यां तमारो वाम त्या,
 नित्य दर्शन पाठ देता, लइ चलोने साधमा ॥ हे० ८

६२ महा वीरता

(गग—मौला कैसे पुताले मदीने मुझे)

अहो कर्म हण्ये महावीर शुरा । डेर ।
 घोर तप करमाल धारी, जमा बरगतर वीरता ॥
 माया, गभीर योद्धा, विन्न वादल वीरता ।
 जुझे एसी खरा, मुधीर शुरा, अहो० ॥१॥
 ध्यान तोप अमोव चापे, अहग दुर्घर दीपता ।
 योगी, जेता महानल, मोह दलने जीपता ॥
 मस्त लोम मरा, मुधीर मृग, अहो० ॥२॥

(१५४)

योग मुद्रा शांत निर्भय क्रोध मल्लने मारता ।
फेंकी, समता सुदर्शन, विश्व शांति प्रसारता ॥
सोहे वीर पूरा, सुधीर शुरा, अहो० ॥३॥

६३ देव श्रद्धा भजन

(राग—गजल)

प्रभु तारे शरण आव्यो,
अवरनी आश नवी चाहूँ ।
हवे तारो धरी हाथे,
अहोनिश ध्यान तुज धारूँ ॥१॥
अनादि काल थी भमतां,
महा भाग्ये रतन मलीयुं ।
हवे तो काचनी प्रीति,
तजी त्हारामां मन धरीयुं ॥२॥

क्षीरोदधि नीर पामी ने,
कहो केम कूपने खणीये ।
मल्यो सहकार रस पुरो,
कहो केम खाखरो भजीये ॥३॥
खरे पक्षी तजी आवल,
भजे छे कल्प वृत्ताने ।
कहो परतत्र देवोने,
तजी केम चाहु ना तुजने ॥४॥
रहे सानिध्यमा इन्द्र,
पछी शुं काम भूतो थी ।
खरे दारिद्र पण नासे,
चिंतामणी रत्न पासे थी ॥५॥
गुरु चारित्र पद मेरी,
रखुं वैराग्य भावे हूँ ।

(१५६)

अविचल सुख दर्शन नुं,
जिणंदजी एज याचुं छुं ॥६॥

६४ महावीर बालक्रीडा भजन

(राग—छोटा सा बलमा मोठे, आंगणे में)

छोटा सा राज कुमार,
दोस्तों से खेला खेले ।
त्रिसलाजी करती हंरदम प्यार,
अपनी गोद में लेले । छो० ॥१॥
इमली पर करे कोई मोज,
कोई झुला में झुले ।
इक दिन साँप को दिखकर बाल,
वहां से भागे भोले । छो० ॥२॥
उसी दम् वहां राजकुमार,

(१५७)

साथ को दूर उछाले ।
फिर आये मिलकर बच्चे यार,
सबके डर को टाले । छो० ॥३॥
चीहम्(स्थायी) खेला में एक नया यार,
मैं हारा यू बोले ।
राजकुमार को कथा में ठान,
बढ़ गया होले होले । छो० ॥४॥
अब उसके शिर पर राजकुमार,
अपनी मुक्री डोले ।
यो चित्कर छोटा होकर बाल,
अपना शिर टटोले । छो० ॥५॥
हमी वीरता का ले अभिमान,
सुरपति खुश हो डोले ।
“तुम ही हो सच्चे जग में वीर,”

(१५८)

कह कर जय जय बोले । छो० ॥६॥
तब से हुआ “श्री वीरजी” नाम,
मोह को मारे अकेले ।
चारित्र दर्शन खेला वीर का,
हो वीर वो खेले । छो० ॥७॥

६५ श्री महावीर स्तवन

(राग—उस्तादी कवाली—आ गया हे कर्म युग)

हे प्रभो ! क्यारी अमीनी, आंख भीनी राख जो ॥ टेढ़
बालपणमां मेरु गिरि पर, इन्द्र संशय संहरी ।
शंका शिचकनी विदारी, एह बल अम आपजो ॥ हे०
सर्व जीवने तारवाने, त्यागनी कम्मर कसी ।
नाथ तो तारी उगारी, दास दीनता काप जो ॥ हे०
बाकुला ग्रही सुपड़ामां, देती चन्दन बालीका ।

राजतारी हेत थी तो, मुज शिर कर स्थाप जो ॥ हे०
 इन्द्र ने उपदेशता जे, आत्मशक्ति छे खरी ।
 चडकौशिक ने उगार्यो, विश्व व्हारे आपजो ॥ हे०
 सगमरु सम पापी सामे, शी दशाहा एहनी ।
 एम मीनी आख करता, एह दृष्टि राखजो ॥ हे०
 ज्ञान केवल धाम सिद्धि, माधी प्रसुता पाथरी ।
 दास दर्शन पाठ आपी, छाट अमीनी छाट जो । हे०

६६ संगमकना उपसर्गो

(राग—शाव धरे शीदने शायो)

वीर जोण्डजी वीरता धारी, अचलपणे विचरे जगमा,
 इन्द्र ममामा इन्द्रज घेंठां, करे प्रशम्भा रक्षी सगमा,
 दाठा न काई धारज चारी,
 वीर जोण्ड ममां जगमा ॥ वीर० ॥१॥
 सुर्पा सगमरु ण्य विचायुं, इन्द्र वके जिमतिम सगमा,

देवो बेठा करे हाजीहा,

सरखो साथ मल्यो ठगमां ॥ वीर ॥२॥

कालामाथानो मानवी शु'छे, एह मुकाय शु' सुरचगमां
वीरना ढोंग ने करी उघाड़ो,

हुं आवु'भट-आ पगमां ॥ वीर० ॥३॥

आवी संगम करे उपसर्गो, दाटे वीरने धूल ढगमां;
कीड़ा डांस घीमेल बीछीथी,

देतो डंख रगेरंगमां ॥ वीर० ॥४॥

नोलीयो साप उंदर थइ करडे, उछाले हाथी खगमां;
हाथणी पिशाच वाघ बनावी,

देवे दुःख दल डग डगमां ॥ वीर० ॥५॥

मात तातनां रूप विकुर्वी, लोभवतो मन लगलगमां;
छावणी बांधी सैन्यना हाथे,

अग्नि जगावे प्रभु पगमां ॥ वीर० ॥६॥

फान करड़तां पंखी बनावी, वंटोलियो विरचे पगमां;
वायु अने घन चक्र बनावी,

घसड़ी ने फेके पगमां ॥ वीर० ॥७॥

(१६१)

सवार पाडो कहै जीएइ ने, निर्भयशा विचरो जगमा,
विमान विरची कहै तजो तप,

मोक्ष नथो ने चलो सगमा ॥ धीर० ॥८॥

छमास ठोपित द्रव्य करीने, गोचरी विघ्न करे जगमा,
सात वार जिन शूली चढावे,

दोरी तुटे तइतगमा ॥ धीर० ॥९॥

वधत्रधनना दुखो आपी, थाकी अते गयो सगमा,
इन्हे सगम दूर हकावी,

काढी मूक्यो सुर नगमा ॥ धीर ॥१०॥

एम अनेक सही उपसर्गो, सचरिया मुक्ति मगमा,
वार जीएइजी आपो अदलता,

दर्शपदनी धगधगमा ॥ धीर० ॥११॥

६७ भवभ्रमण भजन

(राग—हुँ भजन श्रीरा हरिनु सदा सु खेरे)

हुँ चरण चाहुँ जिननु सदा सु^० खे रे ।

चोराशी ना फेरा फरतां,

रभल्यो बहु संसारे । हुँ० ॥८॥

एकेन्द्रिमां निगोदमांहीं, अनन्ता युगो भम्यो ।

पृथ्वीपणे ने जलपणे,

संसार मांही हुँ भम्यो । हुँ० ॥९॥

अग्निपणे वायुपणे, बादर निगोदे आथड्यो ।

विकलेन्द्रिमां परवशपणे,

अहा हा प्रभु हुँ तरफड्यो । हुँ० ॥१०॥

टीच्यो मने कूट्यो मने, वींध्यो वली छेद्यो मने ।

एवा अनन्ता दुःख वेठी,

नाथ आव्यो तुम कने, । हुँ० ॥११॥

नारक अने तिर्यचमां, पीडा अहा में शु' सही ।

ते सर्व तो कथीं जाय ना,

जे आप जाणो छो सही । हुँ० ॥१२॥

(१६३)

कै पुण्यना उदय थकी, सुरधाममा हूँ सुर थयो।

चिन्तामणी नरजन्म पायी,

तेह पण हारी गयो । हूँ० ॥५॥

अति पुण्यना उदय थकी, अहो आज जिन घर तुं मल्यो

पार तु करनार सुणो,

चरणमा दर्शन दल्यो । हूँ० ॥६॥

६८ महावीर स्तवन

(राग—आबो आबो पामजी मुज मझिपा रे)

जगत में गीरजी उपकारी रे,

अष्टगुण समूह के धारी ॥८॥

गुण स्थानक श्रेणी प्रमाण रे,

मोह वारक ध्यान प्रधान रे ।

हुए शुद्ध पूरण भगवान् । जगत में० ॥९॥

श्री केवल ज्ञान अनन्तरे,
अनुपम दर्शन विलसन्तरे।

जिन्होंने किया कर्म का अंत । जगत में० ॥२॥

अव्याबाध सुख से नामीरे,
सम्यक् दायिक के स्वामी रे।

अक्षय स्थिति से आरामी । जगत में० ॥३॥

अनामी नहीं पुद्गलरागरे,
रस रूप दशों का त्यागरे ।

गंध फरस रहित वीतराग । जगत में० ॥४॥

अगुरु लघु का पद पायारे,
शुद्ध वीर्य स्वरूप की कायारे ।

अष्ट करम रहित जिनराया । जगत में० ॥५॥

अतएव श्री चिद्घन रूप रे,
मैंने पाया श्री जिन भूप रे ।

हुआ चारित्र दर्शन रूप । जगत में० ॥६॥

६६ महावीर शरण

(राम—बहालु वतन मने बहालु वतन)

प्यारुं शरण मने प्यारुं शरण ।

बहालु लागे वीर ! तारुं शरण ॥६॥

मात के पिता कोई न त्राता,

सगा रोके नहीं नरक गमन । प्या० ॥१॥

चाडी बजीफा, लक्ष्मी के सत्ता,

कोई रोके नहीं जन्म मरण । प्या० ॥ २॥

चारित्र फरमन, महावीर दर्शन,

सरे खरू छे तारु शरण । प्या० ॥३॥

१०० महावीर स्वामी स्तवन

(राग — शहीदों के खूँ का असर देख लेना)

ढूँढ़त ढूँढ़त आलम सारा,
नसीब से पाया दिदार तुम्हारा ॥टेरे॥
हरि हर ब्रह्मा बुद्धि निहारे,
तूँही जगत की जीवन धारा । ढूँँ ॥१॥
कोई रागी, कोई द्वेषी,
तुं वीतरागी निरागी सीतारा । ढूँँ ॥२॥
कोई कामी कोई लोभी,
तुंही अकामी नामी अणगारा । ढूँँ ॥३॥
कोई ओरों की आश करत हैं,
तुं ईशइन्द्रो से पूजित प्यारा । ढूँँ ॥४॥
कोई फसा है कर्म कसा है
तुं ही कर्मों से रहित उजियारा । ढूँँ ॥५॥

आप चरन में आय खड़ा हू,

अपना बनालो, सु मेवक प्यारा । दू० ॥६॥

चारित्र मागू दर्शन मागू,

तुं ही भवोभव देव हमारा । दू० ॥७॥

१०१ महावीर स्वामी (अष्टमदावाद)

(राग—नागार बेलीश्रो रोपाव)

तारा गुणो प्रगटाव, मारा निगुंण जीवनमा ।

तें वार्षिक दानज दीधु, नली निप्रनुं कामज कीधुं

एवु दानित्व उरतान ॥ मारा० ॥१॥

तें ममता माया छोडी, समारनी जालज तोडी ।

एओ त्याग जमान ॥ मारा० ॥२॥

तें कानें गीला बंठया, ने सगमना हु ग दीटा ।

एओ वीरता ने लाय ॥ मारा० ॥३॥

तप तरवारे संहार्या, तें भाव शत्रुने मार्या ।
 एवी शूरता ग्रंगटाव ॥ मारां ॥ ४ ॥
 तें परनी सहाय न लीधी, निज बलथो मुक्कि लीधी ।
 एवी मक्कमता वसाव ॥ मारां० ॥ ५ ॥
 श्री राज नगरना राणा, महावीर वीर वखाण्या ।
 एवी वीरता महकाव ॥ मारां० ॥ ६ ॥
 श्री मुक्कि कमलना वासी, विनय चारित्रना राशि ।
 दर्शन शांति फेलाव ॥ मारां० ॥ ७ ॥

१०२ महावीर स्वामी (मु० अहमदाबाद)
 (राग—मथुरा मां खेल खेली आव्या हो कहान ?)
 वीरतानो खेल खेली आव्या, हो नाथ महावीर राया ।
 आठे मल्लोने हंफाव्या, हो वीर मुक्कि चांद लाव्या ॥
 मेरु डगाव्यो इन्द्र नमाव्यो,

देवोने दिलमां भाव्या ॥ हो वीर० ॥
 साप उछाल्यो शिशुमय टाल्यो ।
 भल् भलाओ ने नमाव्या ॥ हो वीर० ॥१॥
 पाठक पढयो, पाम्यो अचम्यो ।
 गुरु स्याथी भणी आव्या ॥ हो वीर० ॥
 ममार छोडी टई धन कोडी ।
 जगे मेदान मा आव्या ॥ हो वीर० ॥२॥
 स्याय कापी मोह ने उत्थापी ।
 चारों कर्मो ने हफाव्या ॥ हो वीर० ॥
 केवल पामी ननी जग नामी ।
 धर्म ना स्तमो रोपाव्या ॥ हो वीर० ॥३॥
 आगियार पटित, शक्रा पिडम्वित ।
 सान माही गमभाव्या ॥ हो वीर० ॥
 गरी भगाव्या, कर्मो नमाव्या ।

(१७०)

आत्म स्वराज्य जमाव्या ॥ हो वीर० ॥ ४॥
अहमदाबाद मां, सरीला सादमां,
वीर जिनन्द जी मनाव्या ॥ हो वीर० ॥
मुक्ति महेलमां कमलनी सहेलमां ।
चारित्र दर्शन फाव्या ॥ हो वीर० ॥ ५ ॥

१०३ श्रीमहावीर स्वामी (मु० पानसर तीर्थ)

(राग—नागर बेलीओ रोपाव)

साची खेती कराव, मारी जीवन वाडीमां ।
माली तुं बनीने आव, उखर आतम वाडी आ ।
जे देव गुरु ने धर्म ओलखवा ते खरो मर्म ।
एवी शुद्धता वस्ताव ॥ मारी० ॥ १॥
महाव्रत कुवा पाताली, पच्चीस वाचो जलशाली ।
एवी वावडी ओ खोदाव ॥ मारी० ॥ २॥

(१७१)

आत्मानि भावना नारे, साथे ए भावना चारे ।
एना नीया रोपाय ॥ मारी० ॥३॥
मिस्ता मिस्त स्वभायो, वली दानादिकनो न्हायो ।
एना अकुरा प्रकटाव ॥ मारी० ॥४॥
लहके गुण वृद्धो कोडो, उली उत्तर गुणना छोडो ।
एनी पादहीओ न्हेकाय ॥ मारी० ॥५॥
रूपाला पची डोले 'माहन' 'माहन' एम बोले ।
एना फिल्लोल कराव ॥ मारी० ॥६॥
छो पानमर तीर्थना स्वामी, श्रीवीर तुं माली नामी ।
तागी महुली जमाय ॥ मारी० ॥७॥
श्री मुक्ति कमलो खीले, विनय चारीत्र रगीले ।
दर्शन परचो मडाव ॥ मारी० ॥८॥

(मि० स० १६८० शु० कार्तिक वदी १०)

(१७२)

१०४ श्री स्तवन

(राग—आशावरी)

आ भवजलथी तार, जिणंदजी० ॥ टेर ॥

अगम अगाध अगोचर जलथी, पूरो भयो संसार ।

पार पमाय न कलथी बलथी, शे पामूं निस्तार ॥१॥

आठ थाह छे आठ करमनां, फेलायो अंधकार ।

क्रोध मान मायाना रंगो, फोंचे न नजर लगार ॥२॥

करवत पूंछ डुं जडवां मोटां, सर्वना स्वाहाकार ।

राग द्वेष वे मोटा मगरो, दरियो डोले अपार ॥३॥

मारुं जीवन नाव अटूलुं, मोजानो पडे मार ।

गोथा खाय ने गावडानो डर, केम ते पामे पार ॥४॥

प्रभु मलियो वाहोश सुकानी, तेथी कयो पोकार ।

चारित्र दर्शन दीवा दांडी, ए साचो आधार ॥५॥

१०५ अठारह दोष मुक्त स्तवन

(राग—तु ही देव साचो मलियो)

जिनदेव मच्चा स्वामी,

मुझे नाथ मिला गुण धामीरे ॥६॥

करे सेवना आलम सारा, जिसमें है गुण अपारा ।

जिसमें नहीं दोष अठारा,

जो आत्म स्वरूप का कामीरे । जि० ॥१॥

सब दान लाम उपभोग, वीरज शक्ति और भोग ।

नहीं पाच निघन का योग,

जिसको अतराय न आमीरे । जि० ॥२॥

नहीं विमोह अरति बसना, नहीं दुगला की घटना ।

नहीं शोक नींद नहीं डरना,

जो मुक्ति पुगीरा गामीरे । जि० ॥३॥

नहीं राग द्वेष मित्र्यात, अज्ञान दशा उन्पात ।

(१७४)

नहीं अविरति की कोई बात,
नहीं काम कला की हरामीरे । जि० ॥४॥
यूँ दोष रहित जिन स्वामी, चारित्र पूरण अनामी ।
हरदम दर्शन की सलामी,
देवेन्द्र पूज्य शिव गामी रे । जि० ॥५॥

१०६ महावीर स्वामी प्रभुता

(राग—छे अगम अपार प्रभु तुम्हारी रचना)

छे अगम अपार, प्रभु तुम्हारी प्रभुता ॥ टेर ॥
केवल ज्ञान भोगी, अदभूत विश्वयोगी ।
सर्वज्ञ श्रीकार । प्रभु. ॥१॥
देखे जगत् चराचर, भावो यथार्थ सुन्दर ।
गुण पुंज उदार । प्रभु. ॥२॥
निज तत्त्व योग उलसे, अक्षय चारित्र विलसे ।

(१७५)

कर्यो कर्म सहार । प्रभु ॥३॥

सात्विकता अमाप, निज शक्ति रूप आप ।

अतराय न धार । प्रभु ॥४॥

मुक्ति कमल पराग, चारित्र्यपूर अथाग ।

दर्शन आधार । प्रभु ॥५॥

१०७ महावीर स्वामी

(राग—छे आ गम अपार प्रभु तुम्हारी रचना)

छे अगम अपार, प्रभु तुम्हारी प्रभुता ॥ टेर ॥

सर्वज्ञ सर्व दर्शी, चारित्र्य सुद्ध फरसी ।

बल योग श्रीकार । प्रभु ॥१॥

पूज्येज योग खाणी, पात्रीश गुण चाणी ।

सम भाव विचार । प्रभु ॥२॥

अनेक ने उधार्या, अनेक जीव तार्या ।

(१७६)

कयों कर्म संहार । प्रभु. ॥३॥

आत्म स्मरण योगी, निजतत्त्व स्वाद भोगी ।

चिद्वन भंडार । प्रभु. ॥४॥

तीर्थेश दोष मुक्त, परमात्म तेज युक्त ।

दर्शन आधार । प्रभु. ॥५॥

१०८ श्री महावीर स्तुति

सर हरर खललल ध्रंसग् छव छव,
नवण जल क्रोडां मणो ।

खण खणण तोड त्रोड तणक दन् दन्,
घोष कलशाओ तणो ॥

सुर संघ नाचे छणण छुम छुम,
रणण भुं भुं जय करो ।

ए वीर विभुनो जन्म उत्सव, जगतनुं मंगल करो ॥१॥
पिपि पीव् पुप् पूं तणण तिती,

(१७७)

भरण भु भ्रु वागता ।

धप ररण खल वल तडाक् धीं वी,

घडाक् धू ध्रू गाजता ॥

जय जय सुनन्दा जयउ भदा,

जयउ स्वतीश्र वल घरा ।

घोघीश जिननो टीचा उत्सव, शाति सदगुण पाथरोश ।

गम सारि वपनी तु तिणि तू,

वीण वागे सुस्वरे ।

धा धा नतक् धीं धपम धों धों,

देव वाजा अनुमरे ॥

स्याद्वाद नय निक्षेप भगी,

द्रव्य गुणनो सागरो ।

भीवीर वाणी धोध महुनो, कर्म मल दूरे करो ॥३॥

कड कडद् भूस् कडडाक् करी,

मङ्गीर भैरवचूरतो ।

धम धम अशाने खालतो,

जिग-भक्त पङ्खा पूरतो ॥

(१७८)

चारित्र्य दर्शन विघ्न भंजन,

धर्म रक्षा तत्परो ।

मणिभद्रजी कल्याण माला, संघ ने कंठे धरो ॥४॥

१०६ चौवीशी स्तवन

(राग—बनजारो, घनघटा भूवन रंग छाया, नवखंडा)

चौवीश जिणंद जयकारा

प्रभु अधम उद्धारण हारा ॥टेरा॥

वृष लच्छन वृषभ जिणंदा ।

जिन अजित अजित गुण वृन्दा ॥

संभव शम रस दातारा ।

अभिनन्दन अभिव्रत चारा ॥ चो० ॥१॥

सुमति सुमतिना दाता ।

प्रभु पद्म पद्म प्रद राता ॥

शुभ पार्श्व सुपार्श्व उदारा ।

प्रभु चन्द्र चन्द्र शितधारा ॥ चो० ॥२॥

सुविधि शिव सुविधि दाखी ।

(१७६)

शीतल शीतल पदे साखी ॥

श्रेयास श्रेय कर नारा ।

वासुपूज्य पूज्य तपचारा ॥ चो० ॥३॥

जिन विमल, विमलता सोहे ।

श्रीअनन्त अनन्त गुण मोहे ॥

जिन धर्म धर्म पति प्यारा ।

जिन शान्ति शान्ति करनारा ॥ चो० ॥४॥

कुशु कुस्थान निवारे ।

जिन अर भवअरति वारे ॥

जिन मल्लि मल्ल मद मारा ।

मुनि सुव्रत सुव्रत क्यारा, ॥ चो० ॥५॥

नमिनाथ नमे सुर इन्दा ।

शुभ नेम नेम शिवनन्दा ॥

पारस सम पार्श्व विचारा ।

महार्वार वीर प्रभु प्यारा ॥ चो० ॥६॥

चौवीस जिणद दिल हारा ।

षण्दन पूजन उपचारा ॥

चारित्र चरण आधारा ।

जिन दर्शन भव निस्तारा ॥ चो० ॥७॥

११० जिन प्रतिमा स्तवन

(राग—अहिंसा को डंका आलम में)

जिनप्रतिमा जिन समान ही है,
बतलाया श्रीजिनआगम में ।

उनकी तनमनसे भक्ति करो,
फर्माया श्रीजिनआगममें ॥ टेर ॥

हैं नाम स्थापना द्रव्य भाव,
ये सत्यचार चउ स्थानक में ।

दस सत्य भेद भी मान्य कहे,
दसवे ठाणे में ठाणेंग में ॥ जि० ॥१॥

नंदीश्वर के अंजन गिरि मे,
बावन गिरि मे, सिद्धालय में ।

ऋषभादिक शाश्वत बिंब चैत्य,
फर्माया चौथे ठाणेंग में ॥ जि० ॥२॥

(१८१)

चारण मुनि चैत्य को वदत हैं,
रुचक गिरि में नन्दोश्वर में ।
बीसवा शत नवें उद्देश में,
भगवती जी पाचवें आगम में ॥ जि० ॥३॥
अरिहंत चैत्य अरिहंत और,
साधु हैं रक्तक आत्म में ।
इनका भगवती दूमरे शत में,
चमरेंद्र ने गर्ण लिया मन में ॥ जि० ॥४॥
सत्रह भेदों से ज्ञाता में,
प्रतिमा पूजे श्री जिन घर में ।
करे नमुत्पुण यू त्रौपदी भी,
परकाश करे निज आत्म में ॥ जि० ॥५॥
पर तिर्थी प्रदित जिन चैत्य और,
शुद्ध प्रणाम का भोगन दे ।
आनंद का भी सम्यक्त्व पाठ,
अधिकार उग्रामक आगम में ॥ जि० ॥६॥
अरिहंत चैत्य को घंशन दो,

सोगन हो पर के वंदन में ।
 यूँ अंबड़-परिव्राजक बोले,
 व्रत में उववाइ उपागम में ॥ जि० ॥७॥
 माणावक में जिन दाढ़ा है,
 ऋषभादिक चारों शाश्वत हैं ।
 मणि पेढग मे जिन प्रतिमा हैं,
 रायपसेणी सुर साधन में ॥ जि० ॥८॥
 रायपसेणि में पुष्पमाल,
 शुभ चूरण वसन चढ़ावत हैं ।
 सूरियाभ करे सत्रह पूजा,
 है पाठ नमुद्धुण का अन्त में ॥ जि० ॥९॥
 जिन दाढ़ा हैं सभी सुर गण को,
 सन्मान्य अर्च्य सत्कार्य पने ।
 मंगलकारी कल्याणकरी,
 फरमाया जीव अभिगम में जि० ॥१०॥
 अब और पीछे क्या श्रेय सही ?
 क्या कृत्य नृमा शिव कारण है ?

इस भाति विजय ने प्रश्न किया,
सुरलोक में देव समागम में ॥ जि० ॥११॥

यू उत्तर है शत एक आठ,
जिन प्रतिमा हैं जिन दाढा हैं ।

ये श्रेय मोक्ष के कारण हैं,
दिसलाया जीव उपागम में ॥ जि० ॥१२॥

जिन भक्ति धर्म मन में धर के,
सुर पति जिनदाढा को लेकर ।

वर गन्ध माल्य में पूजत हैं,
यों जम्बू द्वीपकी आलम में ॥ जि० ॥१३॥

बिन रत्न लिये जिन घर जाना,
किन्तु अलकम से जाय नहीं ।

उन मुनि श्रावक को दंड दिया,
श्री कल्प छेद महा आगम में ॥ जि० ॥१४॥

रत्नी चित्र वाले उपाश्रय की,
माधु को मना दशकालिक में ।

अतएव ध्यान का हेतु है,

जिन प्रतिमा श्री जिन भुवन में जि० ॥१५॥
 मन्दिर कर्ता श्रमणोपासक,
 अच्युत सुर लोक को पाता है ।
 इत्यादि प्रतिमा पाठ बड़े,
 सुलभाये बत्तीस आगम में ॥जि० ॥१६॥
 है बहुत इशारा ज्ञानी को,
 उत्सूत्र कथन भव वर्धक है ।
 शाश्वत अणशाश्वत चैत्य नमें,
 मुनि दर्शन पाठ समागम मे ॥ जि० ॥१७॥

१११ श्री गौतम महावीर सम्वाद

(राग—लर्वांग केरी लाकड़िये, रामे सीता ने मार्या जो)
 पावापुरीमां विज्ञान घनना, गौतमे वाद मांड्या जो।
 तेने जीती चेलो करीने,
 वीरे-गणपति मान्या जो ॥ टेरे ॥
 वीर तुम्हारे बोलड़ीये में, सगा संबंधी छोड्या जो।

सगा संगधी छोड्या तो तुम्हें,
मुक्ति शु मन जोड्या जो । पा ॥१॥

वीर तुम्हारे बोलहीये में, जैनी दीक्षा लीधी जो ।
जैनी दीक्षा लीधी तो तमें,

मोननी वाट लीधी जो । पा ॥२॥

वीर तुम्हारे बोलहीये में, सगला भोग वाम्या जो ।
सगला भोग वाम्या तो तुम्हें,

मुक्ति सुन्दरी पाम्या जो । पा ॥३॥

वीर तुम्हारे बोलहीये में, चेला चाटी कीधा जो ।
चेला चाटी कीधा तो तुम्हें,

मुक्तिना रम पीधा जो । पा ॥४॥

वीर तुम्हारे बोलहीये में, चारित्र दर्जन ओढ्या जो ।
चारित्र दर्जन ओढ्या तो तुम्हें,

(१८६)

मोक्षपलंगे पोढ्या जो । पा. ॥५॥

शु० विक्रम सम्बत् १९६१ आश्विन अहमदाबाद

११२ श्री गौतम स्वामी

(राग—मै साचा बंदा तेरा—चाल)

हूँ सांचो शिष्य तमारो

प्रभुजी पड्डो लखी द्यो मारो ॥ टेरे ॥

लावुं लेखण लावुं शाही, लावुं कागल सारो ।

मुक्ति पुरीनुं राज्य लखावुं,

मुजरो मानो मारो रे । हूँ. ॥१॥

सगां संवन्धी सर्व तजी ने, आपनी सेवा कीधी ।

मात्र एटली आश पूरोने,

जींदगी सोंपी दीधी रे । हूँ. ॥२॥

अनार्य आर्द्रक पापी-अर्जुन माली उदायी राज ।

शुं कयुं गालक अईमते के,
 आप्यु शिखनुं राज रे। हू ॥३॥
 मरुती आदि नृप पुत्रो, थाय सात सो सिद्ध।
 तो शुं हूँ पण मुक्ति न पामुं,
 में गी भूलज कीध रे। हू ॥४॥
 गोगाले लेण्याने मुकी, आपने पीडा कीध।
 नीजपुर पारु गहोराये रेनती,
 तेने निजपद दीध रे। हू ॥५॥
 चन्दनमाला माकूल आपी, धरे मृत्तिनो ताज।
 श्रेणिक पत्नी त्रेणिश शिखपद,
 चौदमो नारी समान रे। हू ॥६॥
 अष्टापद पर हूँ जइ आव्यो, पदरमो अमृत।
 तेने पण तें मोक्षमा स्थाप्या,
 प्रभु न्याय अद्भुत रे। हू ॥७॥

(१८८)

गौतम गणधर महा मुनिवर, मोक्षतान लयलीन ।
शाँति पामे वीर वचन थी,
दर्शन पाठ अदोन रे । हूं. ॥८॥
वि० सं० १६८४ वसन्त पंचमी, कुल्पाक तीर्थ ।

११३ श्री गौतम स्वामी (सु. कुंडलपुर तीर्थ)
(राग—भैरवी, रामकली, आज अनुपम दिवाली)

गौतम नाम समरिये

सुमन जन ? गौतम नाम समरिये ॥ टेरे ॥

पृथ्वी सुत वसुभूति नंदन, गौतम कुल अव तरिये ।

इन्द्र भुति छे नाम मनोहर,

हइडे निश दिन धरिये । सुमन. ॥१॥

वीर वजीरजी ज्ञान सुकानी, षड् दर्शन रूप दरिये ।

अष्टापद जइ तापस तार्या,

अगुठ लब्धि उच्चरिये । सुमन ॥२॥

जन्म मुहायो गुञ्जरगामें, केवल पावा नगरीये ।

महसेन दीक्षा शिखा गिर पद,

उर वैभार सुगिरिये । सुमन ॥३॥

महा मन्त्रज नाम ए गौतम, जपता जलनिधि तरिये ।

नहीं दु ख मरणे मरिये कदापि,

नहीं दारीद्र थी डरिये । सुमन ॥४॥

गौतम नामे भयभीड हरिये, आत्म भाग सवरिये ।

कर्म जमरिये चान्ध्या छुटे,

उत्तम कुल अन्तरिये । सुमन ॥५॥

घन चङ्गावसा श्रीजिनमन्दिर, वदन पूजन करिये ।

गणघर मन्दिर गौतम चरणा,

देखी ने दिल ठरिये । सुमन ॥६॥

निज दीक्षा दिन यात्रा करता, निज आत्म उद्धारिये ।

चारित्र पद कज दर्शन साधी,
मुक्ति वागमां फरिये । सुमन. ॥७॥

११४ श्री गौतम स्वांमी (कुण्डलपुर वड़गांव)

(राग—भैरवी, अथवा—‘आज अनुपम दिवाली’)

गौतम नाम समरना,
निशदिन, गौतम नाम समरना ॥टेरा॥

वसुभूति नन्दन है गुण सुन्दर,
पृथ्वी मात कूंख रतना ।

इंद्रभूति श्री गौतम गोत्री,
मानों मंगल गहना ॥ निश. ॥१॥

वीरविभु के आदिम गणधर,
अमृत सम है वयणा ।

शासन नायक मन्त्री ध्यानी,

(१६१)

धारे तप जप चरणा ॥निश ॥२॥

अष्टापद की-यात्रा कीनी,

किया तापस तप भरना ।

अंगुष्ठ से अमृत पिलाया,

टारा तापस का भरना ॥निश ॥३॥

वीर निधु ने शिखपद पाया,

हुआ गौतम का ठहरना ।

‘वीर वीर’ यू नाम जाप से,

किया करमका भरना ॥ निश ॥४॥

केवली गौतम तत्त्व प्रकाशे,

इष्ट पूजित जस चरणा ।

स्वर्ण कमल में बैठे स्वामी,

क्या करू उनका वरणा ॥निश ॥५॥

श्री बहगाव में भव्य जिनालय,

जिन मूरत दिल हरना ।
 पास में स्थापित गौतम मंदिर,
 शोभित है गुरु चरणा ॥ निश. ॥६॥
 उन्नीस से छयासी फागुण की,
 तेरश कृष्ण की धरना ।
 चारित्र दर्शन प्रेम से पाया,
 गणधर चरणों का शरणां ॥ निश. ॥७॥

११५ श्री गौतमाष्टक (इंद्रवज्रा वृत्तम्)

(कर्ता—श्री देवानन्द सूरेश्वरजी महाराज)

जो विप्र गौतम गोत्र पृथ्वीमात के सुत रत्न हैं ।
 वसुभूति नंदन चौद विद्या युक्त वादि रत्न हैं ॥
 सुर असुर मानव राज पूजित इंद्रभूति शुभमना ।
 उन पूज्य गौतम स्वामीसे ही, सफल हो मन कामना १

श्री वद्धमान जिनेन्द्र से, त्रिपदी-पदो को सुन कर।
 क्षण में बनाई द्वादशांगी, बीज बुद्धि धार कर ॥
 था चौदह पूरन-ज्ञान इसमें, श्रुत सागर स्थापना।
 उन पूज्य० ॥ २ ॥

तीर्थेश श्री महावीर ने, कल्याण पथ हेतु कहा।
 श्री सूरि मन्त्र पवित्र गौतम, नाम से मशहूर रहा ॥
 सूरेश श्मका जाप करते हैं, हटाकर भ्रामणा।
 उन पूज्य० ॥ ३ ॥

जिनका पुनित ही नाम लेकर, जाय मुनिवर भ्रामरी।
 लावे सही जल पात्र अरर, ग्रथ प्रायुक्त गोचरी ॥
 पावे सदा सत्कार पद मन्मान, जय यश नामना।
 उन पूज्य० ॥ ४ ॥

गवि किरण के आधार में, जो अष्टापद गिरिपर गये।
 यहां चैन्य में चौबीस प्रभु को, भाव से वंदन किये ॥

जब वज्र स्वामी जीव के, मिथ्यात्व की की वामना ।

उन पूज्य० ॥ ५ ॥

उस तीर्थकी तल हट्टीमें ही, तपसी को प्रतिबोध कर ।

अक्षीण लब्धि से सभी को, क्षीरदान से तृप्त कर ॥

तप का कराया पारना, पाई जगत में नामना ।

उन पूज्य० ॥ ६ ॥

साधार्मिकों की भक्ति करना, धर्म यह प्रख्यात है ।

मय दक्षिणा ही भोज्य देना, न्याय भी विख्यात है ॥

अतएव तपसी को किया, केवल्य का पहिरामना ।

उन पूज्य० ॥ ७ ॥

श्री वर्धमान जिनेंद्र, निष्कर्मा बने मुक्ति गये ।

जिन्हें प्रधान ही मानकर, उस स्थान में स्थापित किये

देवेंद्र ने उत्सव किया, सुर वधु लेत्रे भामना ।

उन पूज्य० ॥ ८ ॥

(१६५)

त्रैलोक्य मंत्रज बीज है, परमेष्ठि का भी बीज है ।
विज्ञान ज्ञान का बीज है, जिनराज का भी बीज है ॥
जिनका शिष्यकर नाम जग में, दुःख का करे सामना ॥

उन पूज्य० ॥ ६ ॥

जो शुद्ध विनय विभेक से, इसको सदा प्रातः पढ़े ।
वो खरि देवानन्द दर्शन, भक्त सुख बल से बढ़े ॥
ध्याता सुगौतम नाम से, हो पुनित तन बानी मनां ।

उन पूज्य० ॥ १० ॥

११६ गणधर भजन

(राग—चाँतो सुणिण रे २ मधूरी जिनवाण)

अमें सुणशु रे, अमे सुणशु रे, मधूरी जिनवाण । ष्टेर
समो सरणमा बैठा प्रभुजी, उपदेशे श्रीकार ।
चोत्रिश अतिशय पात्रिश वाणी,

(१६६)

बली विलसे गुण वार ॥ म० ॥ १॥

वीरजी फेड़े इन्द्रभूतिना संशय शल्य ते वार ।
संशय हरी एक एक बनावे,

त्यां गणधर अगिआर ॥ म० ॥ २॥

अग्नि भूतिजी वायु भूतिजी, अव्यक्त सुधर्म धार ।
मंडित पुत्र मौर्य अकंपित,

अचल आता गुणकार ॥ म० ॥ ३॥

श्री मेतार्य तथा प्रभासा, गणपति ए निरधार ।
वास क्षेप थी स्थापे अनुज्ञा,

गणधर रचे अंग वार ॥ म० ॥ ४॥

वीर वचन थी वीरति प्रगटे, थाय सफल अवतार ।
चारित्र ज्ञान ने दर्शन साथी,

पामीशु भव पार ॥ म० ॥ ५॥

११७ 'कदम्ब गणधर (मु० कदम्बगिरी तीर्थ)

(राग—बहालु वतन मने बहालु वतन)

कदम्ब स्वामी ने करू नमन ॥ टेक ॥

मोट्टे तीरथ श्री शत्रुजय,

टूंक मनोहर आनन्दवन ॥ क० १ ॥

गई चौनीसी माहे प्रगट्या,

चौवीश जिनवर शाति सदन ॥ क० २ ॥

चौनीशमा श्री सम्प्रति नामे,

थया तीरथ पति धर्म रतन ॥ क० ३ ॥

तेहना गणधर कदम्ब स्वामी,

अहीं पधार्या अति प्रसन्न ॥ क० ४ ॥

एक करोड मुनिओं नी साथे,

अही धी पहुँच्या मिद्धि सुवन ॥ क० ५ ॥

कदम्बगिरि टू कनी ऊपर,

सुन्दर शोभे स्वामी चरन ॥ क० ६ ॥

भेद्या तीरथ जीवन पावन,

आज स्वीकार्युं स्वामी शरण ॥ क० ७ ॥

चारित्र सेवा दर्शन हेवा,

कदम्ब स्वामीनां कर्या कवन ॥ क० ७ ॥

११८ श्री सिद्ध स्तवन

(राग—मालकोश, प्रभु ? तुंहीं तुंहीं)

करो शुद्ध सोहं, शुद्ध सोहं सुद्ध सोहं जाप रे।

अभेद भावे आतमा, परमात्म रूप प्रकाश रे ॥ टेर।

शुद्ध केवल ज्ञान आतम, परम दर्शन मान रे।

सौख्य अव्यावाध निशिदिन, चरण क्षायिक जाण रे

स्थिति अक्षय शुद्ध आतम, अनामिपणुं धार रे।

अगुरु लघु गुण शुद्ध आतमा, पूर्ण वीर्य विचार रे २

आठ गुण समूह जगमा, शुद्ध आतम रूप रे ।
 कर्म बाध्या गुण आठे, ए विभाव विरूप रे ॥
 जे विभावे करे रमणता, ते समारी ठाम रे ।
 दूर करे पर भाव ने ते, शुद्ध आतमराम रे ॥
 श्री चारित्र ने ज्ञान शुद्धि, अन्य शुद्धि छेकरे ।
 एम आठे शुद्ध धाना, जीव मिद्ध छे एरु रे ।

११६ नवकार मंत्र

(राग—समाध, ताळ पञ्चाची ठेका)

महारीर प्रभु मुख से यूँ फरमाये. महा० ॥ टेरे
 चौटे पूरव का सार जगत में, पाच पद सोचतलाने १
 श्री अरिहता मिद्ध महता, सुरि वाचक मृनि भावे २
 दिल मे ध्यावे जिह्वा से गावे, देह से भक्ति मनावे ३
 मय में अटगट्ट अचरो धर के, जो परमेष्टीको ध्यावे ४

बो सिंह भंभीर भूत अनल भय, पशु विष रोग हटावे
 अधि उपाधि व्याधि विडारे, परमानंद पद पावे ६
 भवजल तारण सुखोंका साधन, मंत्र बड़ा ही कहावे ७
 चारित्र शुद्धि कारण जपते, दर्शन शिवफल लावे ८

१२० पंच परमेष्ठी स्तवन

(राग—जिनराज नाम तेरा)

परमेष्ठी ! नाम तेरा राखुं हमारे घट में ॥ टेरे ॥

जो चार कर्म दमता, पूरे अभिष्ट समता,

अरिहंत चर्ण नमता ॥ राखुं ० ॥१॥

आठों ही कर्म जारा, भगवंत सिद्ध प्यारा,

करुं ध्यान में तुमारा ॥ राखुं ० ॥२॥

नायक संघ भुवन में, आचार्य ध्याया मन में,

भुक्ता हूं श्री चरन में ॥ राखुं ० ॥३॥

(२०१)

सिद्धात में प्रणीत हो, पर को भणाने लीन हो,
 ॥ वाचक प्रभु ! अदीन हो ॥ राखु ० ॥४॥
 समी जीव के हो आता, मुनि धर्म ध्यान ध्याता,
 कृगति से शुद्ध आता ॥ राखु ० ॥५॥
 समी अद्वि सिद्धि धाम, नहीं ओर का ही काम,
 इन पाच को प्रणाम ॥ राखु ० ॥६॥
 परमेष्ठी पाच पद हैं चारित्र शिव धरत हैं,
 दर्शन मंगल करत हैं ॥ राखु ० ॥७॥

१२१ नवपद स्तवन

(राग — जिनराज नाम तेरा ०)

श्री मिष्टचक्र पद को, राखुं हमारे दिल में ॥ तेरा ॥
 अरिहत अंतरंगी, बारह गुणा के सगी ।
 श्री पूज्यतम सुगंगी ॥ राखुं ० ॥ १ ॥

गुण अष्ट युक्त रक्त, निज गुण में आसक्त ।

श्री सिद्ध कर्ममुक्त ॥ राखुं० ॥ २ ॥

छत्तीस गुणवान, सूरि कनक समान ।

है संघ के सुकान ॥ राखुं० ॥ ३ ॥

पच्चीस गुण पाठक, हैं नील वर्ण धारक ।

अज्ञान के निवारक ॥ राखुं० ॥ ४ ॥

सत्ताइस श्रीकार, गुण कृष्ण वर्ण धार ।

साधु दशा स्त्रीकार ॥ राखुं० ॥ ५ ॥

अड़सठ शुद्धि कारा, दर्शन सफेद धारा ।

शिव पंथ का मिनारा ॥ राखुं० ॥ ६ ॥

पच्चास और एक, गुण श्वेत रंगी नेक ।

है ज्ञान सद्विवेक ॥ राखुं० ॥ ७ ॥

वर श्वेत भेद सित्तर, जो दुष्ट कर्म नस्तर ।

चारित्र है अनुत्तर ॥ राखुं० ॥ ८ ॥

घाह भेद भारी, तप श्वेतवर्ण घारी ।

हे सौख्य मोक्षकारी ॥ राखुं० ॥ ६ ॥

यह मिद्वचक मटल, शिराह हे अत्रिकल ।

दर्शन विलास उज्ज्वल ॥ राखुं० ॥ १० ॥

१०२ आरती (राग—पल्लू)

जय जय आरती जग सुखकारी,

चौरीमे जिनगर उपकारी ॥ जय० ॥ १ ॥

पहिली आरती व्यग्रन मनाया,

चार गति का शरण चुकाया ॥ जय० ॥ २ ॥

दुमरी आरती जन्म से घारा,

गाना नरक में हुआ उजियाग ॥ जय० ॥ ३ ॥

तीसरी आरती दीक्षा लीनी,

आत्म भ्रमण की माधना मीनी ॥ जय० ॥ ४ ॥

(२०४)

चौथी आरती केवल पाया,
समवसरन में संघ बनाया ॥ जय० ॥५॥
पांचवीं आरती सिद्ध स्वरूपी,
हुए चिद्घन अमर अरूपी ॥ जय० ॥६॥
पांचों आरती प्रेम से कीजे,
पांचवीं गति दर्शन पाईजे ॥ जय० ॥७॥

१२३ श्री मंगल दीपक (राग—पीलू)
मंगल दीपक मंगल पाया,
आरती से शुभ आयु बढ़ाया ॥मं०॥१॥
भरत संगर श्रेणिकजी राया,
कुमारपाल ने मंगल गाया ॥मं०॥२॥
आरती करके पाप कटाया,
आनंद उत्सव खुशी मनाया ॥मं०॥३॥

(२०५)

धन्य दिवस घडी आज मनाया,
ज्यू दिवाली पर्व सुहाया ॥मं०॥४॥
चारित्रि मंगल हम घर पाया,
दर्शन मंगल सघ में सवाया ॥मं०॥५॥

१२४ मणिभद्र महावीर (मु० मगरवाडा)
(स्तुति स्रगधरा)

वीरेन्द्र स्वच्छमूर्ति जिनपति चरणा
ऽऽसेविना सिद्धिदाता ।

आरूढो दिव्यनागं मुनिपति विमला-
ऽऽनद सेना प्रणीण ।

शुद्धाम्यो दिव्यरूप सुरमणि-सुरभी-
कल्प—कुर्म. समान. ।

वीरं श्री मणिभद्र प्रदिशतु कुशलं

(२०६)

बुद्धिसिद्धी समृद्धिं ॥ १ ॥

छंद

गुण गातां गर हट्ट, अन्न धन कपड़ो आवे ।
गुण गातां गर हट्ट, प्रगट घर संपत्त पावे ॥१॥
गुण गातां गर हट्ट, राजमान भोज दिरावे ।
गुण गातां गर हट्ट, लोक सहु पूजा लावे ॥२॥
सुख कुशल आशा सफल, उदय कुशल एणी परे कहे
गुण माणिक ना गावतां, लाख लाख रीभां रहे ३।

१२५ श्री मणिभद्र वीर आरती-

(मु० मगरवाड़ा)

जय वीर ! जय वीर ! ॥ टेरे ॥

पहिली आरती मणिभद्रजी, हाथी असवारी ।
जैन धर्म की भंडी, फिरकावे सारी ॥ १ ॥

दूसरी आरती मणिभद्रजी, डमरो ध्वज राजे ।
 दो घमों के पोषक, क्रोड वदन गाजे ॥ २ ॥
 तीसरी आरती मणिभद्रजी, वर अकुश धारी ।
 तीनों रत्न की रत्ना, करे त्रिशूल धारी ॥ ३ ॥
 चौथी आरती मणिभद्रजी, भुवनपति देवा ।
 चारो सघ की सारे, सुख संपत्त सेना ॥ ४ ॥
 पाचवीं आरती मणिभद्रजी, दर्शन गुण पाया ।
 हेम विमल स्वर की, आणा दिल लाया ॥ ५ ॥

१२६ आदिनाथ (मु० भावनगर)

(राग—नागर बेलीओ रोषाव)

मने मुगटो पहेंराय, माता साथे लडने जा ।
 उतरासन्न पहेंराय, मने देरासर लईजा ॥ टेक ॥
 श्री आदीश्वर प्रभु प्यारा, परमेश्वर जय जयकारा ।

(२०८)

एनां दर्शन कराव, माता० ॥१॥

जेनी सेवामां रहीए, तो कदिएन दुःखी थईए ।

एनां चरणे नमाव, माता० ॥२॥

जे पूजक ने सुख आये, निज समो वड़ियो करी स्थापे

एनी पूजा कराव, माता० ॥३॥

जेने सेवे सुर राजा, नर नारी अने महाराजा ।

एनी आंगीओ रचाव, माता० ॥४॥

श्री भावनगर नगीना, चारित्र ने दर्शन लीना ।

एने धरमां लई आव, माता० ॥५॥

(वि० सं० गु० १६६१ चै० सु० १)

१२७ श्री पल्लविया पार्श्वनाथ (मु. पालनगर)

(राग—सदा संसारमां सुख दुःख सरखा मानी लइये)

पल्लविया पार्श्व प्रभु, तारी मूरति छे सुहानी ।

चनी अमृत स्यारी, पूण्य मारी आ मजानी । टिका
 प्रह्लादन राजा थयो, आवुनो परमार ।
 कनक प्रतीमा पार्वनी, देखी बन्यो गर्मार ॥
 धर्म नो द्वेष घारी, गाली नाखी ते सुनानी ।
 भयो भडार, तेखी चार, कीधी ऐ हेवानी । पल्ल-१
 कोढ़ थयो रोगी थयो, पाम्यो दुख अपार ।
 काढी मुक्यो राज्य थी, सहजो घे फटकार ॥
 गुणाने शीलघनल चरिने निजनी कहानी ।
 प्रतिमा पार्वनी करी पूज्य, गोले चरि जानी । पल्ल. २
 निम्ब भरायु आपनुं, मनमोहन दिदार ।
 भक्ति भावे पूजता, पाम्यो राज श्रीकार ॥
 घमायो धूर पालनपुर, मन्दिरमा मजानी ।
 प्रतिमा नायनी घरी ने, पूजे ते राजरानी । पल्ल. ३
 गम्भद् चार चुर्गातरे, कण्ठ्यरि ने हाथ ।

मोटो उत्सव मांडी ने, वेसाया जगनाथ ॥

पूजा रंग रोल, चढे मण सोल, सुपारी सदानी ।

दशे दिशमां, प्रभुनी आ, अमर कीर्ति गवाणी । पल्ल ४

मुक्तिनगर सुहामणु, मांहे कमल उद्यान ।

वच्ये विनयना चोकमां, चारित्र महल प्रधान ॥

विरोजो न्याय शाली ने मृगेन्द्र महित ध्यानी ।

सुदर्शन ज्ञान, न्याय प्रधान, वल्लभ ने उजाणी । पल्ल ५

संवत ओगणिसोवाणु १६६२ मां,

पोष दसम भृगु धूर ।

पार्श्व प्रभु ने प्रणमता, प्रगट्या पुण्य प्रचुर ॥

स्मरि श्री सोम हीरे, ऐ पुजी प्रतिमा पुरानी ।

चारित्र अभंग, दर्शन रंग, शिरे आण मानी । पल्ल. ६

१२८ श्री पचासरा पार्श्वनाथ (मु पाटण)

(राग—चितामणी पारवँ प्रभु अर्ज मारी आ स्वीकारो)

पचासरा पार्श्व प्रभु, दासनी अरदास धारो ।

दयालु देव देवा, दीन दुःखी ने उगारो ॥टेका॥

(सारंगी)

आठमो ने नी सालमा, वस्युं नगर धनमान ।

वनराजे करी स्थापना, हरि देवेन्द्र प्रमाण ॥

पूजे ननराज माता रूपसुन्दरी देव प्यारो ।

हरिशीलगुण कृपाथी, कयो आतम सुधारो ॥१॥

(नागरी)

लागव चौरासी भटकता, दीठा दुःख अपार ।

शरणे आव्यो आपने, पाव्यो प्रमोद प्रचार ॥

अनेकोने उगार्या, पास ? आपी हाथ तमारो ।

बचायो नाथ, आव्यो आज, तारक ? मारो पारो ॥२॥

(२१२)

(साखी)

पाटणमां भेटया प्रभु, भय भंजन सुखकार ।
चतुर कान्तिथी दीपता, पुण्य योग जयकार ॥
प्रभु मुक्ति कमलमां श्री चारित्र नो छे सितारों ।
सुदर्शन ज्ञान, न्याय प्रमाण, वल्लभ वात धारो ॥३॥

१२६ पार्श्वनाथ (सु० चारुप, तीर्थ)

(राग—कदमों की छाया में)

चारुप मंडन पास, चरणों मां करूं वंदना ॥टेक॥
वामा जाया, सुर हुलराया,
आपो ज्ञान प्रकाश रसीला नृप नंदना । चा. ॥१॥
आपाढ़ी थावके, त्रिंन भराच्युं,
वर्षोवीत्यां खास, मूर्ति छे मन रंजना । चा. ॥२॥
प्रकट प्रतापी, देव प्रभावी,

पुरो मननी आश, संसार मय भंजना । चा ॥३॥
 नेहे निहाली, ज्योने उगारी,
 सेवकनी अरदास, स्वीकारो मोह गंजना । चा ॥४॥
 दर्शन दाया, तुम गुण गाया,
 चारित्रनी सुवाम, श्हेकानो गुणमडना । चा ॥५॥

१३० पार्श्वनाथ (मु० सेरीसा तीर्थ)

(राग—नागर वेलीओ रोपाव)

मोहन पार्श्व कुमार, आच्यो तारे दरनार ।
 मारा दुःखडा निवार, मारो मुकरो स्वीकार । टिका ।
 चामा देवीना जाया, दिक् कुमरिए हुलरोया ।
 त्रणे भुवनना सिरदार, आच्यो० ॥१॥
 पुरुषा दानी मिरयाता, जग सार्यराह लगजाता ।
 मेरे साथ पर्यदा नार, आच्यो० ॥२॥

(२१५)

समकित सत्य जाण्युं, तारुं स्वरूप पिछाण्युं ।
 तारावचन रममा, तरंगोल थडने न्हाऊं । तारी ३
 ससार सुख अकारुं, ससारमा तुं तारुं ।
 मायाना फेंकी चश्मा, तारी समीपे आऊं । तारी. ४
 मोरैया पार्श्व दीठा, मान्या मोहनजी मीठा ।
 तु ही तुंही ए रटना, अहलेक हूँ मचाऊं । तारी ५
 मुक्ति रुमलना गधे, आत्मा चढ्यो तरंगे ।
 चारित्र ज्योति भटमां, दर्शन दिले जगावुं । तारी ६

१३२ श्री पार्श्वनाथ (सु० अहमदाबाद)

(राग—बहालु वतन मने बहालु वतन)

मन्या तारु प्रभु पार्श्व जिनद, ॥ टेक ॥
 चामा जाया, सुर हुलसाया,
 डन्वाकुमागर पूनम चन्द । म. ॥१॥

अमरी भमरी, नाटक नाचे,

नमे सुरासुर चोसठ इंद । म. ॥२॥

नगर शेठना, भव्य भुवनमां,

सुन्दर मूरत भरी आनन्द । म. ॥३॥

बाणु' वर्षे भेट्या हर्षे,

पूनम कार्तिकी नयना नंद । म. ॥४॥

चारित्र दर्शन, गुणानु' फरसन,

प्रभु भक्ति नो पीवो मकरंद । म. ॥५॥

१३३ अहिंसा—पद

अहिंसा का तत्व जगत भर में,

बतलाया वीर जिनेश्वर ने ।

सभी भारत जीव को विश्व प्रेम,

सिखलाया वीर जिनेश्वर ने ॥ टेक

१६६ गुरु स्तुति

(ॐ आनन्दघन-ए राह)

ॐ ह्रीं श्री गुरु देव समरीये,

श्री गुरु चारित्र विजय समरीये ।

धेलाशा सुत सुभगानंदा,

उपकेश वंशमां पूनम चन्दा ।

सुख कंदा गुरु दिलमां धरीये, ॐ ॥१॥

शांति सुधाकर विद्या सागर,

वीर वचन विकास दिवाकर ।

नमी अघहर अज्ञान ने हरीये, ॐ ॥२॥

विनय विजय गुरु शिष्य सनुरा,

दर्शन ज्ञान ने न्याय थी पूरा ।

तत्त्व चतुरा सद् गुण वरीये, ॐ ॥३॥

अशरण शरण ने पर उपकारी,

पतितउद्गारी महाव्रत धारी ।

दर्शन मंदन पूजन करीये, ॐ ॥४॥

श्री यशो विजय जैन गुरु कुल,

गुरुगुण गातुं बालक मडल ।

कर जोड़ी चरणे शिर धरीये, ॐ ॥५॥

१७० दीक्षा-उत्सव (मु० नदीश्वर द्वीप)

(राग—ध्रुव सौ मिन बाणी सुण्याय जायगी)

दीक्षा उत्सव करे, सुर सु दरी मली ॥ टेक ॥

भगवई अग, श्री ठाणग, जवू द्वीप साखे ।

तथा क्षाताग, जीव उपाग श्री जिनराज भारे ॥

रति कर रूप, नं दधि मुग्न अजन चार पारै ।

नदीश्वर नाम, जिनेश धाम, धावन चैत्य दारै ॥

माने पुण्य पली, सुर सु दरी मली ॥ दिक्षा० ॥१॥

प्रयचन पीठ, वपाय इंद, ६४४८ विराजे जिनैन्द्र ।

करे उत्सव, करोहो देव, पूर्व मा शक इद्र ॥

उत्तरनां दिश, ईशानी ईश, दक्षिणे चम्भरेन्द्र ।

बलि पश्चिम, दधि मुख सीम, लोकना पाल ईन्द्र ॥
 पूजे हली मली, सुर सुंदरी मली ॥ दीक्षा० ॥२॥
 नंदीश्वर द्वीप मांहे-शाश्वता, जिन-ज्यां विराजे ।
 वेणु व्रीणा ददामा दुंदुभि, भेरी अवाजे ॥
 तिणि तिणि तुं तिणि तिणि तुं सारंगी सुर राजे ।
 दगड़ त्रों त्रों, धप मप ध्रों, तंता धी, ढोल गाजे ॥
 छाजे शोक दली, सुर सुंदरी मली ॥ दीक्षा० ॥३॥
 पड़ज गंधार वृषभ, पंचम आलाप भरी ।
 ग्राम त्रण सात स्वरो, मूर्छना इकवीस धरी ॥
 मनोहर सुरपुरी, तान ने वितान धरी ।
 विनय शृंगार धरी, मुग्ध सुंदर रूप करी ॥
 देह कुसुम कली, सुर सुन्दरी मली ॥ दीक्षा ॥४॥
 इकशत आठ, देवो साथ देवी नाच नाचे ।
 रचे बत्रीश, नाटक गीत, घुंघरु धारी राचे ॥
 तता थै ताल रणि रणि चालू रचि भ्रमतार माचे ।
 सुदर्शन चंग, अभिनय रंग, अमरता साची जाचे ।
 नमे लली लली, सुर सुंदर मली ॥ दीक्षा० ॥५॥

गहुली संग्रह

१७१ वीर उपदेश (गहुली)

ध्याल प्रभु महावीर पधारे, राजगृही उद्यान ॥ १ ॥
 गणधर श्रुतधर ज्ञानी लब्धिधर तपसी ध्यानी ॥
 चौद महस मुनि लार पधारे, तीर्थपति भगवान् ॥
 परिपद् नारह आगे, महावीर प्रभु फरमाने ।
 दूल्भ नरमय पाया साधो, दानशील तप ध्यान ॥
 तीनों रत्नों धारो, चारों ही कषाय को टारो ।
 विरतिभाव दिल में ठाकर, अपना कर कल्याण ॥
 ग्रहरकाल परमाने, प्रभु के गुन दिल में ठाने ।
 चेलना रानी गहुली करके, करे गान ईकतान ॥
 केड़े चारित्र स्वीकारे, आयक के व्रत को धारें ।
 दर्शन पाकर ज्ञान बढ़ाकर, करें प्रभु का ध्यान ॥

१७२ गुरु दर्शन (गहुंली)

(राग—बलिहारी ३ जगनाथ)

बलिहारी ३ गुरुराज हो जाउं तोरी ।

गुणवंता गुरुजी, उपदेश दीजिएजी ॥

चौराशी फिरते आया, गुरुजीका दर्शन पाया ॥

मिला गुण स्तनोंका भंडारी । गुरुराज० ॥१॥

तारण तरण खेवैया, संसार पार करैया ।

मेरी नैया को लीजे तारी । गुरुराज० ॥२॥

सुखका तरीका दीजे, दुःखो का नाश कीजे ।

दिजे विज्ञान हमें भारी । गुरुराज० ॥३॥

धन्य धन्य तारक वानी, चारित्र ज्ञान प्रमानी ।

कीजे सफल अवतारी । गुरुराज० ॥४॥

१७३ दीक्षा (गद्दली)

(राग—नर्दा छेद्दु बांझित लुंगा)

मारु मन मोह्यु दीक्षामा, मने गमे न श्रीजे क्याय ।
 सह जोव थी मैत्री घरनी, नहीं जीभने छुटी करवी ।
 चोरी चारे परिहरनी रे, मने० ॥ १ ॥

आत्मानो गुण अमोगी, निर्मम नि सग अरोगी ।
 ए न्य वनुं हु योगी रे, मने० ॥ २ ॥

समार मुमाफिर खानु, जे आने तेने जगानु ।
 मुकृत माये रहंगानु रे, मने० ॥ ३ ॥

सहु माजन महाजन आत्रो, श्रीगुरु जी ने पधरायो ।
 करि गद्दली गुरुने उधावो रे, मने० ॥ ४ ॥

प्रगटे जो पुण्य अत्रा, अंतराय नुटे जो पूरा ।
 तो घनशुं माशु शूरा रे, मने० ॥ ५ ॥

छे तौर्य पतिनी बाणी, साची चारित्र रुमायी ।

ए ज्ञानी नी उजाणी रे, मने० ॥ ६ ॥

१७४ तपस्या (गहुंली)

(राग—केसरिया थाशुं प्रीत करीरे)

गुरु आशिष आपो, करिए तपस्या शुभ भावशुं ।
 जगदीश्वर अलवेला स्वामी, चारसोदिन तपतपिया
 खटमासी तप वीरे कीधुं, कर्म खपावन रसिया रे ॥
 धन्य धन्नो अणगार वखाणयो, शालिभद्र तपशूरा ।
 ठंढण ऋषिए अन्न न लीधुं, कर्या कर्मना चूरा रे ॥
 छट्ट छट्ट तपथी पारणुं कीधुं गणधर गौतमस्वामी
 अंगुठ वरसे अमृत लब्धि चरण नमुं शिर नामीरे ॥
 बारह वर्ष नां आंवेल करता, जगच्चंद्र सूरि राजा ।
 तपा तपा कही चरणों पूजे, उदेपुर महाराजा रे ॥
 ए बल आपो अमने गुरुजी, अमे पण तप आदरीए ।

आप चरण मां जीवन अर्पी, अणाहारी पद वरीएरे ॥
 वर्षी तप मुक्तामली मासी, वेमासी अट्टाई ।
 वर्धमान ओली आगम तप, करशुं शक्ति बडाई रे ॥
 होंग घणी तप आराधनमा, अतराय निर्भरिए ।
 चारित्र दर्शन ज्ञान न्यायथी, भटपट शिखर संचरिए ॥

१७५ जिनवाणी (प्रशसा गहली)

(राग—अथ तो जिनवाणी)

अब तो जिनवाणी सुनाई जायगी ॥ टेक ॥
 महान्त गुप्ति, पात्र समीति, धारी श्री गुरुजी ।
 जिनात्रा ठान, ज्यात्र समान, तारक श्री गुरुजी ॥
 गुणा सत्तामीश शात दमीश, ज्ञानी श्री गुरुजी ।
 हमारे पुण्य उदय मे, पधारे हैं गुरुजी ॥
 ज्ञान ध्यान की ज्योति जगाई जायगी ॥ अन्त ॥

जिनागमतत्व श्रावकव्रत, भेदो को सुनावें ।
 कहें नव तत्व, जीवन सत्य, सुधी राह बतावें ॥
 प्रभु गुरु धर्म के सत मर्म, पावन्दी जचावें ।
 अविरति धूप, मिथ्यात कूप, की पीड़ा मिटावे ॥
 सुन के जूठ बुद्धि हटाई जायगी ॥अव० ॥
 भरी नयचंग, सातो भंग, चउ निक्षेप ठानी ।
 प्रमा विचार, तत्व उदार, तर्क गमा प्रमानी ॥
 शिवं कर स्थान, देव विमान, देने वाली मानी ।
 चारित्रका रंग, ज्ञान अभंग, ऐसी वीर बानी ॥
 संघ मे बड़ी खुशी मनाई जायगी ॥अव० ॥

१७६ मिथ्यात्व त्याग

छोटी मोठी भगिनी हो मिथ्यात्वपना छोड़ दो
 प्रभु वीतरागी, गुरुजी त्यागी, जैन धरम रागीरे ।

ये तीन तत्व पाये ममर्थ, वे ही परम सत्य रे ॥
 कुगुरु प्रसग पापका अग, उसका न करो संगरे ।
 ममकित जावे डज्जत जावे, शील मलीन थावेरे ॥
 तावीज गन्डा धागा अडंगा, कहा से लगाया फदारे ।
 शीतला सातम, नाग की पाचम, तीजा पूजन भ्रमरे ॥
 कर्म प्रमावे सुख दुख पावे, वे भोग नहीं जावे रे ।
 दृढ़ समकीर्ति है शुभ नीति, लहे धन सुत रतिरे ॥
 मिथ्या प्रवृत्ति, नरक की दूति, उमको हणिजे जूत्तिरे
 चारित्रवानी ज्ञानी ने मानी, परम सुखों की खानीरे ॥

१७७ धर्म का आमंत्रण (नोता)

आथो सजनी आथो जी,

काई घरम करो सुखकार । सजनी आथोजी ।

त्रिन मन्दिर में आथोजी काई पूजो प्रभु हितकार

गुरु वंदन को आओ जी कांई स्वीकारो व्रतवार
 गुरु उपदेश में आओजी कांई अपना करलो सुधार
 सामायिकमें आओजी कांई रोको मनके विकार
 प्रतिक्रमण में आओ जी कांई काटो कर्म के तार
 देशवगाशी में आओजी कांई रोको आश्रवद्वार
 पौषधव्रत में आओजी कांई बनो भावी अनगार
 साहमिवात्सल्य में आओजी कांई बनो शासनसरदार
 चारित्र पुर में आओजी कांई खेलो आनंद बहार
 मोक्षमहल में आओ जी कांई ज्ञान का है दरबार

१७८ जिनागम (गहुंली)

जिनवाणी गुनखानी श्रुतको लाखों प्रणाम ॥टेर॥

आचारांग श्रीसूत्रकृतांग,
 श्रीस्थानांग श्रीसमवायांग ।

भगवती सूत्र सुनाम श्रुत० १

छठा ज्ञाताधर्मकथाग,
सातवा उपासक दशाग ।

श्री अतकृत दशाग ॥ श्रुत० २

अनुत्तर उपपाती दशाग,
प्रश्नव्याकरण है दशाग अग ।

श्री विपाक अभिराम, श्रुत० ३

बारगा दृष्टिवाद प्रमाण,
चौदह पूरन उसमें जान ॥

भक्तिक जीव विश्राम, श्रुत० ४

अंग ये बारह आगम मान,
तीन जगन का करें कल्याण ।

सारे सन ही काम, श्रुत० ५

गुरु में जो जिनानी पाये,

चारित्र भक्ति दिलमें लावे ॥

ज्ञानी ले शिव धाम, श्रुत० ६

१७६ गुरु आमंत्रण (गहुंली)

(राग—आवो यशोदाना कंत)

आवो आवो गुणी गुरुराज, विनति स्वीकारो रे।
करो पावन अमपुर आज, अमने सुधारो रे ॥
गयो काल अनादि अनंत, भमता संसारे रे।
नवि मलिया श्री गुरुजहाज, तो कोण तारे रे ॥
धन्य धन्य दिवस घड़ी आज, सुरतरु फलियो रे।
मारां सिध्यां सघलां काज, गुरुयोग मलियो रे ॥
जिनवाणी वदो महाराज, दूर्गति कापो रे।
अम मोह चीरी शिरताज, सन्मति आपो रे ॥
गुरु! आप कृपा जो होय, समकित वहीशुं रे।

धरी श्रावकना व्रत चार, प्रिये रहीशुं रे ॥
 अम पुण्य उदय जो थाय, चारित्र लईशुं रे ।
 गुरु आणा वही अम उर, शिगपुर जईशुं रे ॥
 पगले पगले रचु आज, गहुंली रुपाली रे ।
 गुरु चारित्र दर्शन ज्ञान, नीत्य दीमाली रे ॥

१८० गुरु प्रवेश (गहु ली)

(राग—घनाश्रो)

भले पधार्या गुन्नाज, गुणमन्ता गुरुजो ? भले०
 कमल विजय सूरि नाम मुहकन, मुणता चित्त उल्लास
 माधुमध महीत पधारी, पुनित करुं पुर आज
 धन्य भाग्य अम तुम दर्शन थी, सफल थया सहु काज
 अधिक अदभुत शक्ति वधज्यो, करवा अम उपकार
 जैन धर्म प्रतिपाल बनीने, कर्या अनेक उपकार

चारित्र पदने श्रावक प्रार्थे, कष्ट करो सहु ठार
ज्ञानानन्द थी गुरु ने विनवे, भले पधार्या शीरताज

१८१ विहार (गहुंली)

(राग—भेखरे उतारो राजा भरथरी)

विहार करी गुरुजाशो नहीं, करी वियोगी आ वारजी
आप वियोग न संघ सहे, नयणें आंसुनी धारजी ॥ वि
उपाश्रये जतां आवतां नर नारीना वृंद जी
उपदेशामृत पाइ ने, टाल्या कर्मना फंद जी ॥ वि
ज्ञान बोध रूड़ो आपता, हित शखामण साथ जी
ते हवे कोण सुणावशे, ज्ञानधर्मनी वातजी ॥ वि
धर्म स्नेह लगाड़ी ने, रागी कर्या जनमनजी
तरछोड़ी शुंचाल्या जशो, नहीं तजी ऐ भगवंतजी
दुखमां धीरज आपतां, सुखमां देता सुबोधजी

पाप करम थी वारता क्या करीये आप शोधजी ॥ त्रि
 जीतया परिमह पालना, अष्ट प्रवचन भातजी
 खाडा धार पर चालवुं, धन्य धन्य गुरु अमृतारजी
 चारित्र पद उंदन करी, गुण गाया गुरुराजजी
 ज्ञानानंद थी वीनवुं, फरी देज्यो धर्म लाभजी ॥ त्रि

१८२ विहार (गहुली)

(राग—धुलैया नगरमा पधार जो रे)

बहाला गुरु ? फरी फरी दर्शन आपजो रे—टेक
 जावुं जावुं तमे ना करो रे, अमदिल दुःख अपार रे ।
 धर्मलाभ कोण आपशे रे, कोण समज दातार रे ॥
 ज्ञान अमृत कोण छोट शे रे, हणशे कोण मिथ्यात रे ।
 न्याय नये भरी देशनारे, कोण सुखायशे पात रे
 आप होते अम सधमारे, मोटो हतो आधार रे

आप वियोगे संघमांरे, चाली छे आंसुनी धार रे
 आपे आनन्द करावियोरे, ते कदी नवि विसराय रे
 अमे सौवालक आपनां रे, करजो निश दिन सहायरे
 आप कृपानां सागरु रे, आज ते दीठा न, क्यांय रे
 कुटुम्ब मोहमां ना फस्या रे, तेशुं ? परना थाय रे
 कुशल मंगल मार्ग मां रे. ए अम अंतिम आशरे
 चारित्र दर्शन ज्ञाननीरे, रहेजो हैये सुवासरे

१८३ जीव भ्रमण

(नेमजीरे कारण बन मे चाली हो, राजुलियां)
 चौराशी लख योनी-फिरता आया,
 हो मुनिवरजी ? महाव्रतधारी गुरुवरजी ।
 नसीबसे हमें आज मिले गुरु राया, हो मुनि० १
 पृथ्वी और अपकाय में सातों लाख, हो मु०

आग वायु में फिटा सातों लाख, हो मुनि० २
 वनस्पति प्रत्येक में भी दश लाख, हो मुनि०
 साधारण में फिटा चौदह लाख, हो मु० ३
 निकलेन्द्रिय में दो दो और दो लाख, हो मु०
 नारक त्रियंभ देव में चारों लाख, हो मु० ४
 चौदह लाख मनुष्य योनि में गमाया, हो मु०
 ऐसे आठ कर्मों ने हमें फमाया, हो मु० ५
 इस चक्र में हमें बचाकर लीजें, हो मु०
 सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र्य दे दीजें, हो मु० ६
 श्री चारित्र्य गुरु का शरणां लीना, हो मु०
 मरक ज्ञानने जन्म सफल अब कीना, हो मु० ७

१८४ गुरु वंदन (गहुंली)

(राग—चालो सखी वंदन ने जइए—)

सखि चालो गुरु वंदन जइए,
वंदन करीने पावन थइए ॥टेरा॥
संसारनी जाल सवि तोड़ी,
मद माया ममता मोह मोड़ी ।
गुरु वयणे मन दइए जोड़ी ॥ सखि० ॥१॥
खट् द्रव्यनां भावो रूपालां,
वांचे सूत्र अरथ रढ़िआला ।
श्रवणें धरी थइए उजमालां ॥ सखि० ॥२॥
गुरुजी गुण ना भरीया दरीया,
पुराये भविकमन गागरियां ।
जे जीले ते भवजल तरीयां ॥ सखि० ॥३॥
शांत दांत त्यागी तपचारी,

(२८६)

सह ज्ञान ध्यान सयम धारी ।
गुरु गुण ने गाड़ए दिल धारी ॥ सखि० ॥४॥
गुरु गुण जपता नन्यो रागी,
परमार्थ मा प्रीति जागी ।
केवल ज्ञान स्वरूपनी रढ़ लागी ॥ सखि० ॥५॥

१८५ अग्यार अंग (गहुली)

(राग—छत्री कलक)

मारे शरण भलु गुरुराज, अमृत देशना भरे रे ।
चालो मखि ए सुणया काज, मधुरी देशना भरे रे ।
महावीर वाणी रमपूर, अमृत देशना भरे , रे ।
गणधरे गूथी भरपूर मधुरी देशना भरे रे ॥
त्रिपदीनो करे विस्तार, अमृत देशना भरे रे ।
शामन मिद्वान उदार, मधुरी देशना भरे रे ॥

अंग पहेलु' आचारांग, अमृत देशना भरे रे ।
 आचार कथन गुणधाम, मधुरी देशना भरे रे ॥
 सूत्रकृत बीजुं छे नाम, अमृत देशना भरे रे ।
 षट् दर्शनवाद आराम, मधुरी देशना भरे रे ॥
 स्थानांगजी सूत्र उदार, अमृत देशना भरे रे ।
 दश स्थान तणो अधिकार, मधुरी देशना भरे रे ॥
 समवायांग सूत्र श्रीकार, अमृत देशना भरे रे ।
 आगम हुन्डी निरधार, मधुरी देशना भरे रे ॥
 प्रश्न भगवती गोयम श्याम, अमृत देशना भरे रे ।
 प्रभु उत्तर द्ये अभिराम, मधुरी देशना भरे रे ॥
 ज्ञाता धर्म कथा चरित्र, अमृत देशना भरे रे ।
 वदे साधु आचार पवित्र, मधुरी देशना भरे रे ॥
 उपासक दशा सिद्धांत, अमृत देशना भरे रे ।
 दश श्रावक व्रत वृत्तांत, मधुरी देशना भरे रे ॥

अतकृतजी सूत्रमा जाण, अमृत देशना भरे रे ।
 मुनि मोक्ष ग्यानी पीछाण, मधुरी देशना भरे रे ॥
 अनुत्तरोपपाति प्रमाण, अमृत देशना भरे रे ।
 अनुत्तर निमान प्रयाण, मधुरी देशना भरे रे ॥
 प्रग्न व्याकरण मदबोध, अमृत देशना भरे रे ।
 आश्रय सजरनो धोध, मधुरी देशना भरे रे ॥
 निपाक अग्यारमुं सार, अमृत देशना भरे रे ।
 कर्म उदय नो अधिकार, मधुरी देशना भरे रे ॥
 अग अर्थ ते समकित मान, अमृत देशना भरे रे ।
 चारित्र-जान बहुमान, मधुरी देशना भरे रे ॥

१८६ नंदीसूत्र (गडुली)

(राग—उदना यदना यदना र)

माभलो सामलो सामलो रे,

वेनी ? नंदीजी सूत्र ने सांभलो ॥टे॥

गुरु सुणावे नवनव भावे,

संघ समूह आवी मलो रे ।

गुरुमुख हरखे अमृत वरसे,

मानो अणमोली ए पलो रे ॥ वे० ॥१॥

जिनवर आगम तत्त्व समागम,

सुणता पुण्य पासा ढलो रे ।

जगदानंदी सूत्र ए नंदी,

पांचे ज्ञानोनी छे कलोरे ॥ वे० ॥२॥

सुत्र सरवैयो पाप रवैयो,

समकीत नवनीतनो नलो रे ।

देववाचकनी रचना चकनी,

सूत्र पीस्तालीशमुं कलोरे ॥ वे० ॥३॥

ज्ञान ए मोती जगमग ज्योति,

ज्ञान पिना लोक आधलो रे ।

लखी लखानी भणी भणानी,

दर्द द्यो नरम्हने आगलो रे ॥ वे० ॥४॥

सुणी सुणानी ज्ञान बघावी,

तोडो करमनी सारुलो रे ।

गुरुनी ग्राणी गुणनी खाणी,

सुणी सुनिमा जड मलो रे ॥ वे० ॥५॥

ज्ञानने पामी पिन्ने ने वामी,

मोह मुमट दलने दलो रे ।

ज्ञाननी अरजी ज्ञानिनी मरजी,

मघ मरुल आगा फलो रे ॥ वे० ॥६॥

१८७ जिनागम (गहुंली)

(राग—तप कंरीए समता राखी घटमां)

मनमोह्युं जिनागम वाणीमांटेर
 स्याद्वादनो भयौं खजानो, वीरे दीधो ल्हाणीमां ।
 सप्तभंगी नी अदभूत रचना,
 चार निक्षेप प्रमाणीमां ॥ म० ॥१॥
 सातनयोनी अनुपम शैली, मीन रमे जेम पाणीमां ।
 आठकर्मनी अटपटी घटना,
 मोह विजयनी उजाणीमां ॥ म० ॥२॥
 सक्रिय अक्रिय रूपी अरूपी, पट् द्रव्योनी निशानीमां
 धर्म अधर्मनो पंथ प्रकाश्यो,
 शुभ कर्मोनो कमाणीमां ॥ म० ॥३॥
 जिन आज्ञा विणजीव संसारें, फरें बलद जेम घाणीमां
 विरति विनानुं मानव जीवन,

प्रेडफ्युं आ भूलघाणीमां ॥ म० ॥४॥
 पुण्य पुण्य प्रतापे लाघे, जैन धर्म गुण साणीमां ।
 चारित्र दर्शन ज्ञान न्याय थी,
 घरी मंत्री शिवराणीमा ॥ म० ॥५॥

१८८ गुरु चंपक फुल की (गहली)

(राग—वाजो वाग्या ने यली वागो)

घेनी ? चपो मोरियो आगणे,
 घेनी गीन्या ने अदभूत फूल ।
 गुरुजी ने घाटिये ॥१॥
 घेनी कोरा ने चापो मोरियो,
 घेनी कोरा ने गीन्या फूल । गु ॥२॥
 घेनी मर ने चापो मोरियो,
 घेनी गुरुजी गीन्या फूल गु ॥३॥

वेनी महक महकेछे शीलनी,

वेनी तप जप रंग अमूल । गु. ॥४॥

वेनी पांच महाव्रत पांदड़ी,

वेनी ध्यान पराग प्रफुल्ल । गु. ॥५॥

वेनी ए फुल मांहे मोहियुं,

वेनी भवि मनडुं बुलबुल । गु. ॥६॥

वेनी सोहागण करे गहुंली,

वेनी चारित्र ज्ञान सुमूल । गु. ॥७॥

१८६ अपनी दशा

(राग—महावीर स्वामी ? में क्या २ सुनाऊं)

गुरुजी हमारी ऐसी दशा है,

क्या २ सुनाऊं कैसी दशा है । टेरे

तप करने पर भूख सतावे,

गपसप में वो पास न आवे । गु. १

दान धरम में कुत्र न लगाना,
 नाटक फेल में लक्ष्मी गमाना । गु २
 साधर्मिक की भक्ति भूलाई,
 विधर्मोयो से प्रीत लगाई । गु ३
 प्रभु पूजा का समय न पावे,
 अस्त्रमारों में राज न आवे । गु ४
 मामाधिक में अलक्ष्य भारी,
 दिल्लगी करने में तैयारी । गु ५
 व्याख्यान वाणी में नीद निमारी,
 होय तमामा में दृशियारी । गु ६
 प्रतिक्रमण की क्या शरुं बाने,
 राग में आरी गनम होय राने । गु ७
 जप माना में मन न टीराने,
 मोक्षियन की माना दिल टाने । गु ८

मानते हैं हम सत जीव धर्म,
 पर ये होवें उलटे कर्म । गु. ६
 अंधी सृज ये हमसे हटाओ,
 गुरुजी ? ऐसी बूटी पिलाओ । गु. १०
 दिजिए चारित्र ज्ञान सीतारा,
 हमारे जीवन में हो उजियारा । गु. ११

१६० संसार गहुंली

(राग—गजल—कच्वाली)

कहे सखि ? क्यां गुरुवर छे,
 गुरु विण ना गमे मुझने ॥ टेर
 अनादि कालथी भमतां, गुरु त्यागी नहीं मलिया ।
 सखां दुःख नर्क निगोदे, दुःखो शा वर्णवुं तुझने ॥
 - वि फल इंद्रियनां दुःखो, हृदय ने कमकमावे छे ।

गति तीरैचनी पीडा, वितक शागा वित्या मुक्कने ॥
 अरे नरजन्म पण लाध्यो, निषय तृष्ण धनाशामा ।
 गयो एल्येज जन्मारो, व्यसन विगादमा मुक्कने ॥
 नयी गमतुं हने घर आ, नयी गमती हने माया ।
 मरीने रास थावानुं, शरीरना मोह शा मुक्कने ॥
 जगत् जजाल ने छोडी, धरु जिननामनी अहलेक ।
 मले गुरुजीं मने एमा, वमाये मोक्षमा मुक्कने ॥
 मले महाप्रीरसम योगी, अचल चारित्रि अरध्यानी ।
 गुरु ज्ञानी दहे पापो, गुरु एवा मले मुजने ॥

१६१ गीतारथ गुरु गहुली

(राग—प्राज्ञ दगी, आशा = पायनी मने मन्त्रोपारे)
 गुणी गुन्ताज्ञ गीतारथ मलीपारे,
 मागमनना मनोरथ फलिया ।

(३००)

गुरु पांच महाव्रत पालेरे,
पांचे आश्रवने नीत्य खालेरे ।
पांच सुमति ने अजुआले ॥ गुणी० ॥१॥
गुरु पांच आचारे पूरारे,
पांच इन्द्रिय दमता शूरारे ।
करे चार कषाय नां चूरा ॥ गुणी० ॥२॥
मन वाणी ने वश करता रे,
बहम चर्य गुणो ने धरता रे ।
अण्ये गुप्ति ने अनुसरता ॥ गुणी० ॥३॥
गुरु मधुकर जीवन गालेरे,
चार विकथा प्रमादने टाले रे ।
अड कर्मना पूंजने बाले ॥ गुणी० ॥४॥
गुरु जिन वाणी उपदेशे रे ।
जिन वरनी आणमां रहशे रे

ते जल्दी शिख सुख लेणे ॥ गुणी० ॥५॥

जे गुरु वरना गुण गाशे रे,
ते चारित्र सपद पाशे रे ।

वली ज्ञानी ननी शिख जाणे ॥ गुणी० ॥६॥

१६२ गुरुवंदन (गहुली ०७ गुण)

गुरुजी कृपा अमृतार, भनिया ॥ गु० ॥

नमो नमो अणगार, भनिया ॥ गु० ॥ टेर ॥

पाच महान्त सुधा धारे, पालें शुद्ध आचार ॥ भ०

रात्रि भोजन दोष को टारे, लावे शुद्ध आहार ॥ भ०

छैमाय जीवकी रक्षा करते, करते पर उपकार ॥ भ०

पाचो इन्द्रिय को रूम करके, पावे भव की पार ॥ भ०

संतोष पडिले हय चित्त शुद्धि, मयम शम आहार

योग त्रयी के दूषण टारें, सुधारे ममार ॥ भ० ॥६॥

परिषह उपसर्गों को सहतैं, सत्तावीश गुणधार ॥भ०
 ऐसे गुरु के चरन में आकर, करलो अपनी सुधार ॥
 गुरु वानीको दिलमें ठानो, काटो करम की कतार
 चारित्र दर्शन को अपना कर, वनों ज्ञान सरदार ॥भ०

१६३ गुरुकृपा महात्म्य (गहुंली)

(राग—श्री कहुँ कथनी मारी राज०)

गुरुजी दैवी सीतारा, राज गुरुजी सीतारा ।
 भव्य जीवोंका आधार, राज गुरुजी दैवीसीतारा टेर-
 गुरु है दीपक गुरु है नैया, गुरु है अमृत धारा ।
 गुरु के चर्ण में आय वसे जो, उसका होवे निस्तारा १
 गुरु से ज्ञान मिले जीवों को, गुरुसे होय सुधारा ।
 नगुरा इस संसार में मारे मारे फिरे बेचारा ॥२॥
 चौर भी हुए शासन नायक, श्री श्री प्रभव कुमारा ।

शय्यभर भी पूजित स्वामी, गुरु कृपा के द्वारा ॥३॥
 गुरु कृपा से मीचुक पाये, सप्रति नृप औतारा ।
 नलीनी गुल्म में डेव बना है, बाल अग्रती कुमार ॥
 ऐसी कृपा हो हम पर गुरुजी होने हमारा उद्धार ।
 चारित्र पाकर ज्ञानी हो हम पाये सुख अत्रिकारा ५

१६४ ज्ञान दीपक (गहुली)

(राग—नजर दू क महेर की पटक—फण्याली)

गुरुजी ! ज्ञान का दीपक, हमारे दिलमें चेताओ देर
 अछा अज्ञान ने घेरा, जगत सारे में अधेरा ।
 लगाने है 'ममी' फेरा, गुरुजी ज्योत ले आओ ॥गु०॥
 फिरे हम खेल में हरदम, इसी समार घानी में ।
 दटा पर ये ममी बघन, हमारे नैन खोलाओ ॥गु०॥
 कोह पने इट्ट इन्टायी, फोर्ड राजा बना रानी ।

संभी अज्ञानी हैं प्राणी, गुरु ? सद्ज्ञान बतलाओ ॥
 जहां अज्ञान है जालीम, वहां संसार है सालीम ।
 उसी अज्ञान को हरके, जीवन में ज्ञान प्रगटाओ ॥
 विजय चारित्र गुरुवरजी, यही है ज्ञानकी अरजी ।
 गुरु और शिष्य नाते से, ज्योति से ज्योत मिलाओ ॥

१६५ जयणा गहुंली

(राग—भूलो मत बलमा नेमि श्याम, है पूरव भव प्रीति)
 जयणा से कीजे सघरे काम यह जिन धर्म की रीति
 जीवों की दया धारो दिल में करो सब से प्रीति ॥
 मरना है सब को सच्ची बात, पर कौन जाने मीती ।
 पहिले से ये तो कर लो ठीक, पीछे न रहे भीति ॥
 ऐश आराम के काम में, जींदगानी बीती ।
 अवतो कुछ कर लो आतम, दूरो भवकी भीति

देव पूजन गुरुपूजा, तप जप की नीति ।
 स्वीकारो तब सब निरतिचार, दिलमें गुप्ति समीति
 चारित्र पदके शानी न कोई, देखो सारी चीति
 उनसे ही होगा आत्म फल्याण, सबी ज्ञानकी गीति ।

१६६ उपाश्रय में आमंत्रण (गहुली)

उपाश्रय में आना बहिन ? उपाश्रय में आना ।
 गुरुजी के गुण गाना बहिन ? उपाश्रय में आना ॥ देख
 वीर प्रभु ने फरमाया था, माल कोशका गाना ।
 गुरु उन आगम को सुनावे, अमृत रस पहिचाना ॥
 वीतरागी प्रभु गुरुजी त्यागी, केवली धर्म रखाना ।
 समकित पाने को तीनों को, अपने दिल ने ठाना ॥
 पाच अणु तब तीनों गुण तब, चारो जिज्ञा माना ।
 ये प्रार्थन श्रोतु के हैं, उन्हें ले घर आना ॥

पांच महाव्रत हैं साधु के, स्वीकारे जो स्यानां ।
 वे ही सिद्धशिला पर पावे, आनंद सुख ठिकानां ॥
 विजय मुक्तिगणि शासन राजा, विजय कमलसूरिरानां
 विनय विजय चारित्र विजयजी, ज्ञानने दिल में ठाना

१६७. उपाश्रय का आमंत्रण

गुरुजी पधार्या पोपालमां रे, आपेछे, अनुपम बोध रे
 सलुणी बेन ? वहेला उपाश्रये आवजो रे—
 स्नाने करी शुचि देहड़ीरे, समकित शुचि, मन मोदरे
 पहेरो साड़ी सुहामणीरे, शील साडी ने ओढरे
 धारो घरेणां हेमनां रे, तपजपना धरी ओपरे
 रुमजुम रुमजुम भांभरो रे, दूर करो निज क्रोधरे
 मोतिमाला कंठे ठवोरे, वाणीमां सत्य प्रमोद रे
 तिलक करो निज भालमां रे जिन आणा गुण धोधरे

बाल बचाने लाजो रे, विरतिपणुं धरो गोदरे
द्रव्यने भाग्यी शोभतारे, थाये दुख नो रोधरे
चारित्र गुरुने वांदतारे ज्ञाननो होय उग्रोतरे

१६८ धर्मप्रचार गहुंली

(राग—धन ० वह जग में नरनार, मिधाचल को०)

धन २ दर्शन विजय महाराज,
हमे जैन धर्म दिलाने वाले ।

धन २ ज्ञान विजय महाराज, हमें०

धन २ न्याय विजय महाराज, हमें०

तिन गुरुजी तशरिफ लाये, मेरठ जिला में आये
सुधारा आपने सारा समाज । हमें० १ ।

हमें जैन धर्म समझाया, इन्सान का फर्ज बताया
मिले है तकदीर से गुरु राज । हमें० २ ।

शास्त्रार्थ में पंडित आया, उसने भी शिर निवाया
सुनी जब आपकी ठोस अवाज । हमें ३ ।
नहीं करते गुरु ? उपकार, नहीं लेते हमें सुधार
नहीं हम होते ऐसे आज । हमें० ४ ।
श्री सुमति चारित्र मंडल, गुजारिश करें सारा संघ
रहो हरदम सेवक शिरताज । हमें० ५ ।

१६६ धर्मप्रचार गहुंली

(बजादे ३ बंसरी,)

हमारे हमारे हमारे गुरुजी ।

श्रीदर्शन श्रीज्ञान श्रीन्याय गुरुजी ॥

गुरुजी आप पधारे, उपदेश सुनाये प्यारे ॥

गंवार भी सुधारे । बुलंद जैन सीतारे ॥

सीतारे (३) गुरुजी ॥ श्री० १॥

आओ गुरुजी ! आओ । गिरते हमें उठाओ ॥

समार से बचाओ । नुक्से अजीब पिलाओ ॥

पिलाओ (३) गुरुजी ॥ श्री० २ ॥

गुरुचरण में ही सारा । सघने अरज गुजारा ॥

दिल में हो उजियारा । है आपका सहारा ॥

महारा (३) गुरुजी ॥ श्री० ३ ॥

—तिलोकचन्द्र जैन

श्री सुमति चारित्र मित्र मङ्गल सरभना यू० पी०

२०० घड़ी

(गजल)

अरे घड़ी ? कुल्ल तो रग्व शाति, धडाधड क्यों तू चलती है

रमिक व्याख्यान सुनने को जरा क्यों न ठहरती है

भरा ममार दुःखभारी, धर्म है सिर्फ सुख कारी

मिला गुरुराज उपकारी, जिहां सुख शांति मिलती है
 गुरु उपदेश देते है वचन शांति का कहते है
 सभी सुणनेकों आते हैं, जिहां घड़ी दो निकलती है
 नहीं कोई बात करते हैं, नहीं बालक भी रड़ते हैं
 अब शांति इसीपे है, कटा कट तूही करती है
 सभी चुप है धनी रंका, करे नहीं कोई भी शंका
 वजावत है तूही डंका, श्रवण में विधन करती है
 इंदर मीनीट लगती है, तुही घंटा से भगती है
 समय जल्दी खतम करते, शरम तू क्यों न रखती है
 सूये नंबर पे पड़ते हैं, गुरुजी मौन धरते हैं
 घड़ी को इससे कहते हैं तुही क्यों जल्दी चलती है
 सुधासम वाणी भरती है, प्रशम चारित्र धरती है
 विमल दर्शन को करती है, जरा सुन क्यों तू भगती है

२०१ चौमासी चौदश गहली

(राग—सुनो चडाजी ? सीमधर परमात्म पास जाजो)
 सुनो वेनीजी? धर्म करो मुखकारी चौमासा आया ।
 जो चौमासा में बोता है वारिश होते फल पाता है ॥
 उसे वर्ष पर्यन्त सुखशाता है ॥ सुनो० ॥१॥
 मिलती है जिन आगम वाणी ।
 और अर्थ निवेचन गुण खानी ॥
 गुरु वरमाने अमृत पानी ॥ सुनो० ॥२॥
 अपने दिल में समकित धरना ।
 प्रीति तप नियम व्रत करना ॥
 पहिनो अपने तन गील गहना ॥ सुनो० ॥३॥
 प्रभु पूजन गुरु वदन धारो ।
 पौमह सामायिक स्वीकारो ॥
 अपने नर जन्म को सुधारो ॥ सुनो० ॥४॥

आरंभ समारंभ को टारो ।
 हील मिल के ज्ञान कथा धारो ।
 करो दिल में विनय को उजियारो ॥ सुनो ० ॥ १५ ॥
 प्रभु गुरु चारित्र का गुण गाना ।
 गहुली कर के दिल बहलाना ॥
 शुद्ध ज्ञान से शिव भवन जाना ॥ सुनो ० ॥ १६ ॥

२०२ पर्युषण पर्व की गहुली
 (राग—भावी भावी पालजी सुजमलियारे)
 सुनो बेनी ? पर्व पजुसण आयारे,
 सब संघ के दिल में भाया ॥ सु० ॥
 हर साल में छै अट्टाईरे, बड़ी भादों की सुख दाईरे ।
 प्रभुने मुख से फरमाई । सुनो ० १
 देखेलौकिक पर्व उदाररे, जैन धर्म के पर्व श्री कार ।

- सत्र में संपच्छरी सीरदार । सुनो० २
 गुरुदेव को पंदन करना रे, जिनपाणी दिल में धरनारे
 पाच पायंदी को भिमरना । सुनो० ३
 समारंभ आरंभ को टारो रे, जीत मारी को भी निवारो रे
 और जीतदया दिल धारो । सुनो० ४
 नव साधर्मी का वच्छन्लरे, करो भक्ति पूजा नेशल्लरे
 हील मिलकर रहो निर्मन्ल । सुनो० ५
 नीत्य पडिकमणा दीय, पाखी रे,
 सबच्छरी सत्र के साखी रे
 मिच्छामि दुखड जीतराशि । सुनो० ६
 तप ग्रहम को आराधो रे, नाग केतु की समता साधो रे
 विमासे तप धर्म आराधो । सुनो० ७
 चेत्य परिपाटी में फिरनारे, प्रभु पूजा डच्छत्र करना रे
 जैन धर्म प्रभावना करना । सुनो० ८

पर्वके आराधक प्रानीरे, करे चारित्र ज्ञान कमानीरे ।
वने सिद्ध आनन्द की खानी । सुनो० ६

करे० ३ पर्युषणा दूसरा दिन की गहुंली

(राग—नजर दूंक महर की करके)

श्रावक के कृत्य ग्यारह हैं, करें सो सुख पावेगा
सालाना कृत्य कहें गुरुजी करें सो सुख पावेगा
चतुर्विध संघ की भक्ति, तथा साधर्मिकी भक्ति
त्रिविध यात्रा यथा शक्ति ॥ करें० १ ॥

अड्डाई चैत्य की यात्रा, रथोत्सव तीर्थ की यात्रा
वने यूं त्रिविधा यात्रा ॥ करें० २ ॥

अभिषेक शांति पाठों का, बढ़ारा देव द्रव्यों का
जिनालय में बड़ी पूजा ॥ करें० ३ ॥

गीतों से रात्रि को भक्ति, परम श्रुतज्ञान की भक्ति

उजमणा भी यथा शक्ति ॥ करें ४ ॥

तीरथ प्रभावना शुद्धि, जीवन आलोचना शुद्धि
चारित्र्य ज्ञान की वृद्धि ॥ करें ५ ॥

००४ पर्युपणा तीसरा दिन की गहुली

(राग—कुंवर कन्दैया वांमरिया कड़ा मूल आवे)

तुम प्यारे, वन्दु आओ, मय मध को खिमाओ ।

रागद्वेष की बात बनी हो उमके घर चले जाओ ॥

जाति नर की नर वृत्ति को, दिल में दूर हटाओ

दो हाथ मिलाओ ॥ प्यारे १ ॥

बैनी उदायी राजा ने, चंड प्रद्योते खिमाओ

अपराधों की माफ़ी देकर, धर्मी वन्दु बनाओ

राना भी बनाओ ॥ प्यारे २ ॥

मृगावनी चदनमानाने, समस्त स्वामणा मिना

संस्त पावन मोक्ष पत्रांगी, आनम मुख में लीना

क्षमापन लाओ ॥ प्यारे ३ ॥
 कुम्हार का मिच्छामि दुकडं, धोखावाजी हटाओ
 मनवाणी काया की शुद्धि, सबसे प्रेम जमाओ
 सीना से मिलाओ ॥ प्यारे ४ ॥
 चार कषाय को दूर हटा कर, मोक्षपूरी में जाओ
 चारित्र ज्ञान की सारंगी से, शास्वत रंग जमाओ
 आनंद बढ़ाओ ॥ प्यारे ५ ॥

२०५ व्या० १ कल्प सूत्र(बारसा)सूत्र

(राग—अहिंसा का डंका भारत में)

श्रीभद्र बाहु की बानी, श्री कल्पसूत्र गुण खानी ॥ ढेर
 भांदों में सूत्रजी लाओ, इज्जत से घर पधराओ ।
 श्रीसंघ को घर बुलाओ, घरमें आनंद मनाओ ॥
 जुलूस चढ़ा कर आओ, गुरुजी के पास ले आओ ।

श्रीरूप सूत्र बहराओ, पूजाभक्ति गुण गाओ -
 सुनो श्रुतिसे यह बानी, धूप दीपक गहुँली ठानी
 उपदेश करें गुरु जानी, नहीं कोई इस सूत्र के शानी
 नौवाचना नौवणजानो, दिन पाच में पुरी मानो
 श्रीधर्मसारथी मानो, शुरुका व्याख्यान पीछानो
 दूसरे में लक्ष्मी जी गाया, तीसरे में ज्योतिषी आया
 चौथे में जन्म सुनाया, श्रीगुरु जन्म दिल भाया
 पंचम में दीवा पाठ, छठे में मोक्ष की बात
 तेरीश प्रभु वर्णन सात, आठवें गुरुओं की पाठ
 नववच्छरी को अतिचंग सुने मूलपाठ डकरग
 दश चारित्र ग्रान तरंग, पावे शिवमाला संग

चारित्र दर्शन ज्ञान के स्वामी, तीर्थकर अवतार ॥१३

२०७ कल्पसूत्र, व्या० २.३ चौदह स्वप्न

(राग—पनिहारी)

प्रभु आगे जब गर्भ में सुनो बेनीजी,
देखें सुपन उदार बेनीजी ।

प्रभु माता उस रात को सु०
देखें चौद श्रीकार बेनीजी ॥१॥

हाथी पहिले सुपन में सु०
दुसरा वृषभ बखान बेनीजी ।

तीसरे स्वत्न में सिंह है सु०
चौथी लक्ष्मी मान बेनीजी ॥२॥

पांचवी माला फूल की सु०
छठा चांद श्रीकार बेनीजी ।

सातमे स्वप्न में सूर्य है सु०

आठवा छज उदार बेनीजी ॥३॥

नवमा चादी का कलश है सु०

दशमा पद्मसर जान बेनीजी ।

ग्यारना जलधि जानिए सु०

बारवा देव विमान बेनीजी ॥४॥

तेरना रत्नों का ढेर है सु०

चौदवा अग्नि प्रमान बेनीजी ।

जो देखे इन स्वप्नों को सु०

भाग्यवती वो जान बेनीजी ॥५॥

चौदह स्वप्न से जो हुवे सु०

वो बने श्री जिनर्चद बेनीजी ।

टांगे चारो संघ को सु०

बरते मुख आनन्द बेनीजी ॥६॥

चौदह रज्जुके लोक में सु०

सिद्ध बने शिरताज बेनीजी ।

चारित्र ज्ञान के योग से सु०

पावो शिवपुर राज बेनीजी ॥७॥

२०८ कल्पसूत्र, व्या० ३ स्वप्न (गहुंली)

(राग—कव्वाली, अरजी तो कर रहा हूँ, चाहे मानो०)

अव-स्वप्न पाठी बोले, सुपन का फल यूँ होगा । टेरे

बेयाली तीस स्वप्न, उनमें से चौद स्वप्न ।

पावे जिनेन्द्र माता, सुपन का० ॥१॥

होती के दांत चार, यूँ धर्म चार सार ।

तीरथ पति कहेगा, सुपन का. ॥२॥

दूसरा वृषभ स्याना, समकित का बोना जाना ।

प्रभुसे ही होना माना, सुपन का. ॥३॥

तीसरे में शेर देखा, प्रभु तीर्थ सिंह देखा ।

कामादि हाती भागे, सुपन का ॥४॥

चौथे सुपन में लक्ष्मी, प्रभु पावे तीर्थ लक्ष्मी ।

वापिक दान होगा, सुपन का ॥५॥

पुष्पों की माल खुशानो, प्रभुकी भी कीर्ति खुशानो ।

शिरो धार्यता भी होगी, सुपन का ॥६॥

छठे सुपन में चंद्र, यूँ स्वामी लोक चन्द्र ।

आनन्द कारी होगा, सुपन का ॥७॥

श्री सूर्यसे भोमडल, ध्वज से ही धर्म ध्वज दल ।

धारक जिनेन्द्र होगा, सुपन का ॥८॥

ज्यों स्वप्न में कलश है, प्रभु धर्म का कलश है ।

प्रभु लोक पूज्य होगा, सुपन का ॥९॥

ज्यों पद्म का सरोवर, यूँ ठाने पद्म मुखर ।

प्रभु पद्मचाही होगा, सुपन का ॥१०॥

ज्यों स्वप्न में रत्नाकर, प्रभु ज्ञान का रत्नाकर ।

प्रभु केवली बनेगा, सुपन का. ॥११॥

सु विमान वासी देव, प्रभु की करेंगे सेव ।

ज्यों है सुपन विमान, सुपन का. ॥१२॥

ज्यूं रत्न राशि हैगा, यूं रत्न गड़ बनेगा ।

प्रभुजी उपदेश देगा, सुपन का. ॥१३॥

निर्धूम अग्नि ज्वाला, भवि जीव शुद्धि माला ।

होगी प्रभु कृपा से, सुपन का. ॥१४॥

चौदह रज्जु के उपर, बने सिद्ध कर्म हर कर ।

यूं पुत्र ईश बनेगा, सुपन का. ॥१५॥

स्वप्नों का फल मिलेगा, सबका कल्याण होगा ।

चारित्र ज्ञान गात्रे, सुपन का. ॥१६॥

२०६ कल्प सूत्र वीर चरित्र (गहुली)

(राग—माढ वासु पूज्य विलासो च पाना वामी)

भद्रबाहु की बानी, गुणों की खानी वीरचरित्र प्रधान
 कल्प सूत्र में ठानी, हृदय में मानी, वीर चरित्र प्रधान
 क्षत्रिय कुंड में सिद्धार्थ नृप, त्रिशला रानी सयान
 चैत शुदि में तेरश रात को, उत्तरा फाल्गुनी जानरे
 हुआ जग उजियारा, हर्ष प्रचारा, प्रभुका जन्म पीछान
 छप्पन दिक् कुमरी करें मिलकर, सूतिका कर्म श्रीकार
 चौसठ इन्द्र करें जन्मोत्सव, मेरु शिखर अतिप्यार
 वहा मेरु ढिगाया, शक्रसमजाया, अग्रधियुत भगवान
 सिद्धार्थनृप हर्षित होकर, करे उत्सव मयदान
 चारत्रे दिन नीरादरी के नीच, भोजन और गुलतानरे
 शिशुको गोद करके, तारिफ करके, नाम रखवा वर्धमान
 आमल की कीड़ा में सुरमे, पाये पदनी वीर

लेखशाला में पंडित के भी, संशय टारे गंभीररे
 बड़ी इज्जत पावे, व्याकरण बनावे, पंडित करे सन्मान
 वर्धमान श्री श्रमण व श्रमणे भगवन् श्रीमहावीर
 तीनों नाम, प्रभुका भ्राता, नंदी वर्धन धीरे रे
 सुदर्शना जीजी, चाचा सुपासजी, पत्नी यशोदा मान
 सिद्धार्थ श्रेयांस यशस्वी, ये पिता के नाम
 त्रिशला पियकारिणी विदेहा, ये माता के नामरे
 प्रियदर्शनापुत्री, जसवती नाती, दोशो नाम बखान
 माता पिताजी स्वर्ग गये तब, करें सचित्त परिमाण
 दोय साल तक भ्रात आग्रहसे, त्यागी गृही वर्धमान
 लोकांतिक आत्रे, प्रार्थना सुनावे, बनो शासन सुलतान
 प्रभूजी वार्षिक दान को देकर, आये ज्ञात उद्यान
 दीक्षा लेकर श्रमण बनें जब, हुआ मनका ज्ञान रे
 चारित्र उदारा जयजय कारा चरण में भुके ज्ञान

२१० कल्पसूत्र व्या० ६ महावीर तप,

(राग—पीलु, चेतन शुद्ध दशा श्रृणाहारी)

तप की जय हो तप की विजय हो,

तप धारी प्रभु वीर की जय हो ।

चारह साल छैं मास व पट्टह,

दिन तरु छत्रस्थ कल मनाया ॥

उप सर्गों को सहते प्रभु ने,

तप और ध्यान से काल नितया ॥ त० ॥ १ ॥

छैमासी तप और छैं मासी,

पाच दिन रुस दूमरा माना ।

चौमासी नौ त्रिमासी दो,

दोमासी छैं त्रत पहिचाना ॥ त० ॥ २ ॥

देड़ मास तक त्रत दुगारा,

मास ग्वमण गारह स्वीकारे ।

पक्ष क्षपण तप कीने वहंततर,
अट्टम तप भी बारह धारे ॥ त० ॥३॥
भद्र प्रतिमा वेला तप की,
महा भद्रा भी चार व्रतो की ।
सर्व तो भद्र प्रतिमा साधे,
वीर प्रभु दश दिन के व्रतो की ॥ त० ॥४॥
दो सौ उन्तीस बेले कीने,
दीक्षा का दिन एक मिलाया ।
तिन सो उनपचास दिवस ही,
वीर विभुने आहार पाया ॥ त० ॥५॥
छदमस्थ वीर ने यूँ तप करके,
जगत् को तपका पाठ पढ़ाया ।
यह तप करो कल्याण जगत् का,
चारित्र ज्ञान को अतिसुखदाया ॥ त० ॥६॥

२११ कल्पसूत्र व्या० ६ गणधरदीक्षा (गहुली)

(राग—भूलो मत बलमानेमि श्याम, पूरव भवकी प्रीति)

अजुवाली मे कर निहार, केवली वीरजी प्यारे
एकादशी के प्रातःकाल, महसेन बन में पधारे
समोसरन जना बीच, बैठे वीर जी प्यारे
पाना पुरी के उद्यान, आवे लोगों सारे
उमी समय सोमोल विप्र के घर ब्राह्मण सारे
मिलकर करे बहा यज्ञ, पंडित बहुत पधारे
शुरु में इंद्र भूति विप्र, पांच सौ शिष्य हैं लारे
आए प्रभुजी के पास, जो अमिमान के मारे
सर्वत्र नाम से करके देय, वहां शास्त्रार्थ उचारे
मुनजर वेदों का सच्चा अर्थ, मन की गंका बिडारे
गौतम स्वामी पाकर ज्ञान वीर की दीक्षा स्वीकारे

प्रभु से सुने श्री त्रिपदी सूत्र पांच सो शिष्य भी लारे
गौतम बनाये बारह अंग, गणधर पदवी धारे
अब अग्निभूति वायुभूत व्यक्त सुधर्म पधारे
मंडित मौर्य पुत्र अकंप, अचल भ्रात पधारे
मैतारज विज्ञ प्रभास, आकर संशय टारें
दीक्षा स्वीकारे प्रभु के पास, त्रिपदी सूत्र विचारे
ग्यारह ये गण धार, चौआली सौ लारे
तीर्थ स्थापन करें वीर, सब जय नाद उचारे
चारित्र दर्शन ज्ञान, न्याय को भव्य स्वीकारे

२१२ कल्पसूत्र व्या. ६ वीरमोक्ष अधिकार

(राग—श्री श्री सुमति जिनंद जय हो)

श्री महावीर शासन की जय हो ।

वीर की जय हो, संघ की जय हो,

जय जिनवाणी रग जय हो । टेर ।।
 तीर्थ प्रतिष्ठा वीर ने कीनी,
 ठाने चारो संघ, जय हो ।
 तीर्थंकर पद तीस वरस तरु,
 जग उपकार करद, जय हो ॥ श्री १
 इन्द्रभृति गौतम आदि धे,
 साधु चौदह हजार, जय हो ।
 श्रमणी चढनवाला आदि,
 थी छत्तिस हजार, जय हो ॥ श्री २
 एरु लाख शम्भ आदि श्रामक,
 और उनसठ हजार, जय हो ।
 रेनती आदि श्रामिका तीन लाख,
 और टागह हजार, जय हो ॥ श्री ३
 मात्र मौ माधु केवल घानी,

चौद सौ श्रमणी संघ, जय हो ।
तेरह सौ मुनि अवधि ज्ञानी,
चारसौ वादी वृन्द, जय हो ॥ श्री. ४
पांच सो मन पर्यव को धारे,
श्रुत केवली शत तीन, जय हो ।
अनुत्तर में गये आठसों साधु,
शिव विश्रान्ति अदीन, जह हो ॥ श्री. ५
सातसों वैक्त्रिय लब्धि धारें,
खोला मोक्ष प्रयाण, जय हो ।
मोक्ष का चौथी साल से प्रारंभ,
तीन पुरुष तक मान, जय हो ॥ श्री. ६
पावापुरी में प्रभुजी पधारे,
हस्तिपाल नृप शाल, जय हो ।
यहां अंतिम चौमासा ठाना,

उम्र वहाँतर साल, जय हो ॥ श्री ७
 दीपाली की रात के अत में,
 नक्षत्र स्वाति प्रमाण, जय हो ।
 छद् तपस्वी प्रभु फरमावे,
 अंतिम सूत्र प्रधान, जय हो । श्री ८
 इन्द्र ने प्रभु से प्रार्थना कीनी,
 आयु बढ़ा दो नाथ, जय हो ।
 प्रभुजी ने निर्णय फरमाया,
 नहीं होवे वह बात, जय हो ॥ श्री ९ -
 सुरज सगौरव सिद्धि में,
 मोच पधारें गीर, जय हो ।
 जन्म मरण फिमाद हटाकर,
 निद्र शुद्ध बने वीर, जय हो ॥ श्री. १०
 द्रव्य उपोत किया नृपोने,

दीपावली प्रकाश, जय हो ।
 देव ने निर्वाणोत्सव कीना,
 नंदीश्वर भी खास, जय हो ॥श्री. ११
 गोतम स्वामी ने भावना भाकर,
 पाया केवल ज्ञान, जय हो ।
 चारित्र ज्ञान कल्याणक उत्सव,
 करे सुर सुरी बहुमान, जय हो ॥ श्री १२

२१३ कल्पसूत्र व्या० ७ जिनचरित्र गहुंली

(राग—केसरियां थांशुं प्रीति करीरे)

श्री भद्रबाहुजी, तैवीश प्रभुकी कहें वांचना ॥ टेक
 तेवीसवें तीर्थकर हुए, पार्श्व प्रभुजी प्यारे ।
 अश्वसेन नृप वामारानी, उनके ये दुलारे रे ॥
 शहर बनारस में प्रभुजी के, चार कल्याणक ठाना

सम्मेत गिरिमे मोक्ष पधारं, बने शिवपुरी के रानारे
 अरिष्ठनेमि यदुवृत्तचंद्रा, चानीरा व अरिहत
 समुद्र नृप शिवादे रानी, पुत्र हुए ब्रह्म बतरे
 दो कल्याणक शौरिपुर में, तीन हुए उज्जयत
 राजेमती को मोक्ष में ठाकर, करें कर्मों का अतरे
 वीश प्रभु के मोक्ष समय का, अतरकाल बताया
 सप्त प्रभु का चौथा आरामें, उत्तरकाल जताया रे
 तीसरा आरा के आखीर में, हुए प्रथम जिननाथ
 नाभि-मरुदेवी के नदन, त्रिनिता पुरी के नाथरे
 अष्टमदेव, पहिला नृप, पहिला-साधु, आध जिणद
 पहिला तीर्थंकर मुरपूजित, काटे कर्मका फंद रे
 अष्टापद से मोक्ष पधारें, मादि आनताकाल ।
 मागर स्रोटा स्रोति स्त्रीव ही, अष्टम गीरका कालरे
 जिन अधिहार यहा तक ठाना,

यह सप्तम व्याख्यान ।
वक्ता श्रोता पात्रे आनंद, चारित्र्य दर्शन ज्ञानरे ॥

२१४ व्या० ७ नेमव्याह प्रार्थना गहुंली

(राग—पनिहारी)

गोपी कहे श्री नेमजी सुनो देवरजी ।

व्याह करो मन रंग देवरजी ॥

मात पिता को खुश करो ॥ सु० ॥

उत्सव हुए अतिचंग दे० ॥१॥

लाओ गोरी भामिनी सु० कामकला का सार दे०

पत्नी तुम्हारे भाई को सु० हैं बत्तीस हजार दे०

एक कन्यासे व्याह करो सु० नहीं है बोज की बात दे०

रक्षण भी ना कर सको सु० तो बैठा है आत, दे०

व्याह पत्नी पुत्रादि से सु० कूछ

गृही ऋषभ शान्ति हुए सु० तीर्थंकर भगवान दे०
 पुत्रपाले सुप्रत हुए सु० यदुकुल के भगवान दे०
 पशु पक्षि भी पत्नी से सु० करे प्रतिदिन गुलतान दे०
 क्वारे की इज्जत नहीं सु० न गृहस्थीयो में वाम दे०
 साढसा वह फिरता फिरे सु० न करे कोई विश्वास दे
 बेजनानाको ना मिले सु० यात्रा पर आनन्द दे०
 औसर व्याह उद्यान में सु० क्वारेको क्या आनंद दे०
 सधा स्नान न दु ख में सु० पत्नी का सहकार दे०
 अतिथि पायण साधुका सु० पत्नी ही करें सत्कार दे०
 मोक्षनिलाम को मोचते सु० मुस्कगये श्री नेम दे०
 नारे लगाये गोपी ने सु० व्याह करेगा नेम दे०
 राजेमती मे नेम की सु० छुई मगाई तुरत दे०
 गारन मुद्रि में छटका सु० लग्न निमाला तुरत दे०
 दागिसा में जमन हुआ सु० प्रतिघरमें अतिचग दे०

होगा व्याह निमित्त से सु० चारित्र ज्ञान अभंग दे०

२१५ व्या० ७ नेमजी की बरात गहुंली

(राग—कोठे ऊपर लयला बैठी, मजनु दीवाना)

रथके ऊपर नेमजी बैठे, व्याह करन को आवे ॥टेरा।

मुकुट पहिना कुन्डल पहिने, मोतियन हार सुहावे।

फुलकीमाला तोरावाला, मरकतरंग सुहावे ॥रथ०

राजमहल से चले बराती, नेम दुल्हा बन आवे।

बाजा बाजे, धमधमगाजे, सबको साथ बुलावे ॥र०

घोड़ा हाती की बड़ी शोभा, शाही रंग जमावे।

गंधप गावे, राग मिलावे, रस शृंगार जमावे ॥रथ०

पिता समुद्र विजयजी चाले, सजधज यादव लाले

कृष्णजी आवे, बलजी आवे, साजन महाजन आवे

उग्रसेन राजा के घर के, पास चलाकर जावे।

(३३६)

गात्रे गौरी मिलकर गोपी, अद्भुत रूप सुहात्रे । रथ
कोठे ऊपर राजूल नैठी, सखिया मग्नौल उडात्रे ।
नेमकुमार की अनुपम शोभा, राजूल नैन लुभात्रे ।
अब राजूलकी नैना फरके, विन्न की शका लात्रे ।
सब पशु मिलकर नारे लगात्रे, दयाकर सगीत गात्रे ।
पशु पक्षी के रक्षा कारण, नेमजी रथ फिरात्रे ।
चारिण देवे टीचालेत्रे, गढ़ गिरनारमें जात्रे । रथ०
केवल ज्ञान को पाकर स्वामी, ममोमरन को सुहात्रे ।
चारित्र पाकर, ज्ञानी होकर, राजूलमी गिर जात्रे २०

२१६ कल्पसूत्र व्या० = रथत्रिरावली
(गद्यली)

(राग—गणेश, मन्त्र—हे माया हो मायाया)

श्री महावीर जी पाट परपरा,

सूरि मुनि को नमो नमो ।

निर्गन्थ कोटिक चंद्र वनौकस,

तपस्वी मुनि को नमो नमो ॥ टेरे—

पांचवे गणधर स्वामी सुधर्मा, १

केवली जम्बु २ को नमो नमो ।

प्रभव ३ शय्यंभव ४ श्री यशोभद्रो, ५

संभूति सूरि ६ को नमो नमो ॥ श्री ७ ॥ १॥

स्थूलि भद्रजी ७ सुहस्ति सूरि, ८

सुस्थित सूरि ९ को नमो नमो ।

इन्द्र दिना १० दिना ११ सींह गिरिजी, १२

वज्र स्वामीको १२ नमोनमो ॥ श्री १० ॥ २॥

वज्र सेन गुरु १४ पुण्य गिरिजी, १५

फल्गुमित्र १६ को नमो नमो ।

धनगिरि १७ शिवभूति १८ भद्र १९ नक्षत्र, २०

(३४१)

रत्न स्मरि २१ को नमो नमो ॥ श्री०॥३॥
नाग २२ जेहिल २३ श्री त्रिपुण्ड्र २४ कालक, २५
श्री सपलित २६ को नमो नमो ।
पृथ्वी स्मरि २७ संपालित २८ हस्ति, २९
धर्मस्मरि को ३० नमो नमो ॥ श्री०॥४॥
हस्ति ३१ श्रीधर्म ३२ श्रीभिह ३३ श्रीधर्म, ३४
जम्बू ३५ नन्दित को ३६ नमो नमो ।
दंशी गणिजी ३७ स्थिर गुप्त स्मरि, ३८
उमार गुप्त ३९ को नमो नमो ॥ श्री०॥५॥
श्री देवधि क्षमा श्रमणजी, ४०
पूर्व बंदी को नमो नमो ।
चारित्र्य दर्शन ध्यान के ग्राही,
न्यायी मुनि को नमो नमो ॥ श्री०॥६॥

२१७ चड़ा गुरु वंदन (पद गहुंली)

(राग—श्री सिद्धगिरि को वंदन)

महावीर के पाट को वंदन हो,
पटधारी मुनिको वंदन हो ॥ टेरे ॥

पंचम गणधर सुधर्म गणी ।

जंबू स्वामी श्री प्रभव मुणी ॥

श्री शय्यंभव यशो भद्र गणी ।

संभूति गणि स्थूल भद्र मुणी ॥ म० १

सुहस्ति सूरि सुस्थित सूरि ।

श्री इन्द्रदिन गणि दिन सूरि ॥

श्री सिंह सूरि श्री वज्र सूरि ।

श्री वज्र सेन गणि चंद्र सूरि ॥ म० २

सामन्त भद्र वड़े देव सूरि ।

प्रद्योतन श्री मानदेव सूरि ॥

श्री मानतुंग गुरु वीर सूरि ।

मुनिसुंदरजी रत्न शेखर जी ॥

लक्ष्मी सागर सुमति गणि जी ।

श्री हेम विमल सूरि मुणिजी ॥ म० ७

आनन्द विमल विजयदाना ।

श्री हीर सूरि जगगुरु माना ॥

श्री सेन देव सिंह सूरि जाना ।

श्री सत्य विजय गणि मुनिराना ॥ म० ८

कर्पूर क्षमा जिन विजय गणी ।

श्री उत्तम पद्म विजयजी गणी ॥

श्री रूप कीर्ति कस्तूर गणि ।

गुरु दादा श्रीमणि विजयगणि ॥ म० ९

श्री बुद्धि विजय श्री मुक्ति गणि ।

श्री विजय कमल सूरिरामणि ॥

श्री विनय विजय जी स्थविर गुणी ।

चारित्र विजयजी पूज्य मुनि ॥ म० १०

भारत में आज मुनि विचरें ।

शत आठ सदा प्रतिगोध करें ॥

श्री दर्शन ज्ञान व न्याय धरे ।

सन जीव के श्रीकल्याण करे ॥ म० ११

गुरु स्तुति

श्री अरुनर भूपाल, कृपालेषु शिरोमणि ।

विदधे येन तस्मै स्तात् श्रीजगद्गुरवे नम ॥

मुनि जलधि बेलाकृत, तपोगच्छात्र भासिने ।

मूलचन्द्र गणीन्द्राय, नमोस्तु ब्रह्मचारिणे ॥

तपोगच्छक नाथाय, मूलचन्द्र महर्षये ।

मुक्ति विजय गणिने, नमः मुक्त्येक तापिने ॥

गुरु यशसि तपोगच्छे निशस्ते प्रतिष्ठे ।

विजय कमल स्वरिः, स्वरि सम्राट् प्रशान्तः ॥
 भविक मधुप पुष्टयै, दत्त सम्यक्त्व पौष्पः ।
 समजनि भुवि पूज्यः, तं नमामि त्रियोगैः ॥
 श्रीसिद्धाचल तीर्थराज तिलके, श्रीपादलिप्ते पुरे ।
 विश्वोप कृतिकं यशोविजयजी, नामाङ्कितं चादिमं
 श्रीमद् ज्ञान विवर्धनं गुरुकुलं, जैन वरं स्थापितं ।
 स श्रीसंयत पुंगवो विजयतां, चारित्र राजेश्वरः ॥
 भ्रमहरणां गुरुवर-तणां, चरणां अमीभरणं ।
 शम भरणां शरणां लडं, हरे जन्म मरणां ॥

धून-संग्रह

(आज श्याम मोहे लीनो वंसरी बजाय के)
 देहभान भूल गये, मस्त वीर गान में ।
 मस्त वीर गान में, गुल्लतान प्रभु ध्यान में । देह

(गोरी पूजन चली हनुमानकु)
रहो निस दिन, वीर गुण गान में ।
वीर गुण गान में, भक्ति रस तान में ॥
()

भज ले मन वीर ? वीर ?
वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ? वीर ?

भज ले मन वीर वीर ?
(रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम)
ॐ ह्रीं अर्हम् श्री महानीर,
त्रिशलानन्दन जय जय वीर ।

अतुल चली योगिन्तर ' वीर,
जिनवर जग दुधधारक वीर ॥

सत् चिद्धन आनन्द श्री गोर,
जय महानीर जय महानीर ।

(ॐ अर्हम् श्री अलग्निरंजन जय महा जय महा)
ॐ अर्हम् सद् चिद् आनदधन,

जय महावीर जय महावीर ।

(ॐ हरि (३) ॐ ॐ)

ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ ॐ

ॐ अर्हम् ॐ अर्हम् ॐ अर्हम् महावीर ।

()

आओ बन्धु ? आओ सिद्धचक्र का गुण गाओ,
अरिहन्त सिद्ध आचारज वाचक,

मुनि से धून लगावो ।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप,

हरदम दिल में लावो । सिद्ध०

(राम लक्ष्मण जानकी जै बोलो हनुमान की)

जय बोलो प्रभु वीर की गौतम वीर, वजीर की ।

जय बोलो गुरु हीर की जय माणिक्य वीर की ।

जय केसरियानाथ की रिषभदेव जगतात की,

सिद्धचक्र मुनिराज की जय चक्रेश्वरी मात की ।

